





महा प्रसिद्धि

अपराजिता महाप्रसिद्धि

(उष्णीष शीतालपत्रा नाम)

धर्मरत्न बज्राचार्य मुरत श्री महाबिहार DH-23

माध्वं मया ॥ इति नमो ॥ संघाय ॥ अथ खलु गतानां च कस्य च दारिद्र्यं धूया गका या भिका वाधिसत्त्वा
 महासत्त्वा च रुना महागका न च रुमहा नाऊ कायिका धेदव यूना न या अकनिष्ठा धेदव यूना न या वकनि
 सधेदव यूना न नि यकिता सानियध सर्वा सा क्रिधा ॥ सुययित्वा सुकदवा ना मिद्वाम कदवा वगु ॥ यक
 शिरु महा वाधिसत्त्वा य महा सत्त्वा य ॥ रिशु रिशु धूया गका या भिका कूल यूना वा कूल इहिरु ना वा द
 व यूना वा द व कन्या वा य ॥ मां सर्व कथा गका यी घमी ना कय ना मा य ना जिता महा य य किता मूकु

हा ध्यानि धान यि धा नि वा न यि धा नि ॥ यर्य वा य नि ये न स्य च वि स्त न ध सं य का ग यि धा नि या नि सा
 मन सि क नि धा नि महा य किं कि ना वि रु ना वि न दि ता रु वि य नि ॥ क सां मा ना वा मा न का यि का वा अ
 व का न न य य नि ॥ क ल्क स्य ह का ॥ क था हि क ॥ कूल यू क ॥ कूल इ हि रु रि श्व न य ग न य क स्व धि धि ना रु वि
 य र्य व द ना सं ह्रा स स्ता ना वि रु ना न गू न य रु व स्व धि धि ना रु वि य नि ॥ क ल्क स्य ह का ॥ न हि गू न य ना या
 स व का न न व रु क ना नि मि रु मा नि मि रु अ व का न न व रु क ना य धि हि रु अ व का न न व रु क ॥ च व न्य रु स स

सुस्तु च ध्यायन् यत्नयति स सुस्तु दग्धं न केव स्वधिक्षिणा ह विद्युक्ति ॥ उ वं या न सि का स त्या हि ह्या य मा ध
 ध्याना नू य स मा ध लि न न के व स्व धि क्षि ना ह वि श्य कि ॥ उ वं स र्व गू न्य त स र्व स मा धि ॥ स स मा धि ॥ स र्व
 धा न धी मू र्त स्म र्क य स्त न स म्य क द ध म द्वि पा द द्रि य व ल वा ध क मा ग गू न्य के व स्व धि क्षि ना ह वि श्य
 कि ॥ उ वं द श व त व ग न य य कि स वि द धा धि क वृ द्ध ध र्म गू न्य के व स्व धि क्षि ना ह वि श्य कि ॥ या व त्स र्व
 का न रू ता गू न्य के व कू ल यू क ॥ कू ल इ हि ह रि स्वा धि क्षि ना ह वि श्य कि ॥ क क म ह का म्भ थ हि गू न्य ता

३

या स्य ता न न रू क ॥ ना नि सि लं मा नि सि ल मू त ता न न रू क ॥ ना य धि हि र म य नि दि र्म मू व ता न न रू क ॥ ग ल्क
 स रू का म्भ थ लि क धां स्व ता वा न स वि श्य क ॥ य ता व ता न न रू क ॥ य क वा व ता न न रू क ॥ य स दा द ता न न रू क
 ॥ ॐ कि म द्वा य त्प कि न्ना र्था स मू द य ॥ इ य ह्मा गान का नि ॥ ॥ न र्व लू य न ॥ म हा वा धि स त्वा क र्था कू ल य
 का धां कू ल इ हि ह रि धां वा म नू या वा श म नू या वा व ता न न रू क ॥ क थ क ॥ कू ल यू क ॥ कू ल इ हि ह रि म्भ स
 र्व स त्वा ना मा नि क मे र्मी क नू धा म दि का य का ता वि का स ता नू य क्थ ॥ य धे न व ट को भि क कू ल यू क वा

कूलद्विहिकवाविषमायनिहानधकानंकाविशक्तिरक्तसहकासुधाहिकः कूलयूक्तकूलद्विहिक
 आसहाय्यं किनायांचनरुः सर्वसत्ताः सम्यक्निवर्थायादयनिरुक्ताः अर्थाकोकवाकुमहात्राऊका
 यिकेद्वययूक्तविहिकिसाहस्यमहासाहस्यलाकधाकोडायकिंवावयासेवाः रुषिकेर्वानिर्वासवकिर्वाय
 प्रतिमिरुसवर्लिर्वावक्तवायिकेर्वावक्तयूनाहिकेर्वावक्तपापयेर्वायावदकनिर्द्धर्वाः दवयूक्तनमूल
 नायासम्यक्ताः धोविहिकसूत्यादिकंनवयंसर्वेकथागकाषीषमीकाकयंजानामायनाजिकासहाय्यं

४

किनाधानशीयत्वाभाकुदीकानधविमानवाविमानयर्थवाफाद्वययूक्तनियंमहाय्यकिनायाकवाड
 कुदीकवाः धानयिकवाः वाचयिकवाः यर्थवाकवाः यानिगधमनसिकरुवाः सर्वरुकाविरुनाविमहि
 केः ॥ १ ॥ किमहाय्यकिनायांसमूटयइत्यायहानं ॥ अथयनंवाधिसत्वाकूलयूक्तवाः कूलद्विहिक
 नावाङ्मासर्वकथागकाषीषमीकाकयंजानामायनाजिकासहाय्यं किनामूकुदीयाकिधानयिषाकि
 वाचयिषाकि यर्थवायानिः यानिगधमनसिकविधयानि अतिवहिकाः सर्वकानरुकाविरुनमहा

यत्प्रक्रिया तावयिष्यन्ति ॥ नखलपूतः महावाधिसत्त्वा कथांकलपूका धांकलद्वहिरुनां वा भूत्वा
 गानगकानां वा भूत्वा वकाशगकानां वा डत्यथगकानां वा कथयन्ता सुकृतत्ववाकविषयानि ॥ कल्कस्य
 हका ॥ सुथाहिकः ॥ कलपूके ॥ कलद्वहिरुते श्रुत्वा स्मृत्युक्तानां सुगाधिका अनूपलम्बथाग
 धा ॥ अथात्मवहिरुत्तमगाधिका अनूपलम्बथागधः यावदकावस्वतावभूत्वा सुगाः
 विगा अनूपलम्बथागधः ॥ अथखलगावदवकिमाहसुमहासाहसला कधकायवा

कुमहावाककादवपूका सुयक्रियाया मा मुषिकानिर्माधनकयः यत्र निर्मितवसवकिनाया वगुडा
 वासकायिका दवपूका सुकृतगवन्तः मरुदवावचका ॥ वयं रगतं सत्त्वांकलपूका धांकलद्वहिरुनां वा
 गककसमिकवकाववधगुकिं संविधास्यामः ॥ ॐ मां सर्वकथागका धीषणी कारयकाना मापवाडि
 कामहायत्प्रक्रियामूह्ययान्ति धावयिष्यन्ति वावयिष्यन्ति यथैवाप्यन्ति यानि श्रवमनासिकविषय
 निःश्रुविग्रहिका श्रुविषयानि ॥ सर्वरुकाचिरुना ॥ कल्कस्य हका ॥ सुथाहिरुगवन्वाधिसत्त्वा महासा

त्वमागम्यनिवशाद्विद्यं कं की र्याग्निनियमलाकाजसूत्राकायामनुषादात्रिदसमूहवाडयसर्गः सर्व
युद्धिश्च ॥ वाधिसत्वमहासत्वमागम्यदभानां कृमलाकानां कर्मयेथानां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ च
कुर्ध्वानानां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ च कुर्ध्वमात्रां नां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ च नृमां मावृष्य
समायति नां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ दानपात्रमितायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ भीलपात्रमिता
यां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ कान्तियात्रमितायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ वीर्यपात्रमितायां लाकपादूर्त्वा

दूर्त्वा हवति ॥ ध्यानपात्रमितायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ यज्ञपात्रमितायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ अ
ध्यात्मगत्यायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ वहिर्द्वाग्न्यायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ अ
यावदहावस्यतावन्त्यायां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ च कुर्ध्वमत्यस्य नां लाकपादूर्त्वा हव
ति ॥ च कुर्ध्वमिदियादा नां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ पञ्चद्विषां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ पञ्चना
वलां नां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ सफा नां वाध्यानां लाकपादूर्त्वा हवति ॥ आर्याष्टाङ्गमार्गनां ला

कपादुर्हावाहवकि॥ वरुर्धमार्थमस्यानांलाकपादुर्हावाहवकि॥ वरुर्धमप्रमानानां वरुर्धमार्थ
हालाकपादुर्हावाहवकि॥ दशातां कथागतवनांलाकपादुर्हावाहवकि॥ वरुर्धमदेमावयानां
लाकपादुर्हावाहवकि॥ वरुर्धमप्रगिसंविदातांलाकपादुर्हावाहवकि॥ आधधिकवृद्धधः १
मांलाकपादुर्हावाहवकि॥ अनकथां समाधिनांलाकपादुर्हावाहवकि॥ मनकथां धननि
मूवातांलाकपादुर्हावाहवकि॥ सर्वरुकायां वाधिसत्वमार्गस्यलाकपादुर्हावाहवकि॥

भूकयवंधाधिसत्वमहासत्वमार्गस्यक्रियमहाभाकूलानियह्रायंक॥ वाक्त्रधमहाभालकू
लानियह्रायंक॥ गुरुयकिमहाभालकूलानियह्रायंक॥ वरुर्धममहाभालकूलानियह्रा
यंक॥ वरुर्धममहाभाकूलाधिकादवयूकयह्रायंक॥ नवंधाधिसत्वमार्गस्यक्रियमहाभाकूलानियह्रा
यंक॥ वरुर्धममहाभाकूलाधिकादवयूकयह्रायंक॥ वरुर्धममहाभाकूलाधिकादवयूकयह्रायंक॥
दकानिष्टाश्रयवयूकालाकयह्रायंक॥ ॥ यूनवयवंधाधिसत्वमहासत्वमार्गस्यक्रियमहाभाकूलानियह्रायंक॥

यलिरुलंयल्लयन॥आताआयनःयल्लयन॥उवंसकदागामिरुलंअनागामिरुलं॥अहं
महंलाकयल्लयन॥यल्लयनवाधियल्लयन॥यूनययवंवाधिसत्त्वमहासत्त्वमागम्यसत्त्व
याकः॥यल्लयन॥वृद्धकुरुयविबुद्धिःयल्लयन॥कथागरुडहंरुसम्यक्वृद्धालाकयल्ल
यन॥धर्मवक्तव्यवर्तनयल्लयन॥वृद्धवर्तनयल्लयन॥धर्मवर्तनयल्लयन॥संघवर्तनयल्ल
यन॥अनमहायल्लयनक्रियायर्थानवाधिसत्त्वमहासत्त्वमनूयसूत्रगन्धर्वयकेशक

ट

सगवूठकिन्नवमहाअगमनूयामनूयनलाकनयकाववधगुफि॥संविधारुया॥उवंसकः
रुगवानुठाकदवानामिन्द्रमकदवायक॥उवंसकत्तहावाधिसत्त्वमहासत्त्वमागम्यनिब
यकिर्यग्यानियमलाकगरुडद्विद्यकदवदाविदमनूयादाविद्यंडयदवाडयसर्गा॥स
र्वव्युद्धिद्यकवाधिसत्त्वमहासत्त्वमागम्यदमातांकुभलानांकर्मयथानांलाकयल्लयन॥द
मानायावमिकानांवाधिसत्त्वरुमिनामयमाधाआनांयुयसमायल्लिनांवाधियक

नां धर्मा नां सखा नां सहिहा नां सर्वभूतानां सर्वधा वशी मूर्खा नां प्रहयन् ॥ दधव लवे भा व य य कि
स विदा ध धिका नां वृद्ध धर्मा नां सर्वा का बहू का या धा धि सत्वा महा सत्वा मा गम्य प्रहयन् ॥ कृदि
य महा मा ल कू लानि वा क्र ध महा मा ल कू लानि गृह्य कि महा मा ल कू लानि धा धि सत्वा महा स
त्व मा गम्य ला क प्रहयन् ॥ वक्र वरु नि वा क्र कू लानि ला क प्रहयन् ॥ वक्र महा वा क्र का यिका देव
यूजा या वेद क निश्चय प्रहयन् ॥ एषा का य रिरु लं एषा का य न ॥ एवं सं कृ दा गा मि रु

लज्ज ना गा मि रु ल म ना गा मि मू र्ख त्वं मर्ह श्र ला क प्रहयन् ॥ यथ क वा धि यथ क वृ द्वा ला क प्रहय
न् ॥ वा धि सत्वा महा सत्वा मा गम्य सत्वा य नि या क प्रहयन् ॥ वृद्ध क्रु य वि मु छि ॥ प्रहयन् ॥ कथा
ग कर्ह स म्प सं वृ द्वा ला क प्रहयन् ॥ धर्म वक्र प्र त र्क नं ला क प्रहयन् ॥ वृद्ध वल धर्म वल सं
घ वल वा धि सत्वा महा सत्वा मा गम्य ला क प्रहयन् ॥ कला हि महा वा धि सत्वा महा सत्वा ॥ स द
व मा नू या म न ध ला क न क र्क वा गु नू क र्क वा मा न यि क वा यू ज यि क वा भ क र्क म मि क वा क व का



यिनाममहावाधिसत्त्वः कुवनम्बानुवनंम्बाधुवनंम्बाभवनम्बाकिलवनम्बा ॥ किञ्चिद्वदवकलयुकावाकलद्वहिकाम्बासत्त्वार्थो गुणकृत्वात्मानयत्युक्तयश्च यथमविकलत्वादिकं
वाधिसत्त्वमहामत्त्वमतिवदिकंमहिः ३ यात्रमिताभिः सत्त्वार्थो गुणकृत्वात्मानयत्युक्तयश्च यमवकलावद्वक्तव्यं यथसत्त्वमि ॥ कल्मसहमावद्वक्तव्यं यथसत्त्वमि ॥ कथाहिसमहावा
धिसत्त्वः ४ यावकपक्षकवृद्धमागम्यवाधिसत्त्वकथागमाश्च हकः सम्पत्तं वृद्धाश्च कथयहाय

क॥ कस्मा रुहि महावाधिसत्त्वमदवमानूयासूनशलाकनवाधिसत्त्वमहासत्त्व४ सत्कर्तृवागुनक
 र्त्वामानयिकवा४ मकं समिकवाक्यकाववधगुकिं सन्विधाकवा४ ॥ २२ ॥ महियुक्किगायां
 निशाधधर्महानकाकि॥ ॥ नमामहायुक्किवाय॥ नम४ सकानां सम्यकंवृद्धाकाटिनां॥ ११
 नमामेकययमूखातां वाधिसत्त्वानां महामत्त्वानां॥ नम४ सर्ववृद्धवाधिसत्त्वानां महामत्त्वानां॥
 नम४॥ सत्त्वकसंघानां॥ नम४ लोकजुहकातां॥ नम४ कीकानां राकयुक्कयंतानां॥ नम४ ॥ काय

११

आनां॥ नम४ संक्रदागामिनां॥ नम४ अनागामितीनां॥ नमालोकसम्यगतानां॥ नमामस्यकमियत्तानां
 ॥ नमामदववाधिसां॥ नम४ सिद्धिविद्याधरासां॥ नम४ आयिसां॥ नम४ कायायुधानां॥ नम४ कायानूय
 हसमर्थानां॥ नम४ सर्वविद्याधरासां॥ नमामदववृद्धा॥ नमामुद्धाय॥ नमामरगतवकनूद्धाय॥ उमा
 यकिसहिताय॥ नमामववृद्धाय॥ नम४ नागाधियकय॥ नम४ सर्वनागाधियकय॥ नमामरगतवकना
 नायनाय॥ नमामहायंनमूनमस्कृताय॥ नमामरगतवकनन्दिकधर्मीमहाकावाय॥ कियूयनगवः

विद्याय नमः ॥ अधिभूति ककाशिममहाभूतवाशिनाय ॥ तमासा रुका गधसहिनाय
 ॥ अथ त्वत्सकादवा नासिद्धा रुगवन्कमरुदवाच ॥ आचार्य रुगवन्तया वदसीवाधि
 सत्त्वा महासत्त्वाः महायत्नं किनामूककृन् ॥ ययवायूवनाधायका वाचयन् ॥ यानिधमनः
 सिकुर्वन् ॥ ॐ मां दृष्टुमिहा गुधाय विगृह्णन्ति सत्त्वा यविवायन्ति वृद्धकृन् यवि
 रमायन्ति वृद्धकृन् वृद्धकृन् सकासन्ति वृद्धा रुगवन्कः ॥ ययवाभनाय ययवकुशलमूलान्नाकाः

१२

कयूखवृद्धा रुगवन्कः ॥ यययिरुके ॥ ययययूकवेधां रथे वमाद्यन्तयवकषां वृद्धा रुगवन्कमन्ति
 कस्मिन्त्वाधमोऽध्वनि सवेधाधर्मस्त्वावदवन्तयमूवाकया वदन्तूना सम्यक्त्वाधिभूति स
 वाधि ॥ ॐ किमहायत्नं किना कूलसंयदययविगृह्णन्ति ॥ कननिसंयदं यविवायम
 मयदयलकृन् समयदययत्ना समयदयवकृन् समयदयवस्वव समयदयसमाधिसमयदय
 धावन्ती समयदययविगृह्णन्ति ॥ उयायको गलनजालानं वृद्धविग्रहं निर्यायलाकधाको सका

मन्त्रि॥ यद्वृद्धां रोगवता मूया दानास्तिक कुरु गत्वा दानया प्रसिक्ता वर्धला घन॥ एवं श्री लया
प्रसिक्ताया कान्ति या प्रसिक्ताया दीर्य या प्रसिक्ताया ध्यान या प्रसिक्ताया प्रह्ला या प्रसिक्ताया प्रह्ला या
प्रसिक्ताया अश्वत्थामन्य काया वहिर्द्धा मून्य काया अश्वत्थामवहिर्द्धा मून्य काया या वदता वस्वः
हावमून्य काया वर्धला घन॥ अनां वर्धला घन॥ अयमाना मान्य समायहितां वर्धलाः
घनः सस्ययस्ताना वर्धला घन॥ एवं सम्यक् कुरुतां अद्विधा दाना मिद्विधा नां वलानां

१३

वा अश्वत्थामां आर्या ह्यक्लि कस्य मार्गस्य वर्धला घन॥ वरुध्मा र्थस्य नां अहिहा नां दमा नां कथा ग
कवलानां वेमा वशानां युक्ति संविदानां अष्टदमा नां दनिकानां वृद्धला घन॥ उपाय कुरु लनवधः
समदगयक्तिः यानक यनव महावाधिसत्वा विनयकिशा वकया नैनयुक्तवाधिया ननवृद्धः
यानन॥ इति महाप्रत्युक्ति नायां निशधर्म हानं॥ अथ खलु गकदवाता मिद्वरुग वः
कमकदा वरु॥ आश्रय रोगवनया वदया गही नया महाप्रत्युक्ति नाया युक्ति गहि कया १ स

र्घ्यायामिकाऽयनिगृहिका रुवंति॥ यदुक्तं नयायामिकाभील्यायामिकाः क्रान्तियायामिकाः वीर्य
यायामिकाः आनयायामिकाः युक्तायायामिकाऽसर्वस्वाधियक्राधर्माऽसर्वसधयऽसर्वधवधीः
मूर्त्वातिऽसर्वभूत्या कामयमाना नान्यसमायकयऽसत्याहिहादगवला निवेमा नया १४
निष्पत्तिस्त्विक्षादभानधिका वृद्धधर्माः॥ यावद्विस्तुममस्ताऽस्तन्धधकवऽआयतना
निष्पत्तीत्यसमूह्यादगानिचयनिगृहीकानिरुवन्ति॥ आकायनिरुल यनिगृहीकं रुवन्ति॥

एवं स कदागमिरुलज्जागमिरुलं अहंत्वं युक्तायायामिकाऽसर्वोकायामिकायनिगृहीकानिरु
वन्ति॥ एवं मुक्तगवान्ऽकदवानामिन्द्रमरुदवानां॥ एवमरुत्कोशिकमहावाधिसत्त्व
मरुत्॥ महापुलकिनायोयनिगृहिकया सर्वाऽयायामिकाऽयनिगृहीकानिरुवन्ति॥ एवं सर्वः
वाधियक्राधर्माऽसर्वसमाधयऽसर्वधवधी मूर्त्वातिऽसर्वभूत्या कामयमाना नान्यसमायकयऽसत्याहिहादगवला निवेमा नया निवक्तुम्

विष्णुदेवता

यकिमस्मिदशदमावधिकावृद्धधर्मावृद्धाकृमसमस्कंधात्वायकनानिप्रकिमसमस्यादांगानिः
यातत्सर्वोकावरुकायायविगृहीताहवकि॥ यूनययनंकोठिकमहावाधिसत्वाययकिमायांड
रुहीमाधविनावाविनाययवाफालिखिकाया निष्णामनसिककयासकलपूडावाकूलदुहिका
वायकिलरु॥ दृष्टधर्मिकमवगृह्णामध्वसूक्ष्मसूक्ष्ममनसिकवृत्ताधिष्ण॥ चतुरंगवनि
किसकादवानामिंद्राहगवक॥ यत्प्रापिगृहगवानरुदवावक॥ यकधित्कोठिकमहावाधिसः

१५

त्वाअन्यरीर्थकः कूलयूजावाकूलदुहिकानामावावाभावकायिकावादेवकामहिमानकावायूजः
वावावाधिसत्त्वमहामत्त्वमिति॥ महाययकिमायांविद्वद्यिकुकाभाहविद्यकि॥ विद्वदिदुकाः
भाहविद्यकि॥ विगृहीकुकामाहविद्यकि॥ विनाधयिकुकामाहविद्यकि॥ कयांविद्वद्यिकुकाः
मातांविगृहीकुकामांअविनाधयिकुकामांउत्पन्नाविद्यहाविवादाविशारधःक्रिययूनवा
कृद्वायकिः कयांविद्वद्यिकुकामांविगृहीकुकामांविद्वदिदुकामांविनाधयिकुकामां

विषदिकुकासातांविषाधयिकुकासातांनरुक्तमहियायाःपवित्रविगमिथकिःकलसाहताः॥
थाहिकोमिकमहावाधिसत्त्वादीर्घनाकु॥दातयावमितायांववताशीलयावमितायांक्रान्तियावमिः
तायांवीर्ययावमितायांआनयावमितायांप्रहयावमितायांववता॥यथांक्रुक्तसःसत्त्वादीर्घनाकुं
विगृहाविवादाविश्रानाघयक॥अध्यात्मिकावाक्यधर्मोःसर्वसर्वदायविहकयथांक्रुक्तसःसत्त्वा
दीर्घनाकुंसत्त्वदोःमिल्यमाययक॥तावाधिसत्त्वमहासत्त्वः॥अध्यात्मिकावाक्यधर्मोयविहक्यताः

१३

सत्त्वागीत्ययुक्तिरूपययिकि॥यथांक्रुक्तसःसत्त्वादीर्घनाकुंकाधयायादविहिंसासाययक॥तावा
धिसत्त्वमहासत्त्वः॥अध्यात्मिकावाक्यधर्मोयविहक्यतासत्त्वाक्रुक्तोयुक्तिरूपययिकि॥यथांक्रुक्त
सः॥सत्त्वादीर्घनाकुकोमिकमहावाधिसत्त्वअध्यात्मिकावाक्यधर्मोयविहक्यतासत्त्वावीक्यावः
मितायांप्रतिष्ठापययिकि॥यथांक्रुक्तसःमहावाधिसत्त्वादीर्घनाकुंसंसात्रसंसत्रकि॥यदुक्तमूः
वृक्षययुक्तिर्यययवस्तुनकवाधिसत्त्वमहासत्त्वः॥यायकोमल्पनरुथांसत्त्वातांविनियतांसत्त्वा

स्वायस्मिंयुथिवीयदरमकलपूजावाकलदृष्टितावा॥ ॐ सां सर्वं तथा गतायुः समीता नयजानासायवाति
तामहाप्रत्यङ्गिनामहाविद्या॥ नधीमूहृष्टांकि॥ धानयिष्यन्ति वावयिष्यन्ति यर्थवाप्स्यन्ति शान्तिश्च
मनसिकविषयान्ति॥ नरुयुथिवीयदरमसावासा नकायिकावादनकाजन्यकीर्थकावापविताज १६
कावाभूतिमाधिकावायूला॥ १॥ कृत्विक्कयंकर्तुं॥ अस्यामहाप्रत्यङ्गिनायाविश्रुयविवादा
यविनाधायडरुनवकसां गुधानुसंसारविषयान्ति॥ यइतास्याः महाप्रत्यङ्गिनाया॥ एवराक्षानन्युः

वैद्यकिरिष्यानेर्यायइ॥ स्वस्यानकविषयान्ति॥ कथथापिनामकोमिकमहावाधिसत्वमदीनासोवधि
कुकेसीविषयकुरुतावृत्तिकनासावधिना॥ १॥ नगयविषयकविदवपाधकजाकादृष्टावृत्त॥ ॥ ॥
कथाधकजाकंयूनखादिकुकासा॥ याधकजाकमनुधकवक॥ ॥ अथखलसपाहकजाकः॥ यनः
सामग्रीनासोवधीकनाय॥ काकमकथसजासीविषयकस्याडोयआगल्वनयसदावर्कक कस्तस्य
हका॥ कथाहिरुस्याडोयआहयकगुधः॥ यरुस्यागीविषयकद्विषमहिरवकि एवंवलवकीहिको

निकमहावाधिसत्त्वोपधीचवंसवकोगीकयः यश्चिकूलयूजावाकूलदृहिवावायः ॥ मांसर्वकथाः
 गकाश्रीषगीकारुयकानामायनाजिकामहायुह्यकिनामहाविद्यामूकहीयनिकिधवयिष्यनिकिवावयि
 यनिकिपर्यवाप्यनिकिथानिचमनसिकविष्यनिकिः कुरुकोमिकमहावाधिसत्त्वयउत्पन्नाविग्रहविवा १५
 दाविमभारुविष्यनिकि ॥ कुरुमहायुह्यकिनामहाविद्यामूकहीयनिकिधवयिष्यनिकिवावयिष्यनिकि
 पर्यवाप्यनिकिथानिचमनसिकविष्यनिकिः कुरुवान्तर्दोषगिनविवर्द्धयिष्यनिकि ॥ ॐ किमहापुः

यश्चिकीयातिवाधन्वयह्यनं ॥ अथस्वत्वायूषाम्महामेरुययमूखानांमहावाधिसत्त्वानां
 महासत्त्वानांलाकानांनृपंसमनूपग्यकि ॥ नमः ॥ सर्ववृद्धवाधिसत्त्वलाकानांनृपंसमनूपग्यकि
 ॥ नमः ॥ सथावकसंधानांवाधिसत्त्वानांलाकानांनृपंसमनूपग्यकि ॥ नमः ॥ लाकमूहकानांवाधि
 सत्त्वानांमहासत्त्वानांलाकानांनृपंसमनूपग्यकि ॥ नमः ॥ कीकानांशकयस्यन्नानांनृपगकलाः
 कानांनृपंसमनूपग्यकि ॥ नमः ॥ आकायन्नानांलाकानांनृपंसमनूपग्यकि ॥ नमः ॥ सुहृदागाः

मितांलाकानांसमनूयग्वि॥नमः३नागामितांवाधिसत्त्वातांमहासत्त्वातांलाकानानूयंसमनूयग्वि॥
 नमः४लाकसमर्गकानांवाधिसत्त्वातांमहासत्त्वातांलाकानानूयंसमनूयग्वि॥नमः५मम्यक्रियता
 नांवाधिसत्त्वातामहासत्त्वातांलाकानानूयंसमनूयग्वि॥नमः६वमपितांवाधिसत्त्वातांमहासत्त्वा
 तानूयंसमनूयग्वि॥नमः७मपितांवाधिसत्त्वातांमहासत्त्वातांलाकानानूयंसमनूयग्वि॥नमः
 ८मायायुधानांवाधिसत्त्वातांमहासत्त्वातांलाकानानूयंसमनूयग्वि॥नमः९आपानूगहसमर्थतां

वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां लाकानां नृपं समनूययति ॥ नमः सर्वविद्याधरातां वाधिसत्त्वानां महाः
सत्त्वानां लाकानां नृपं समनूययति ॥ नमः माधवक्रहासमर्थातां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां ला
कानां नृपं समनूययति ॥ नमः उदयलाकानां समनूययति ॥ नमः रावतनूदयलाकानां सः
मनूययति ॥ नमः उमाद्यसहितायलाकानां समनूययति ॥ नमः तनूदयलाकानां समनूयय
ति ॥ नमः महातनूदयलाकानां समनूययति ॥ नमः सर्वनागाधिपयलाकानां समनूययति

॥ नमो ह्यवकृताय नायलाकातां समन्यग्यति ॥ नमो महायशसूदातमस्तु नायलाकातां समन्य
ग्यति ॥ नमो ह्यवकृतनन्दिकवनमहाका नायलाकातां समन्यग्यति ॥ कियूवनगवविदायतकनाय
लाकातां समन्यग्यति ॥ अधिसूक्तिककामिन्नमहाभानवा सिनीयलाकातां समन्यग्यति ॥ नमो २१
मारुकागधसहिनायलाकातां नृपं समन्यग्यति ॥ ॐ नमो महायशसूक्तिनायां निशधहानहावा ॥
अथ खलु गगान् यरु ४४ वासन निषयडफूयवलाकिंतामसमाधिः ॥ वत्तसमूदानामसमा

धिः ॥ सुवक्षानामसमाधिः ॥ वन्दधुनामसमाधिः ॥ धुक्कुरुनामसमाधिः ॥ सर्वधर्मसमूदा
नामसमाधिः ॥ अतलाकिरुमूदानां नामसमाधिः ॥ धर्मधरुनियकानामसमाधिः ॥ तिऊम
धुक्कुरुनामसमाधिः ॥ वकायभानामसमाधिः ॥ सर्वधर्मपुवगनामसमाधिः ॥ समाहि
रुवल्हपुकिछनामसमाधिः ॥ नाऊमूदानामसमाधिः ॥ वयवीर्यानामसमाधिः ॥ सर्वधर्मसः
मूदानामसमाधिः ॥ निनूक्तिनियरुषवगनामसमाधिः ॥ असवनपुवगनामसमाधिः ॥ दि

गवलाकनातामसमाधिः॥ धानधीमूद्रातामसमाधिः॥ अंयमूषिकातामसमाधिः॥ समवनूध
 नामसमाधिः॥ आकागमनरसातामसमाधिः॥ वज्रमधुनातामसमाधिः॥ धजाशुकरुतामसमाधिः॥
 इन्द्रकरुवाकातामसमाधिः॥ आमानूगकातामसमाधिः॥ सिंहविक्रंतिनामसमाधिः॥
 विह्वलसमायलितामसमाधिः॥ नंदंऊहातामसमाधिः॥ वेनावनातामसमाधिः॥ अतिमि
 धानामसमाधिः॥ तिकरुम्हिकातामसमाधिः॥ निविकानामसमाधिः॥ विपुलप्रकियना

२२

मसमाधिः॥ अतकपलातामसमाधिः॥ पलाकनातामसमाधिः॥ वनधर्ममूद्रातामसमाधिः॥
 समकावलातामसमाधिः॥ शुद्धावातामसमाधिः॥ विमलपलातामसमाधिः॥ नरिका
 नानामसमाधिः॥ अऊप्यानामसमाधिः॥ रुकावकितामसमाधिः॥ रुययगकातामसमाधिः॥
 अतिर्जिकातामसमाधिः॥ विदूकातामसमाधिः॥ सूर्यपलातामसमाधिः॥ वन्दविमवा
 नामसमाधिः॥ शुद्धप्रकिल्लानामसमाधिः॥ अलाकलातामसमाधिः॥ आनाकातामसमा

धिःस्तनकरुनामसमाधिः॥विक्रिन्नामसमाधिः॥समन्तावलाकातामसमाधिः॥सुप्रति
 स्मितामसमाधिः॥नलकाटितामसमाधिः॥वनधर्मसूडितामसमाधिः॥सर्वधर्मसमन्ताः
 नामसमाधिः॥विक्रिन्नामसमाधिः॥धर्मर्षितामसमाधिः॥विक्रिन्नामसमाधिः॥
 हासर्वधर्मपदपरुदतामसमाधिः॥समाकववतामसमाधिः॥सूकनावतामसमाधिः॥
 माधिः॥आवर्षुदतामसमाधिः॥जुनिशगतामसमाधिः॥यहाकतामसमाधिः॥ना

२३

मसियरुपवसातामसमाधिः॥निकरुवावितामसमाधिः॥विक्रिमिनायगतामसमाधिः॥
 वानिकुवातीतामसमाधिः॥जुवतामसमाधिः॥विषममानिनामसमाधिः॥सर्वगुधसंव
 यातामसमाधिः॥निश्चिन्नामसमाधिः॥गुरुयुष्टिकुडातामसमाधिः॥वाय्वरुवकीना
 मसमाधिः॥जूनकपुतामसमाधिः॥आगमसतामसमाधिः॥सर्वविक्रमातामसमाधिः॥
 धिः॥पुतिरुदकतामसमाधिः॥विमिकिकिन्नामसमाधिः॥नीनधिस्तातामसमाधिः

शत्रुकवियूहानामसमाधिः॥ शूकानहिविद्वेषानामसमाधिः॥ कानानवकाशानामसमाधिः॥
नीत्रकिस्यनामसमाधिः॥ संकननूपवशातामसमाधिः॥ निजविमूकानामसमाधिः॥ ककाव
किनामसमाधिः॥ कालनाकानामसमाधिः॥ ब्रह्मनृपनिष्ठापरधानामसमाधिः॥ अनाविनका २४
किनामसमाधिः॥ सद्योकाशानामसमाधिः॥ सर्वसूक्तद्वयनिवहिनदिकातामसमाधिः॥
शूकयकानामसमाधिः॥ अत्रनियकिनामसमाधिः॥ सम्यक् आत्मसंगुहनामसमाधिः॥

स्तिनायविशेषनामसमाधिः॥ पुकिनायानामसमाधिः॥ साववमीनामसमाधिः॥ वालिपूर्वना
मसमाधिः॥ विमलवन्दुपुतामसमाधिः॥ विद्युपुतामसमाधिः॥ महाव्यूहानामसमाधिः॥
सर्वलाकपुतामसमाधिः॥ समकानामसमाधिः॥ अत्रयवितयनामसमाधिः॥ अत्रि
मूकानामसमाधिः॥ अत्रुगवदमर्वनानामसमाधिः॥ समवसनरक्षानामसमाधिः॥ अनिय
नियकानामसमाधिः॥ कथास्तिगितिचिकातामसमाधिः॥ कायकवि संप्रमर्थनानामसमा

धि॥ वाकलिविधं सना नाम सधि॥ गगनकल्पनाम समाधि॥ आकाशसंगमविमूकनाम
समाधि॥ विमूकनिबूषा नाम समाधि॥ सनाययकम् ॥ इति महाप्रत्युक्तिगीयां समाधिसंय
हमूर्द्धाधर्मसालम्बनाकावविशेषः ॥ अथ खल्यायूषान्महाभाधिसत्त्वमरुदवावकूः
नमो हगवक कथा गगनकूलस्य ॥ नमो हगवक यज्ञकूलस्य ॥ नमो हगवक वज्रकूलस्य ॥ नमो हग
वक मधिकूलस्य ॥ नमो हगवक नाडकूलस्य ॥ नमो हगवक कर्मकूलस्य ॥ नमो हगवक नः

२५

लकूलस्य ॥ नमो हगवक कुमानकूलस्य ॥ नमो हगवक नागकूलस्य ॥ नमो हगवक मालकूः
लस्य ॥ नमो हगवक माहकूलस्य ॥ नमो हगवक नागकूलस्य ॥ नमो हगवक हरुभूतः
सनय हगवक नाकाय कथा गगनाया हन सम्यक् वृद्धाय ॥ २ ॥ नमो हगवक अनिकालयक
थ गगनाया हन सम्यक् वृद्धाय ॥ ३ ॥ नमो हगवक अक्रायाय कथा गगनाया हन सम्यक् वृद्धा
या ॥ ४ ॥ नमो हगवक वज्रधनसाग नय मर्दनाय कथा गगनाया हन सम्यक् वृद्धाय ॥ ४ ॥

नमो ह गवरोषयगुर्वेदययगनाजायगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ ५ ॥ नमो ह
गवरोषयसिद्धायगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ ६ ॥ नमो ह गवरोषयपूषिकलोन्नदना
जायगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ ७ ॥ नमो ह गवरोषयश्रुवनाजायगथागगायाहंस
सम्यक्वृद्धाय॥ ८ ॥ नमो ह गवरोषयविषविनगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ ९ ॥ नमो ह गव
रोषयविनगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ १० ॥ नमो ह गवरोषयविष्वक्कगथागगायाहंस

२६

सम्यक्वृद्धाय॥ ११ ॥ नमो ह गवरोषयककुन्दायगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ १२ ॥ नमो ह ग
वरोषयकनकमूषियगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ १३ ॥ नमो ह गवरोषयकाशयगथागगायाहं
सम्यक्वृद्धाय॥ १४ ॥ नमो ह गवरोषयकसूनयगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ १५ ॥
नमो ह गवरोषयकनलवृद्धायगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ १६ ॥ नमो ह गवरोषयकज्योतिष्ठिकस
नन्दनाजायगथागगायाहंससम्यक्वृद्धाय॥ १७ ॥ नमो ह गवरोषयककुवाजायगथागगा

याहेकसम्यक्वृद्धाय॥ १८ ॥ नमो हगवकसमन्तहृदयगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥
॥ १९ ॥ नमो हगवकधर्मककुयहनाकायगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २० ॥ नमो हग
वकवेनाचनयगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २१ ॥ नमो हगवकविकसिककमलाय २०
प्रगधककुनाकायगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २२ ॥ नमो हगवकवेनाचनगर्हमहा
भद्यायगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २३ ॥ नमो हगवकनागकूनाहवमहाभद्यावि

नाकिरनामगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २४ ॥ नमो हगवकमहाभद्यावृजनामगथा
गगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २५ ॥ नमो हगवकथीमहाभद्यककनामस्यगथागगायाहे
कसम्यक्वृद्धाय॥ २६ ॥ नमो हगवकमहाभद्यसम्भवनामगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धा
या॥ २७ ॥ नमो हगवकसर्ववागमधुलविधंसनानामगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धा॥
॥ २८ ॥ नमो हगवकमहाभद्याविद्युक्तालानामगथागगायाहेकसम्यक्वृद्धाय॥ २९ ॥

नमो हगवकविक्रमभूतानामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३० ॥ नमो हगवकमहामुनिः
धानामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३१ ॥ नमो हगवकधनमयनामकथागकायार्हकस
म्यक्वृद्धाय ॥ ३२ ॥ नमो हगवकमधमदुलनामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३३ ॥
नमो हगवकनलमधानाजायकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३४ ॥ नमो हगवकमहाद्य
सिंहा^{ना}नामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३५ ॥ नमो हगवकमहामधयुक्तानाम

३६

कथागका^{या}र्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३६ ॥ नमो हगवकसूदर्शनमयनामकथागकायार्हकसम्यक्वृ
द्धाय ॥ ३७ ॥ नमो हगवकमहामधसंयुतनामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३८ ॥ नमो ह
गवकमधसंयुतायकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ३९ ॥ नमो हगवकदमदिगुगुप्तसमन्ता
द्युदतसंयुगर्जननामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ४० ॥ नमो हगवकदंडितस्वनिधा
यनामकथागकायार्हकसम्यक्वृद्धाय ॥ ४१ ॥ नमो हगवकमहामधमीलसम्भवनामकथा

गतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ४२ ॥ नमो हगवकमहाभयसंरुवर्धयुस्तुनानामकथागः
तायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ४३ ॥ नमो हगवकमहाभयनिनादगऊनानामकथागतायाहं
रुसम्यक्वृद्धाय॥ ४४ ॥ नमो हगवकमहाभयगंहीनगऊनानामकथागतायाहंरुसम्यक्वृ
द्धाय॥ ४५ ॥ नमो हगवकमद्यस्तीनामकथागतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ४६ ॥ नमो हगवक
गगक्षाम्बुजमहाभयनामकथागतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ४७ ॥ नमो हगवकमहाविक्रम

२९

द्यमूननामकथागतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ४८ ॥ नमो हगवकमहाभयनिकूर्जिकनामकथा
गतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ४९ ॥ नमो हगवकमहाभयसंदर्शनानामकथागतायाहंरुसम्यक्वृ
द्धाय॥ ५० ॥ नमो हगवकमहाभयलालयनामकथागतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ५१ ॥ नमो
हगवकमहाभयविस्तृतनामकथागतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ५२ ॥ नमो हगवकमहा
भयगानानामकथागतायाहंरुसम्यक्वृद्धाय॥ ५३ ॥ नमो हगवकमहाभयसुदृश्यवस्तुया

ॐ

था गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ६६ ॥ नमो हगव क महा मद्य बलनाम कथा गताया हं क सम्यक्
वृद्धाय ॥ ६७ ॥ नमो हगव क महा मद्य विमर्दनाम कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ६८ ॥ नमो
हगव क महा मद्य काननाम कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ६९ ॥ नमो हगव क महा मद्य विर्ज
कायनाम कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ७० ॥ नमो हगव क मूकान विध्वंसनाम कथा ग
ताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ७१ ॥ नमो हगव क महा धातुमां वृमधानाम कथा गताया हं क सम्यक् वृ
द्धाय ॥ ७२ ॥ नमो हगव क महा मद्यार्तनादिका मूत्रा नाम कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ७३ ॥
नमो हगव क महा मद्य मद्यनाम कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ७४ ॥ नमो हगव क महा मद्य व
र्षवृत्रा नाम कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ७५ ॥ नमो हगव क उत्तम कर्कशाय संहारनाम
कथा गताया हं क सम्यक् वृद्धाय ॥ ७६ ॥ नमो हगव क महा समुद्र मध्या नाम कथा गताया हं क
सम्यक् वृद्धाय ॥ ७७ ॥ नमो हगव क कालां मुखो क महा मद्य नाजनाम कथा गताया हं क सम्यक्

३१

स्कंदवृद्धाय ॥ १८ ॥ नमो हगव क महा मद्य समुद्र यत्र धा नाम कथा गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥

॥ १९ ॥ नमो हगव क अनन्ताष्टि महा मद्य संक्षुब्धना नाम कथा गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २० ॥

नमो हगव क अनन्त नूय महा मद्य नाम कथा गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २१ ॥ नमो हगव क

सर्व मद्य विहाव नादिना म्बुव ना हं क श्री कणा ला क न महा मद्य न मि नाम कथा गता या

हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २२ ॥ नमो हगव क सूर्य युदीया नाम कथा गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय

३२

४३

नमो हगव क सूर्य युदीया नाम कथा गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २४ ॥ नमो हगव क वदय दी

या नाम कथा गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २५ ॥ नमो हगव क वदय पदीया नाम कथा

गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २६ ॥ नमो हगव क वदय पदीया नाम कथा गता या हं क सम्य स्क

वृद्धाय ॥ २७ ॥ नमो हगव क वदय गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २८ ॥ नमो हगव

क्रिगिगता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय ॥ २९ ॥ नमो हगव क वदय गता या हं क सम्य स्कंदवृद्धाय

या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५० ॥ नमो हगव कथय नगली यकथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५१
नमो हगव कविश्वगली यकथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५२ ॥ नमो हगव कविमलयः
लानाम कथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५३ ॥ नमो हगव क सहस्रकि नरधरु व कथा ग ॥ ५४ ॥
ता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५४ ॥ नमो हगव क सहस्रावगा नानाम कथा गता या हं न सम्य
क् वृद्धाय ॥ ५५ ॥ नमो हगव क वनय कानाम कथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५६ ॥

नमो हगव क वन्द्य सूर्य युदी यानाम कथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५७ ॥ नमो हगव क
वज्रधन साग नानाम कथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५८ ॥ नमो हगव क वज्रधायाय ना
म कथा गता या हं न सम्यक् वृद्धाय ॥ ५९ ॥ नमो हगव क सर्व वृद्धा धि सत्त्वानां दश दिक् क्रिय
त्तानां सम्यक् वृद्धाय ॥ ६० ॥ ॥ ॥ नमो हगव क सर्व कथा गता श्री सगी गारुध
कानामा यत्राजिता महायुक्ता हि वायुवर्मी ॥ सर्व कवि क मरु विग्रह विवा दय म मधि ॥ सः

सर्वदृष्ट्यहमावनी॥ सर्वरुतग्रहधिवानधी॥ सर्वयत्रविद्यादुदनी॥ सर्वकानमस्ययनिः
जयधी॥ सर्वसत्तावन्धमाकधी॥ सर्वदृष्ट्यव्ययनासनी॥ सर्वनिगन्धरुञ्जनी॥ सर्वयः
क्रमाक्रमस्यहाधांविधंसनकनी॥ वरुनाभिकिनांयहसहसाधांविधंसनकनी॥ अष्टाविं
शकिनक्रुताधांयहादनकनी॥ सर्वशक्तिवानधी॥ अष्टानांमहाग्रहाधांविधंसनकनी॥
धानदृष्टदृष्टस्वप्नाधीनी॥ सर्वविषमक्रान्तिदकात्मानधी॥ सर्वदृष्टकिरुथात्मानधी॥

३४

यावदृष्टयकानमननयविजयधी॥ ॥ अथवाजिकामहाधानामहावनाकथायिव॥ म
हाकजा॥ महावन्ध्या॥ महास्वका॥ महादीका॥ महाकावा॥ महामालां॥ महायाधुनवासिनी॥
आर्यमानारुक्मिन्दुयावविजयाकथा॥ सर्वमानविहन्निववज्रमानविधित्वा॥ यथाः
हावज्रविज्ञानमात्रवेनायवाजिका॥ वज्रकुन्दिशविमानावभाक्तावेदहयुजिका॥ सोम्यनृयी
महास्वकाकालायाधुलवासिनी॥ आर्यमानामहावलाग्रयवाजिकामहावज्रकावा॥ वज्रकासा

निकाञ्चवगर्थेवामरककुन्दनी॥ वरुहसामविशामथाकाञ्चमानिकां॥ कसूकप्रतकाञ्चवववा
वनकुलालुला॥ कथागनकुलाष्टविधकाकसूमानिका॥ वरुकनकयरावलावनावरुकुधु
वस्वगावकमनाशीवरुथाशीवृक्षलावना॥ यथावरुधवावद्याः कथावरुधवायिय॥ वरुमावा
महामूडादतीवरुकनकयरा॥ सुभावनवावस्वगावगर्थेवकमलाकिणी॥ विनिष्ठाकचिरात्मगु
धहानगामियरा॥ ॐ स्वगामहायत्यक्तिनामहामूडासगधा॥ सर्वमारुकागधाश्चेवनक्रांकुर्व

ॐ

कुहंरुहस्वाहा॥ ॐ यत्यक्तिनास्वाहा॥ ॐ यत्यक्तिनास्वाहा॥ ॐ मूयनाजिनास्वाहा॥ ॐ मः
हाद्यानायस्वाहा॥ ॐ महावनायस्वाहा॥ ॐ महारुजायस्वाहा॥ ॐ महावधायस्वाहा॥ ॐ महास्वगा
यस्वाहा॥ ॐ महादिफायस्वाहा॥ ॐ महाकालायस्वाहा॥ ॐ महामालायस्वाहा॥ ॐ महायातुलवासि
नियस्वाहा॥ आर्यगानायस्वाहा॥ ॐ रुकटिकानायस्वाहा॥ ॐ रुयगानायस्वाहा॥ ॐ विजयगाना
यस्वाहा॥ ॐ सर्वमानियस्वाहा॥ ॐ वरुमानियस्वाहा॥ ॐ यन्नायस्वाहा॥ ॐ वरुविज्ञायस्वाहा॥

ॐ मानात्रे वा य स्वाहा ॥ ॐ वक्र कुक्षि य स्वाहा ॥ ॐ विष्णु वा क्रिय स्वाहा ॥ ॐ आना य स्वाहा ॥ ॐ दह पः
क्रिया य स्वाहा ॥ ॐ सोम नूयि य स्वाहा ॥ ॐ महा स्व ना य स्वाहा ॥ ॐ काला य स्वाहा ॥ ॐ पाहुल वा सिनि
य स्वाहा ॥ ॐ अय ना क्रिया य स्वाहा ॥ ॐ वक्र मं स्व ना य स्वाहा ॥ ॐ वक्र को मा नि य स्वाहा ॥ ॐ वक्र क
लंघ नि य स्वाहा ॥ ॐ वक्र हस्त य स्वाहा ॥ ॐ कां व न मा नि य स्वाहा ॥ ॐ क मं स्त न ला नि य स्वाहा ॥
ॐ कथा ग क कुला षी षा य स्वाहा ॥ ॐ क्रिय मा नि का य स्वाहा ॥ ॐ कन क य रा य स्वाहा ॥ ॐ ला य ना यः

ॐ ॐ

स्वाहा ॥ ॐ वक्र कुक्षि का य स्वाहा ॥ ॐ क मला क्रि दी य स्वाहा ॥ ॐ वृक्ष ला य ना य स्वाहा ॥ ॐ वक्र य धुः
य स्वाहा ॥ ॐ वक्र ध ना य स्वाहा ॥ ॐ वक्र माला य स्वाहा ॥ ॐ देवी क न क य रा य स्वाहा ॥ ॐ क मला क्रि
दी य स्वाहा ॥ ॐ आ ना वि ला य स्वाहा ॥ ॐ हान य रा य स्वाहा ॥ ॐ मणि य रा य स्वाहा ॥ ॐ ला य न स्वा
हा ॥ ॐ सू ना य न स्वाहा ॥ ॐ का न स्वाहा ॥ ॐ का ना रु व स्वाहा ॥ ॐ सर्व सत्वा न कं पि नी स्वाहा ॥ ॐ सर्व
सत्वा का न धी य स्वाहा ॥ ॐ सह स रु क स्वाहा ॥ ॐ सह स न रु स्वाहा ॥ ॐ अ व ला क य स्वाहा ॥ ॐ गा न

स्वाहा ॐ रुमान्मस्वाहा ॥ ॐ सिद्धस्वाहा ॥ ॐ मुनिश्चस्वाहा ॥ ॐ मुञ्चस्वाहा ॥ ॐ विमुञ्चस्वाहा ॥ ॐ मृगमास्त
कस्वाहा ॥ ॐ मेरीहृदयस्वाहा ॥ ॐ ग्गामस्वाहा ॥ ॐ ग्गामनूयस्वाहा ॥ ॐ यवन्नवनहृषिकस्वाहा ॥ ॐ मृ
पनाजिनायस्वाहा ॥ ॐ महाभोदीयस्वाहा ॥ ॐ विग्ननूयिथस्वाहा ॥ ॐ महावलायस्वाहा ॥ ॐ महाक
जायस्वाहा ॥ ॐ लाकधक्रियस्वाहा ॥ ॐ सन्नस्त्रियस्वाहा ॥ ॐ विग्ननाक्रियस्वाहा ॥ ॐ यीयहायस्वा
हा ॥ ॐ वृद्धिबद्धनीयस्वाहा ॥ ॐ धृतिदायेस्वाहा ॥ ॐ यष्टिदायेस्वाहा ॥ ॐ कानायस्वाहा ॥ ॐ का मः

ॐ

नूयिधीयस्वाहा ॥ ॐ सत्त्वहिनायस्वाहा ॥ ॐ संशमास्तानधीयस्वाहा ॥ ॐ यहायानमिनायस्वाहा
॥ ॐ मार्यानायस्वाहा ॥ ॐ दून्दूरिर्ग्यस्वाहा ॥ ॐ मंघिनिथस्वाहा ॥ ॐ विशानाहीयेस्वाहा ॥ ॐ यियं
वदायस्वाहा ॥ ॐ वन्दाननायस्वाहा ॥ ॐ महारोगिनिथस्वाहा ॥ ॐ मृज्जिनायस्वाहा ॥ ॐ यीरवानासा
यस्वाहा ॥ ॐ महासाथेस्वाहा ॥ ॐ महास्वगाथेस्वाहा ॥ ॐ महावलायस्वाहा ॥ ॐ महायनाकुमायेस्वा
हा ॥ ॐ महाभोदीयस्वाहा ॥ ॐ महान्निथस्वाहा ॥ ॐ महामायूर्यायेस्वाहा ॥ ॐ दूष्टसत्त्वायस्वाहा ॥ ॐ

सुन्दरि यस्वाहा ॥ उं नि सुंदरी यस्वाहा ॥ उं पुष्पा नाथस्वाहा ॥ उं भा न नू या यस्वाहा ॥ उं विरु
या यस्वाहा ॥ उं कल न प्र हा यस्वाहा ॥ उं विशूमा नि धी यस्वाहा ॥ उं धृजी यस्वाहा ॥ उं ख
क्रि यस्वाहा ॥ उं वक्रि यस्वाहा ॥ उं वा पी यस्वाहा ॥ उं ज हा यू भ यस्वाहा ॥ उं ऊ म्म नि यस्वाहा ॥ उं
ऊं कृ कृ नि यस्वाहा ॥ उं का न ग्रा क्रि यस्वाहा ॥ उं नि भा व नी यस्वाहा ॥ उं न कृ दी यस्वाहा ॥ उं भा
हि ती यस्वाहा ॥ उं भा न यस्वाहा ॥ उं का ना यस्वाहा ॥ उं नो डी यस्वाहा ॥ उं वि नि गु हा यस्वाः

३६

हा ॥ उं वा कृ दी यस्वाहा ॥ उं वंद मा का यस्वाहा ॥ उं गु कृ वा सि नी यस्वाहा ॥ उं मा रा ल्या यस्वाहा ॥ उं
हा क नि यस्वाहा ॥ उं शा म्पा यस्वाहा ॥ उं जा क थ दा यस्वाहा ॥ उं म ना क वा यस्वाहा ॥ उं का या नि धी
यस्वाहा ॥ उं महा व मा यस्वाहा ॥ उं सं ध्या य ना जि ना यस्वाहा ॥ उं स ल्या य ना जि ना यस्वाहा ॥ उं सा
र्थ वा हा यस्वाहा ॥ उं कृ पा वि धि यस्वाहा ॥ उं न हू मा र्ज य दर्श नी यस्वाहा ॥ उं व न दा यस्वाहा ॥ उं
सा स ग्य नी यस्वाहा ॥ उं सा मि यस्वाहा ॥ उं क्रि यो नू यस्वाहा ॥ उं मू म्म रु वि का मा यस्वाहा ॥ उं हा व

लिय स्वाहा ॥ उं या मि नी य स्वाहा ॥ उं व सु नि य स्वाहा ॥ उं म रु वा न्ध वा य स्वाहा ॥ उं धा न्ना य स्वाहा ॥
 उं य न्ना य स्वाहा ॥ उं म हा हा ग य स्वाहा ॥ उं भु र्ग य स्वाहा ॥ उं यि य दर्श ना य स्वाहा ॥ उं कृ त्ता कृ त्ता
 य स्वाहा ॥ उं क्ष नी हि मा य स्वाहा ॥ उं ड ग य ॥ उं ग म हा र्ग य स्वाहा ॥ उं ज ग द का य स्वाहा ॥ उं न क
 र्ता य स्वाहा ॥ उं श न्ना य स्वाहा ॥ उं रू कि वत्स वा य स्वाहा ॥ उं वा गी र्ध्व नि य स्वाहा ॥ उं शि वा गू र्वा
 य स्वाहा ॥ उं स र्व मा नू ग य स्वाहा ॥ उं स वा र्थ सा ध नि य स्वाहा ॥ उं ग्व फि य स्वाहा ॥ उं भ्र क्रि य स्वाहा ॥

३३

उं धन न्द द दा य स्वाहा ॥ उं रू गी क मि य स्वाहा ॥ उं श्री ला क ष्व ना त्म जा ये स्वाहा ॥ उं गु धा न ना य स्वाहा ॥
 उं स र्व सा ध नि यू नि धी य स्वाहा ॥ उं का न कृ या लं व ने य स्वाहा ॥ उं मे षा त्म क ष्व व धी य स्वाहा ॥
 उं अ षि ग ध य ग रू स र्व र्था ग का ष्व य गी का र य ज ना मा य ना जि ना म हा य त्प जि ना म हा ति या
 ना ही ॥ क य था क थं रू ग व नू नू य स्या ति नि र्हा ना य म हा य त्प जि ति नि र्ह र्क वा ॥ व द ना न रि नि
 हा ना य म हा य त्प जि ना ति नि ह रू वा ॥ स हान ति नि हा ना य म हा य त्प जि ना ति नि ह रू वा ॥

संस्कारादिनिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ विहानननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादि
निर्हारा ॥ अकृषाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ आश्रयाननिर्हाराय महा
प्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ किंकायाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ कायस्थान
निर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ मनःस्थाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्ह
रा ॥ अप्रत्यक्षाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ गदस्थाननिर्हाराय महा

४०

प्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ गन्धस्थाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ असंस्पृशनिर्ह
ाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ संयमस्थाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्ह
ारा ॥ धर्मात्मनिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ अकृतिस्थाननिर्हाराय म
हाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ अकृतिस्थाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ आ
श्रयस्थाननिर्हाराय महाप्रत्यक्षिनादिनिर्हारा ॥ किंकास्थाननिर्हाराय

महाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥कायविहानस्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥मना
विहानस्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥चक्र४संस्पर्शस्यानतिनिर्हनायमहाप्र
त्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥२५॥रुसंस्पर्शस्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥द्याक्षसंस्पर्श
स्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥किंकासंस्पर्शस्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्य
क्षिनातिनिहर्तुव्या॥कायसंस्पर्शस्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥मनाविहा

४९

नस्यानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥चक्र४संस्पर्शयावदनानतिनिर्हनायमहाप्र
त्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥२५॥रुसंस्पर्शजावदनानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥
द्याक्षसंस्पर्शजावदनानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥किंकासंस्पर्शयावदनान
तिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥कायसंस्पर्शजावदनानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षि
नातिनिहर्तुव्या॥मन४संस्पर्शयावदनानतिनिर्हनायमहाप्रत्यक्षिनातिनिहर्तुव्या॥चक्र४सं

सुर्मयस्ययवदनायमूनरिनिहायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥१॥अमसुसुर्मयस्ययवदना
नरिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥२॥आधसुसुर्मयस्ययवदनानरिनिहायमहाय
स्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥३॥क्रिवासुसुर्मयस्ययवदनानरिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥४॥
॥कायसुसुर्मयवदनानरिनिहायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥५॥मनःसुसुर्मयस्ययवदना
रिनिहायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥६॥युधिवाधकाजगतिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहि

४२

आकाशजगतिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥७॥अकाशजगतिनिर्हायमहायस्यंक्रि
वाहिनिहर्लुवा॥८॥वायुजगतिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥९॥आकाशजगतिनि
रिनिहायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥१०॥विहानजगतिनिहायमहायस्यंक्रिवाहिनिह
र्लुवा॥११॥अविद्यायामूनरिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥१२॥संस्कारानामूनरिनिर्हायम
हायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥१३॥विहानमूनरिनिर्हायमहायस्यंक्रिवाहिनिहर्लुवा॥१४॥नामयस्य

नहिनिहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ षडायकाननहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहि
निहर्ह्व्या॥ संसर्गनहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ चदनानहिनिहात्रायमहा
पुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ पुण्यकचदनानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ रु
कनहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ उपादानानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रिया
हिनिहर्ह्व्या॥ रुगावानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ जातानहिनिहात्रायमहा

४३

पुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ ऊनामवधमहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ दानयात्र
मिमानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ मीलयात्रमिमानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रि
याहिनिहर्ह्व्या॥ आक्रियात्रमिमानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ वीर्ययात्रमिमा
नहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ ध्यानयात्रमिमानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रिया
हिनिहर्ह्व्या॥ पक्षयात्रमिमानहिनिहात्रायमहापुण्यक्रियाहिनिहर्ह्व्या॥ अक्षयगुण्यक

नहिनिर्हनाय महाप्रत्यक्षिना हिनिहर्तुवा ॥ वहिर्ज्ञानानहिनिर्हनाय महाप्रत्यक्षिना हिनि
हर्तुवा ॥ अथ वहिर्ज्ञानानहिनिर्हनाय महाप्रत्यक्षिना हिनिहर्तुवा ॥ अथ वहिर्ज्ञानानहिनि
नहिनिर्हनाय महाप्रत्यक्षिना हिनिहर्तुवा ॥ महाप्रत्यक्षिना हिनिहर्तुवा ॥ महाप्रत्यक्षिना हिनि
हर्तुवा ॥ पञ्चमार्थानहिनिर्हनाय महाप्रत्यक्षिना हिनिहर्तुवा ॥ संस्कृतानहिनि
हर्तुवा ॥ अथ संस्कृतानहिनिर्हनाय महाप्रत्यक्षिना हिनिहर्तुवा ॥

४४

[illegible]

एकिनाहिनिरुहंवा॥अलावस्वलावगुन्यनहिनिरुहंवायमहायसंगिनाहिनिरुहंवा॥सस्य
सुनानिनहिनिरुहंवायमहायसंगिनाहिनिरुहंवा॥सस्यसुहानानिनहिनिरुहंवायमहायस
किनाहिनिरुहंवा॥अद्विषादानहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥ॐयानिनहिनिरुहंवा
निरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥यलानिनहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवाः
॥वाभंनानिनहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥आर्यासुहानानिनहिनिरुहंवाय

ॐ

महायसकिनाहिनिरुहंवा॥आर्यासुहानानिनहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥ध्यानानि
हिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥अपमानानिनहिनिरुहंवाय
महायसकिनाहिनिरुहंवा॥आनृपसमायकिहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥विभा
कानहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा॥अनृपुर्वविहायसमाकिहिनिरुहंवायमहायः
सकिनाहिनिरुहंवा॥गुनानिमिमापदिहिरुविभाकसुहानानिनहिनिरुहंवायमहायसकिनाहिनिरुहंवा

निहर्तुं वा ॥ अहिंसा हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ समाध्य हि निहर्तुं नाय महायत्नः
वा हि निहर्तुं वा ॥ धनं धि मूखा निहि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ दमकथा गत वः
लानि हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ यत्वा ॥ बीजे भा नशानि हि निहर्तुं नाय महायत्नं
किं नाय हि निहर्तुं वा ॥ वरुस ॥ यत्नं विदुः हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ महा क
नृप हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ अष्टा दमा ॥ यत्निका वृद्ध धर्मा न हि निहर्तुं नाय महा

४३

यत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ अकाय किरुलं हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं
वा हि निहर्तुं वा ॥ सकृद्यगा मिरुलं हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ अनागामिरुलं हि
निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ अनागामिरुलं हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा
॥ यत्नकथा धि हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ मार्गका नरुका हि निहर्तुं नाय महायत्नं
किं वा हि निहर्तुं वा ॥ सर्वका नरुका हि निहर्तुं नाय महायत्नं किं वा हि निहर्तुं वा ॥ अतं सर्व धर्मा धां

[illegible]

यत्र विद्या रुक्मनकरी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं ॥ सर्व विद्या युदनकरी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं ॥ सर्व दृष्टानां रुक्मन
करी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं ॥ सर्व यज्ञनामसंग्रहानां विध्वंसनकरी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं ॥ वरुणाभीकिनां य
हसहस्राणां विध्वंसनकरी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं ॥ अष्टाविंशतिनरुकाणां प्रभादनकरी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं
॥ अष्टानां महाग्रहाणां विध्वंसनकरी ॥ उं कूं कूं कीं ऊं ॥ सर्व सत्त्वानां वनशां कृन्तुवाहा ॥ उं सर्व म
थागमाधी यणी गुरु यज्ञनामा यज्ञाजिना महाप्रलयं क्रिनामहासहस्रं रुक्मनामहासहस्रं श्री र्षका

नगहाग् अकिनिग्रहाग् कनगकिनिग्रहाग् कटंकगकिनीग्रहाग् सर्वग्रहाग् ॥ अंकाहा
 निष्ठा ॥ गार्हाहा निष्ठा ॥ नृध्रिगहा निष्ठा ॥ वंगहा निष्ठा ॥ मांमाहा निष्ठा ॥ मदाहा निष्ठा ॥ मर्जाहा
 निष्ठा ॥ कागाहा निष्ठा ॥ कीविकाहा निष्ठा ॥ वल्गाहा निष्ठा ॥ माल्याहा निष्ठा ॥ गन्धाहा निष्ठा ॥ धूपा
 हा निष्ठा ॥ पुष्पाहा निष्ठा ॥ रूलाहा निष्ठा ॥ ४ सखाहा निष्ठा ॥ आद्रुहाहा निष्ठा ॥ यूगाहा निष्ठा ॥ वि
 द्याहा निष्ठा ॥ मूलाहा निष्ठा ॥ खगाहा निष्ठा ॥ रक्षाहा निष्ठा ॥ सिंहानकाहा निष्ठा ॥ वागाहा नि

४६

ध्या ॥ विलिकाहा निष्ठा ॥ असूयाहा निष्ठा ॥ डंष्ट्रिहाहा निष्ठा ॥ सन्दनिकाहा निष्ठा ॥ विगाहा निष्ठा
 ॥ ॥ ॐ सर्वगथागका श्रीषमीकारुषयानामयत्राजिकामहाप्रत्यक्षिनामहाविद्याधनयत्र
 ॥ समसर्वमत्त्वानाकरनकांकाकिमुफियत्रिकाधंयत्रिग्रहंयत्रियालधगाकिस्वस्वयनंदधुपः
 निहानंमसुयनिहाननंविषदृष्टनंविषनामनंसीमावन्धप्रनधीवन्धं कुर्वन्कुडीवन्धवर्षम
 गंधधुसुनदाभनं ॥ कथथा ॥ नमा सर्ववृक्षानां नमा प्रत्येकवृक्षानां ॥ नमा मेहीयप्रसूतानां न

नमः सकलवृक्षानां॥ नमः ३ नागसिंहानां॥ नमः ४ सरुदागसिंहां॥ नमः ५ अकायनां॥ नमः ६ सम्यग्
नानां॥ नमः ७ सम्यक्प्रियनानां॥ नमः ८ ददुक्करुथ॥ नमः ९ उडाय॥ नमः १० गवकनूदाय॥ उमायकिस
हिताय॥ नमः ११ वनूधाय॥ नमः १२ सर्वनागाधिपकथ॥ नमः १३ कूवनाय॥ नमः १४ उमाताय॥ नमः १५ कना
५०
५१ नमः १६ विनूधकाय॥ नमः १७ विनूयाकाय॥ नमः १८ वेषवनाय॥ नमः १९ दवानां॥ नमः २० नागानां॥ नमः २१
सूनानां॥ नमः २२ मन्त्रानां॥ नमः २३ गनूजानां॥ नमः २४ राधवानां॥ नमः २५ किन्नवानां॥ नमः २६ सहनगानां॥ नमः

यक्रानां॥ नमः २७ नाकसानां॥ नमः २८ रुकानां॥ नमः २९ थकानां॥ नमः ३० घिसावानां॥ नमः ३१ कस्तुछानां॥ नमः ३२ यूरता
नां॥ नमः ३३ कटयूरनानां॥ नमः ३४ स्कंधानां॥ नमः ३५ उल्मान्दानां॥ नमः ३६ ह्यानां॥ नमः ३७ अष्टा॥ नमः ३८ अस्तानां॥ नमः ३९
॥ नमः ४० नूदाथां॥ नमः ४१ वज्रार्याथां॥ नमः ४२ सूर्यानां॥ नमः ४३ तक्रकाथां॥ नमः ४४ ककिषीथां॥ नमः ४५ गहाथां॥ नमः
अधिनां॥ नमः ४६ सिद्धवनानां॥ नमः ४७ सिद्धिविद्याधनानां॥ नमः ४८ गोत्रिय॥ नमः ४९ गन्धत्रिय॥ नमः ५० ऊरु
लिय॥ नमः ५१ अमिताय॥ नमः ५२ रुक्मनिय॥ नमः ५३ रुक्मनिय॥ नमः ५४ मानसिय॥ नमः ५५ वायविय॥ नमः ५६ दा

मिडिय॥ नमः ४ रावनि य॥ नमः अथ रावलि य॥ नमः वसुनि य॥ नमः साककि य॥ नमः नागहृदया
या॥ नमः गानूहृदया य॥ नमः षड्भुजनि य॥ नमः साधिरुद्राय॥ नमः पूर्णरुद्राय॥ नमः समरुद्राय
य॥ नमः महासमरुद्राय॥ नमः सर्वग्रहाणां॥ य ४ ॐ सां सर्वग्रहा गकार्षी घनी गारुयज्ञानामाय ॐ
गजिनामहापुष्पकिनामहाविद्या गहीधायन॥ नमः सर्वसत्त्वाताय नमः कथाकिगुफियनि
ज्ञानं यत्रिग्रहं यत्रिपात्रं माकिस्त्वयं नंदं शुभं त्रिहार्नं गुरुपत्रिहार्नं विषयं विषयं विषयं नागं नमी

सावन्धवधनीवधं कर्चकुकीवंकुवर्धकं यम्भुगं नदामं ॥ ॐ निमहापुष्पकिनायां साधान्वः
ग्रहानां॥ ॥ १ ॥ नमः सां सर्वग्रहाणां सार्वविद्याहिन्द्याममीनां किनयामिव ऊध ॥ १ ॥
नमः कुरुना विद्याहिन्द्यामिमीनां किनयामिव ऊध॥ २ ॥ नमः कुरुना विद्याहिन्द्यामि
मीनां किनयामिव ऊध॥ ३ ॥ यत्रिवाकुरुना विद्याहिन्द्याममीनां किनयामिव ऊध॥ ४ ॥
नावायनकुरुना विद्याहिन्द्याममीनां किलयामिव ऊध॥ ५ ॥ महापुष्पकिना विद्याहिन्द्याः

मयीनां किं नयामिव ऊधः॥ ६ ॥ महाकालकृता विद्या हिन्दया मयीनां किं नयामिव ऊधः॥ ७ ॥
मार्ककागधकृता विद्या हिन्दया मयीनां किं नयामिव ऊधः॥ ८ ॥ कायानिकृता विद्या हिन्दया मयी
नां कीलया मिव ऊधः॥ ९ ॥ गवलिकृता विद्या हिन्दया मयीनां किलयामिव ऊधः॥ १० ॥
धूमसिकृता विद्या हिन्दया मयीनां कीलया मिव ऊधः॥ ११ ॥ अर्थवधकृता विद्या हिन्दया मयी
नां किलयामिव ऊधः॥ १२ ॥ वक्रकोमानीकृता विद्या हिन्दया मयीनां किलयामिव ऊधः॥

ऊँ

॥ १३ ॥ यमात्रिकृता विद्या हिन्दया मयीनां किलयामिव ऊधः॥ १४ ॥ यमभ्रुकृता विद्या हिं
न्दया मयीनां किलयामिव ऊधः॥ १५ ॥ कैलनागकृता विद्या हिन्दया मयीनां कीलया मिव ऊ
धः॥ १६ ॥ अग्नि कर्मकृता विद्या हिन्दया मयीनां कीलया मिव ऊधः॥ १७ ॥ विनायककृताः
विद्या हिन्दया मयीनां किलयामिव ऊधः॥ १८ ॥ कुमालकृता विद्या हिन्दया मयीनां कि
लयामिव ऊधः॥ १९ ॥ वरुमहाराजकृता विद्या हिन्दया मयीनां किलयामिव ऊधः॥

॥ २० ॥ चक्ररुग्निरुक्ताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ २१ ॥ गङ्गागङ्गाकृतावि
द्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ २२ ॥ यकप्रसधूकनशिद्विकनसर्वाथसाधन
रुक्ताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ २३ ॥ रुक्मिस्वप्ररुक्ताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिल
यामिव ऊँ ॥ २४ ॥ नन्दिकधनकार्त्तिकयकृताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिल
यामिव ऊँ ॥ २५ ॥ चक्ररुक्ताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ २६ ॥

गङ्गापकिमहासाहायकृताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ २७ ॥ नगप्रवधकृ
ताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ २८ ॥ मूर्धनकृताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलया
मिव ऊँ ॥ २९ ॥ अवलाकिकधनकृताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ ३० ॥
वीरवागकृताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ ३१ ॥ वक्रयाधिकिद्राधि
यकिरुक्ताविद्याहिन्द्याम्यमीनांकिलयामिव ऊँ ॥ ३२ ॥ यकप्रसधूकनशिद्विकनसर्वाथसाधन

मयीनांकिलयामिव ऊधः ३३ यथाकाविकंठस्य कृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव
ऊधः ३४ मधुप्रवधकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ३५ इन्दुकीकृता
विद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ३६ वक्रवर्गीकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकि
लयामिव ऊधः ३७ सर्वशक्तिगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ३८
सर्वद्वयगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ३९ सर्वनागगणकृताः

ऊ०

विद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ४० ॥ सर्वयक्रगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिल
यामिव ऊधः ४१ ॥ सर्वगन्धर्वगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ४२ ॥ स
र्वगन्धर्वगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ४३ ॥ सर्वकिन्नरगणकृतावि
द्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ४४ ॥ सर्वमहाव्रगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनां
किलयामिव ऊधः ४५ ॥ सर्वरूपगणकृताविद्याहिन्द्यामयीनांकिलयामिव ऊधः ४६ ॥

कया इहोवाहवनि॥ १ ॥ वाक्कदा मरुगा कूलानि गम्भी न गया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भी नामहा
पुत्यनिना नामधयंला कया इहोवाहवनि॥ २ ॥ गृह्यनिमहा गा कूलानि गम्भी न गया सूरु क वा
धिसत्वा गम्भी नामहा पुत्यनिना नामधयंला कया इहोवाहवनि॥ ३ ॥ वरुर्महा नाज महासा क
लानि गम्भी न गया सूरु क वाधिसत्वा गम्भी नामहा पुत्यनिना यांला कया इहोवाहवनि॥ ४ ॥ जय
किगा नांदवानां गम्भी न गया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भी नामहा पुत्यनिना यांला कया इहोवाहव

ऊँ

नि॥ ५ ॥ माया दवानां गम्भी न गया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भी नामहा पुत्यनिना यांला कया
इहोवाहवनि॥ कुषिना दवानां गम्भी न गया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भी नामहा पुत्यनिना नामध
यंला कया इहोवाहवनि॥ निर्मिता न नी नांदवानां गम्भी न गया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भी नाम
हा पुत्यनिना नामधयंला कया इहोवाहवनि॥ पत्रनिर्मितव सवर्णिना गम्भी न गया सूरु क म
हावाधिसत्वा गम्भी नामहा पुत्यनिना नामधयंला कया इहोवाहवनि॥ ८ ॥ वरुकायिका नां

दवानां गम्भीरकया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भीर नामहायत्यक्तिना नामरधयंला कया इती वा रुव
नि॥ १० ॥ वृक्षयूना हिना तां दवानां गम्भीरकया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भीर नामहायत्यक्ति
ना नामरधयंला कया इती वा रुवनि॥ वृक्षयार्थया दवानां गम्भीरकया सूरु क महावाधिसत्वा ग
म्भीर नामहायत्यक्तिना नामरधयंला कया इती वा रुवनि॥ महावाक्क र्था दवानां गम्भीरकया सूरु
क महावाधिसत्वा गम्भीर नामहायत्यक्तिना नामरधयंला कया इती वा रुवनि॥ आ हा दवानां ग

ॐ

म्भीरकया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भीर नामहायत्यक्तिना नामरधयंला कया इती वा रुवनि॥ यवि
ना हा दवानां गम्भीरकया सूरु क महावाधिसत्वा गम्भीर नामहायत्यक्तिना नामरधयंला कया इ
ती वा रुवनि॥ अयमा धा हा दवानां गम्भीरकया सूरु क महावा सत्वा गम्भीर नाया महायत्यक्ति
ना नामरधयंला कया इती वा रुवनि॥ आ हा स्वना तां दवानां गम्भीरकया सूरु क महावाधिसत्वा
गम्भीर नामहायत्यक्तिना नामरधयंला कया इती वा रुवनि॥ गुरु कृत्वा दवानां गम्भीरकया

सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम महाप्रत्यक्षि नाम मध्यं ला क पादूर्त्वा एव किं ॥ बृहन्महाला द
वा नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम मध्यं ला क पादूर्त्वा एव किं ॥ अक पादवा
नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम मध्यं ला क पादूर्त्वा एव किं ॥ सुदर्शन द वा
नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम मध्यं महाप्रत्यक्षि नाम ला क पादूर्त्वा एव
किं ॥ अक निष्ठा द वा नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम महाप्रत्यक्षि नाम मध्यं

ॐ

ला क पादूर्त्वा एव किं ॥ आ का ग त्या य क ना नाम द वा नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी
नाम महाप्रत्यक्षि नाम मध्यं ला क पादूर्त्वा एव किं ॥ विहानं त्या य क ना द वा नां गम्भी प्रकया सूरु
क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम महाप्रत्यक्षि नाम मध्यं ला क पादूर्त्वा एव किं ॥ आ किं च न त्या
य क ना द वा नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम महाप्रत्यक्षि नाम मध्यं ला क पादूर्त्वा
एव किं ॥ नाम संहा नां द वा नां गम्भी प्रकया सूरु क महावाधिसत्त्वा गम्भी नाम महाप्रत्यक्षि

नानामधयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ नेवसंहादवातांगमीनकयासूरुकमहावाधिसत्त्वातांगमीना
महाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ दानयानमिकायांगमीनकयासूरुकमहावा
धिसत्त्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ गीलपावमिकायांगमीन
कयासूरुकमहावाधिसत्त्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ कान्ति
पावमिकायांगमीनकयामहावाधिसत्त्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्हावाह

३५

नि॥ वीर्ययानमिकायांगमीनकयामहावाधिसत्त्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्
हावाहवनि॥ आनयानमिकायांगमीनकयासूरुकमहावाधिसत्त्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानाम
धयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ पुलापावमिकायांगमीनकयासूरुकमहावाधिसत्त्वागमीनाम
हाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ अस्मगून्यकायांगमीनकयासूरुकमहावा
धिसत्त्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामधयंलाकपादूर्हावाहवनि॥ वहिनर्वागून्यकायांगमीन

न्याससूक्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्रत्यक्षिनामधयंलाकपादूर्त्तवाहवति॥ अथात्मव
हिद्यात्मगुणनायांगम्हीनक्यासूक्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्रत्यक्षिनामधयंलाक
पादूर्त्तवाहवति॥ गुणनागुणनायांगम्हीनक्यासूक्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्रत्यक्षि
नामधयंलाकपादूर्त्तवाहवति॥ महागुणनायांगम्हीनक्यासूक्तमहावाधिसत्त्वाग
म्हीनामहाप्रत्यक्षिनामधयंलाकपादूर्त्तवाहवति॥ यत्रमार्थगुणनायांगम्हीनक्यासू

क्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्रत्यक्षिनामधयंलाकपादूर्त्तवाहवति॥ सक्तगुणना
यांगम्हीनक्यासूक्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्रत्यक्षिनामधयंलाकपादूर्त्तवाहवति
॥ अनवनागुणनायांगम्हीनायांसूक्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्रत्यक्षिनामधयंलाक
पादूर्त्तवाहवति॥ अनवकागुणनायांगम्हीनक्यासूक्तमहावाधिसत्त्वागम्हीनामहाप्र
त्यक्षिनामधयंलाकपादूर्त्तवाहवति॥ युक्तगुणनायांगम्हीनक्यासूक्तमहावाधिः

सत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनामामधयंलाकपाइतीवार्तवति॥ सर्वधर्मगुणनायांगमीनकया
सूक्तमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनामामधयंलाकपाइतीवार्तवति॥ स्वलकाः
धर्मगुणनायांगमीनकयासूक्तमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनामामधयंलाकपाइ
तीवार्तवति॥ अनूपनमृगुणनायांगमीनकयासूक्तमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षि
नामामधयंलाकपाइतीवार्तवति॥ अत्रावगुणनायांगमीनकयासूक्तमहावाधिसत्वा

३९

गमीनामहाप्रत्यक्षिनामामधयंलाकपाइतीवार्तवति॥ स्वलावगुणनायांगमीनकयासू
क्तमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनामामधयंलाकपाइतीवार्तवति॥ अत्रावस्व
लावगुणनायांगमीनकयासूक्तमहावाधिसत्वागमीनमहाप्रत्यक्षिनामामधयंलाकपा
इतीवार्तवति॥ स्मृत्ययमनानांगमीनकयासूक्तमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिः
नामामधयंलाकपाइतीवार्तवति॥ सम्यक्कुहानानांगमीनकयासूक्तमहावाधिसः

स्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवाहवमिः अद्वियादानांगमीननयासूक्तः
कमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवाहवमिः ॐ द्रयातांगमीन
नयासूक्तकमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवाहवमिः ॥ नः ३२
लानांगमीननयासूक्तकमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्हो
वाहवमिः ॥ वाधंगानांगमीननयासूक्तकमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरध

यंपाइर्होवाहवमिः ॥ आर्याष्टमार्गानांगमीननयासूक्तकमहावाधिसत्वागमीनामहाप्र
त्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवाहवमिः ॥ ध्यानानांगमीननयासूक्तकमहावाधिसत्वागमी
नामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवाहवमिः ॥ धानधीमूत्वानांगमीननयासूक्तकम
हावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवाहवमिः ॥ दधनथागरवः
लानांगमीननयासूक्तकमहावाधिसत्वागमीनामहाप्रत्यक्षिनानामरधयंलाकपाइर्होवा

हवनिः वरुवेमात्रया निगमि नगया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामहायत्यज्ञिनानामधः
यंलाकपाइलीवाहवनि॥ वरुह्यप्रिसंविदानांगमीनगया सूरुमहावाधिसत्वागमीना
महायत्यज्ञिनानामधयंलाकपाइलीवाहवनि॥ अष्टदमां आननिकवृद्धधर्मां गमीन
गया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामहायत्यज्ञिनानामधयंलाकपाइलीवाहवनि॥ आव
कयानस्य गमीनगया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामहायत्यज्ञिनानामधयंलाकपाइली

ॐ

वाहवनि॥ पुत्यकयानस्य गमीनगया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामहायत्यज्ञिनानामध
यंलाकपाइलीवाहवनि॥ महायानस्य गमीनगया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामहायत्यज्ञिनाना
मधयंलाकपाइलीवाहवनि॥ ॐ मां सर्वगथा गकाफी वमी नाकुना मायना जिना महायत्यज्ञि
नामहाविश्यानाही॥ अयुमाधनां गमीनगया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामहायत्यज्ञिनानाम
धयंलाकपाइलीवाहवनि॥ आनूयसमायर्हिनां गमीनगया सूरुमहावाधिसत्वागमीनामः

हापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ अष्टनांविभाकाद्यां गम्भीरकयासूक्तमहावा
धिसत्वागम्भीरामहापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ नवानुपूर्वविहावसमाय
रुतांगम्भीरकयासूक्तमहावाधिसत्वागम्भीरामहापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहव
नि॥ गुण्यकानिमिरूपधिरुविभाकमूर्त्तानिगम्भीरकयासूक्तमहावाधिसत्वागम्भीराम
हापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ अष्टनांविमूर्त्तिमार्गनांगम्भीरकयासूक्तः

ॐ

महावाधिसत्वागम्भीरामहापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ अष्टनांविमूर्
क्तिरुतदग्नामार्गनांगम्भीरकयासूक्तमहावाधिसत्वागम्भीरामहापुत्यक्रिनाताम
रधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ समाधिनांगम्भीरकयासूक्तमहावाधिसत्वागम्भीराम
हापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ धान्दीमूर्त्तानांगम्भीरकयासूक्त
महावाधिसत्वागम्भीरामहापुत्यक्रिनातामरधयंलाकपाइर्हावाहवनि॥ दग्नागम्भीरकयासूक्तः

नवलानां गम्भिरकया सूरुह महावाधिसत्वा गम्भीरामहापुण्यक्रियानामरधयंला कपा
इहोवाहवकि॥ बहुवेगा नद्यानिगम्भीरकया सूरुह महावाधिसत्वा गम्भीरामहापुण्यक्रि
यामरधयंला कपा इहोवाहवकिः बहुधर्मयुक्तिसंविदानां गम्भीरकया सूरुह महावाधि
सत्वा गम्भीरामहापुण्यक्रियानामरधयंला कपा इहोवाहव कि॥ अष्टादशानां आध
निकवृद्धधर्मानां गम्भीरकया सूरुह महावाधिसत्वा गम्भीरामहापुण्यक्रियानांला कपा

ॐ

इहोवाहवकि॥ अथकयानस्य गम्भीरकया सूरुह महावाधिसत्वा गम्भीरामहापुण्यक्रियाना
मरधयंला कपा इहोवाहवकि॥ पुण्यकयानस्य गम्भीरकया सूरुह महावाधिसत्वा गम्भीरामहा
पुण्यक्रियानामरधयंला कपा इहोवाहवकि॥ महायानस्य गम्भीरकया सूरुह महावाधिसत्वा ग
म्भीरामहापुण्यक्रियानामरधयंला कपा इहोवाहवकि॥ ॐ सां सर्वकथा गता फीषमीना कथयना
मायनाजिनामहापुण्यक्रियामहाविद्यानाहीधनयत्नमसर्वसत्त्वानां अत्रकां कथारिगुपिंय

निजाधं यत्रियहयत्रियात्रधंभा किस्वस्वा यनंदद्युयत्रिहानं ससुयनिहानं विषदु ४ स्वनंति
यनाभनंगी सातं न्वधनशीतवधकू नूवंकु जीवकु वषभगं यधकु भनदाभगं ॥ वृमिमहापुः
त्यकिनायां ॥ पूर्वोत्तिममयाधिकान्न ४ ॥ ॥ हगवांनाह ॥ नखलूपूनलियं रदकमहावा
धिसत्त्व ४ दानयानमिकेव मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवा
पदकयो ॥ गीलयानमिकेव मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितास्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवायः

ॐ

दष्टव्या ४ ॥ कांतिपात्रमिकेव मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवा
पदष्टव्या ४ ॥ वीर्यपात्रमिकेव मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवा
पदष्टव्या ४ ॥ ध्यानपात्रमिकेव मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवा
पदष्टव्या ४ ॥ प्रहापात्रमिकेव मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवा
पदष्टव्या ४ ॥ मूयदिष्टानवयान संप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागकाः लाधिरुवा

वहिष्तात्मगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा यदष्टव्याः॥
अध्यात्मवहीष्तात्मगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा य
दष्टव्याः॥ गुणकागुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा य ॐ
दष्टव्याः॥ महागुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा य
दष्टव्याः॥ पञ्चमार्थगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिः

कत्वा यदष्टव्याः॥ सत्त्वगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा
या यदष्टव्याः॥ असत्त्वगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा
या यदष्टव्याः॥ अत्यन्तगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा
यदष्टव्याः॥ अनवनागुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिरुक्त्वा
या यदष्टव्याः॥ अनवकानगुणकेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिः

कथा यदृष्ट्या ४ प्रकृतिगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिगथा
यदृष्ट्या ४ सर्वधर्मगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधिगः
या यदृष्ट्या ४ स्ववक्रधगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताधि ॐ
कथा यदृष्ट्या ४ अनूपनसुगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ता
धिरुथा यदृष्ट्या ४ अलावगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ता

धिरुथा यदृष्ट्या ४ स्वलावगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुणात्ताः
धिरुथा यदृष्ट्या ४ अलावस्वलावगुणैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्या
गुणात्ताधिगथा यदृष्ट्या ४ मूयपसुनानां नैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिस
त्वस्यागुणात्ताधिगथा यदृष्ट्या ४ सम्यक्कहाधं नैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिस
त्वस्यागुणात्ताधिगथा यदृष्ट्या ४ वाधिपादानां नैव मूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिस

कालाधिक्या यदष्टव्या॥ अष्टानां विमूर्कितमार्गानां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वा
धिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ अष्टिहानां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वा
धिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ अष्टिहानां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वा नं०
धिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ समाधिनां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वा
धिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ धामिभूम्यानां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य

वाधिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ दमकथागतवला नां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठित
स्य वाधिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ वक्रवेगा नयानां नेवमूयदिष्टानवयानसंप्रति
ष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ वक्रुर्ध्वयमिसंविदानां नेवमूयदिष्टानवयानसं
प्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ अष्टादशनां वधिका वृद्धधर्मा नां नेवमू
यदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्यागुक्तालाधिक्या यदष्टव्या॥ यावक्या नां नेवमूय

दिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्याग्राहाधिकथायदष्टव्याः प्रत्यकवृद्ध्यानां नैव
नृपदिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्याग्राहाधिकथायदष्टव्याः ॥ महाया नानैव मूष
दिष्टानवयानसंप्रतिष्ठितस्य वाधिसत्त्वस्याग्राहाधिकथायदष्टव्याः ॥ ॐ निमहाप्रत्यक्षिना
यांधमां पदमाधिकावः ॥ ॥ रुगवानाह ॥ यः मां सर्वं कथा गता कृष्णगीता कथयता माधः
शक्तिनामहाप्रत्यक्षिना महाविद्यानाह मम सर्वं सखा नाभः वक्रां कना किमु किं पत्रिजधयत्रिय

ॐ १

हंप्रियात्रयं मानिस्त्वस्त्ययं दंष्टुपनिहानं मरुयनिहानं विषदृष्टवनां विषना गनं गीमा वन्ध
धनेधी वन्धकृत्वं लुकी वं कुर्वयं कं यं मरुगानदा गनं ॥ अथ रुगवानाह ॥ अरु मरुयदा सिद्धाः ॥
सम्यक् वृद्धता विना ॥ ॐ सर्वं कथा गता कृष्णगीता कथयता माधः ॥ ॐ कल २ प्रकल २ धक २ द
२ विद २ खाद २ हिन्द २ हिन्द २ रुन २ दह २ पव २ कं कं रुट् २ स्वाहा ॥ ॐ सर्वं इष्टानं कं रुट् ॥ स
र्वं इष्टाधिकारं रुट् ॥ सर्वं इष्टाधिकारं रुट् ॥ सर्वं इष्टाधिकारं रुट् ॥ सर्वं इष्टाधिकारं रुट् ॥ सर्वं

मातृभयप्रसीतम्भकुर्वन्कुजीवन्कुवर्षमन्त्रं यन्मन्त्रुमन्त्रदाभक्तं ॥ कथथा ॥ अरुमन्त्रुयदासिद्धाः
 सर्वकर्मकमागुहा ॥ नमावृद्धाय ॥ नमाधर्माय ॥ नमः संघाय ॥ नमाहगवक आर्य महा
 पुण्ड्रिनाथे ॥ कथथा ॥ महापुण्ड्रिनाथ ॥ गिवि २ गिवीधी २ गिविवनी आकागवकि ॥ आका
 गविगुद्ध ॥ सर्वपापविगह ॥ आकागगगधननः आकागविवानधीः सधिविवविजिनी ॥ वरु
 कविधीकलधीकाविधीकविधकलिकमियनः सधिसूक ॥ स्वविभासोविधन ॥ सूकरे ॥

५५

सूकरे ॥ सूवक ॥ सूनक ॥ सूवर्क ॥ रगोत्र ॥ अगिक ॥ अनूयन ॥ अनागक ॥ पुण्ड्रिनाथ ॥ नमा महापुण्ड्रि
 नाथ ॥ वरु ॥ सूवर्क ॥ रगवकि ॥ सूनकधी ॥ सूकरे ॥ सूकम ॥ सूयक ॥ सूदम ॥ सूदम ॥ सूवम ॥
 वन ॥ वनद ॥ रगवनी ॥ रदवनी ॥ रदसूद ॥ विमल ॥ ऊयक ॥ वरु ॥ वरु ॥ वरु ॥ वरु ॥ वरु ॥
 धानि ॥ गन्धनी ॥ रगोत्री ॥ वरुनी ॥ मागयि ॥ ववसि ॥ सूमकि ॥ यूकसि ॥ सूमरी ॥ सूवनी ॥ गा
 ववि ॥ सूकनी ॥ गावनी ॥ दमिदि ॥ दामिदि ॥ नूदिनी ॥ सर्वार्थसाधनी ॥ यनमार्थसाधनी ॥

हन्त२दह२यच२नामथ२गाय२रुद२रुद२सर्वदृष्टमानान्वच२माक२धु॥महामह
दधुनिवाविधी॥माधदधु॥माक२धु॥महामाक२धु॥मानिधी॥महामानिधी॥यन॥यचन॥
विवन॥विमन॥विटि२विकि२धानिधी॥यनिधी॥निमिक्कि॥विनिधि॥महयय्यज्जिन॥य
वन॥यवनसम॥यधुनि॥माक२धि॥नृन्धसि॥कनसि॥सवसि॥वचसि॥सूमकि॥यूक्कसि॥ठा
वलि॥मावनि॥माकनि॥माकनि॥सूमकि॥सूमकि॥दमिदि॥दमिदि॥यचनि॥उमिति॥उमि

[illegible]

𠂔𠂔

॥ ऊवकिथ स्वाहा ॥ येऊं कल स्वाहा ॥ विमल विपूत्र स्वाहा ॥ सर्वकथा गंगा श्री घमूरु स्वाहा ॥ यः ॐ मां
सर्वकथा गंगा श्री घमी नारुयका नामाय नमः किना महाप्रत्यक्षिना महाविद्यानाह मनुष्यदा रक्षा
निर्यरणा निगना नाम धि म गय कि द्वा यथा कर्धूयूट नियति ध्यनि ॥ पठि ध्यनि ॥ या ० धि ध्यनि
क सर्ववर्हिका न वि ध्यनि ॥ अनूना या सम्यक् संधारक्षी ४ क ४ यूनर्वादा ॥ यः ॐ मां महाप्रत्यक्षिना
महाविद्यानाह मनुष्यदा रक्षा निर्यरणा निगना नाम धि म गय कि द्वा यथा कर्धूयूट नियति ध्यनि ॥ पठि ध्यनि ॥ या ० धि ध्यनि

कावाः नाकावाः नाकमाकावाः वाक्कावाः कठिथावाः कदन्थावाः थकथिल्लहागे नवभाथा गय दलि
खिद्यनिलिषाययिद्यनिः धनयिद्यनिः वादयिद्यनिः ॥ पर्यवाप्यनिः ॥ छिदनमनसारुविष्यः
निः ॥ यत्रस्य विस्त्रयसंयकागयिद्यनिः ॥ कस्य महावाधिसत्त्वस्याष्टवकाग्रनानिः सर्वथानप
दिकाकिरुयानि ॥ नवास्यकायमहावाधयाहविद्यनिः ॥ तत्रास्यग्रीवाग्नितविषन्नगमुनः
काधाउकिवधमनुकर्मवर्ध्थारामयाकुमूलनहलनगिशवर्त्तिका ॥ उकादिकायात्रिय

ॐ

कावाकुर्यकासफहिका अर्द्धमासिकाथानन्नकमिष्यनिः ॥ सत्कृत्वाधिगदकि ॥ यकृयडापयय
क कुरुजाकोजाकोजाकिस्मशारुविद्यनिः ॥ सर्वसत्त्वानाथोपिथारुविद्यनिः ॥ वन्दनियत्र ॥
पूजनीयत्र ॥ यकृत्रारुविद्यनिः ॥ सर्वनन्नकमिष्यरुयानिगकिगगधयकाथापयकिश्चयनिः
मूकुरुविद्यनिः ॥ यथावाकमधुलनसिथियकयनिः ॥ सर्वसत्त्वानाथरुथाहानस्यावलास
कथारुविद्यनिः ॥ कथावधुलमृकनप्रवकासर्वसत्त्वानाथप्रकादयनिः ॥ कथायंधर्ममृकस

वसुविरुसंगानानियुक्तादयमि॥ सर्वदृष्टयकनाससहकथयिगावज्जनकडाकिनीय
 हविष्यविनायकादया॥ सर्वस्यामहाप्रत्यक्षिनामहाविद्यानाहा॥ प्रतावनसकाविदर्थनाकः
 कुं उचसंकमनाचकषामियंमहाविद्यानाही॥ सकर्तुव्या॥ कर्तुसर्वदृष्टिनाविद्याधनः
 स्याहायवधविधयाधरविमि॥ अस्याचवानूलाधधयद्रमहाप्रत्यक्षिनामहाविद्यानाहानवा
 स्यमकुरुयंरविष्यमि॥ अत्रमिकमनीयाधरविष्यमि॥ सर्वभक्तगर्धनाजमासेवाभक्तगृह्यमिहि

गं५

ध॥ अकसा महावाक्कधवध्याहावधकमहावाधिसत्त्वानृदिक॥ न्ययिगमुनिस्वसु२गदुकि॥ यथापं
 ममयानि॥ सर्वविद्यविस्तार्यक॥ कस्मिध॥ समयधर्मा३स्यामुखीरवीष्यमि॥ महावाक्कस्मिद
 वंरविष्यमि॥ कुयंमहाप्रत्यक्षिनामहाविद्याधानयक॥ कस्यारुहिमहावाधिसत्त्वामूर्त्तिकावंच
 लिखित्वाकायकधृगमाकृत्वाधानयिकया॥ अतंरुसाननमनूयकनाकृतेः संपूजितकुरुकुरु
 वीरविष्यमि॥ वज्रपाधिवयकडा॥ उद्वेवसुविष्यमि॥ हानिनिपाविकध्वेवत्वाकपालामहा

द्विकाऽयद्यसूर्यग्रहाय नमः ॥ कथं सर्वमहानागदबाकाभाय यस्तथा ॥ असूना गमूना गन्ध
 वाकिननामहानगमयकात्राकसाकसायकायिगावाअयसाजाअसात्रका ॥ इतिमहाप्रत्येकिना
 यांनकान्वयस्तनं ॥ ॥ अरुपनवाधिसत्त्वऽयमवमहाप्रत्येकिनामहाविद्यागदबाकुर्नअजा
 हावा ॥ गहीहावा ॥ नूधिवाहावा ॥ वंसाहावा ॥ मांसाहावा ॥ मदाहावा ॥ माहाहावा ॥ मर्जीहावा ॥
 ॥ जीविनाहावा ॥ वल्गुहावा ॥ माल्याहावा ॥ गन्धाहावा ॥ पूष्पाहावा ॥ धूपाहावा ॥ दीपाहावाः

६०

पूष्पाहावा ॥ रुलाहावा ॥ सुखाहावा ॥ आद्रुहावा ॥ पूजाहावा ॥ विष्टाहावा ॥ मूजाहावा
 रवाहावा ॥ श्रुपाहावा ॥ सिंहात्रकाहावा ॥ उष्ट्रिहावा ॥ वाक्काहावा ॥ विलिकाहावा ॥ असूच्या
 हावा ॥ स्यनन्दनिकाहावा ॥ पापविला ॥ इष्टविला ॥ नोदविला ॥ पत्रपादाहावा ॥ इमां सर्वं
 पागकाष्ठीष्ठीकापयजानामायनाकिनामहाप्रत्येकिनामहाविद्यागदबाकुर्नअजा
 पदीयगन्धनेव्यादिवलित्रदास्यामि ॥ अथकमनुभा ॥ पापविला ॥ इष्टविला ॥ नोदविला

यनप्राधहना॥ सर्वगुहाकु॥ अजाहनागु॥ धाकुम॥ सोमविल॥ मेहीविल॥ कल्याधहना॥
 रक्षाकुम॥ वृद्धधर्मसंधाहियसुभा॥ कथथा॥ कानधरु॥ कालालियरु॥ कृष्णदियरु॥
 मांखिनीयरु॥ कमलाकिधीयरु॥ हानिकियरु॥ हनिकमियरु॥ श्रीममियरु॥ हनि
 यिकुनरु॥ नमरु॥ यलम्वरु॥ नम्लादनियरु॥ कालया॥ कयालधनीयरु
 ह॥ कयालधनधयरु॥ कन॥ दनियरु॥ यमइकियरु॥ यमनाकसीयरु॥ रुगुसनि

८९

यरु॥ यनिकमवनिअइरु॥ गन्धयूषाधूयदीयअ॥ दाणाभि॥ वक्र२मां सर्वसुखानाअ॥
 ॥ सर्वहयायु३अ॥ स्वाहा॥ कथथा॥ ॐ ति वि ति स्वाहा॥ मि ति पि ति स्वाहा॥ नि ति स्वाहा॥
 म उ स्वाहा॥ आ उ स्वाहा॥ ना उ स्वाहा॥ धा उ स्वाहा॥ इ धा उ स्वाहा॥ ह नि धी स्वाहा॥ हा नि धी स्वाहा॥
 ॥ व रु नि स्वाहा॥ वा रु नि स्वाहा॥ व ग नि स्वाहा॥ व गु ति स्वाहा॥ यां गु पि ना विय स्वाहा॥ व र्ष धी
 य स्वाहा॥ आ वा हि धिय स्वाहा॥ वि वा हि धिय स्वाहा॥ अ न स्वाहा॥ भ न स्वाहा॥ मा न स्वाहा॥

किनि२स्वाहा॥कुनू२स्वाहा॥मन२स्वाहा॥मिनि२स्वाहा॥मूनू२स्वाहा॥मन२॥मिनि२स्वाहा॥मूनू२स्वा
हा॥दम२स्वाहा॥दिमि२स्वाहा॥दूम२स्वाहा॥दम२स्वाहा॥दुदम२स्वाहा॥दिदिम२स्वाहा॥यपन२स्वाहा
॥विमल२स्वाहा॥अस्वमूखिस्वाहा॥कालियस्वाहा॥कलालियस्वाहा॥कूकूदियस्वाहा॥यकिर्ध
कगियस्वाहा॥कन२स्वाहा॥किलि२स्वाहा॥कूनू२स्वाहा॥हन२स्वाहा॥हिनि२स्वाहा॥हनू
२स्वाहा॥दमस्वाहा॥दिमि२स्वाहा॥दूम२स्वाहा॥रगनाथस्वाहा॥बलाथस्वाहा॥यनिअलाथ

दं२

स्वाहा॥गिलि२स्वाहा॥हिलि२स्वाहा॥मिलि२स्वाहा॥किलि२स्वाहा॥हिलि२स्वाहा॥यूलू२
स्वाहा॥मूकू२स्वाहा॥कूलू२स्वाहा॥मूनू२स्वाहा॥कू२स्वाहा॥नू२स्वाहा॥मूर२स्वाहा॥वा२स्वाहा
पा२स्वाहा॥काल२॥दमस्वाहा॥दमनीस्वाहा॥मय२स्वाहा॥यवनिस्वाहा॥कल२स्वाहा॥क
लनीस्वाहा॥दुधुहिस्वाहा॥गर्जनीस्वाहा॥वर्धनीस्वाहा॥सूठनीस्वाहा॥गयनीस्वाहा॥मायनि
स्वाहा॥यवनीस्वाहा॥यावनिस्वाहा॥हनधीस्वाहा॥हानधीस्वाहा॥कनधीस्वाहा॥कानधीस्वाहा

॥कम्यशी स्वाहा॥ काया नि स्वाहा॥ मर्दनी स्वाहा॥ महा मर्दनी स्वाहा॥ मष्टिमिक स्वाहा॥ रुमंका नि
स्वाहा॥ संका नि स्वाहा॥ साक नि स्वाहा॥ भव नि स्वाहा॥ भव नि स्वाहा॥ कल २ स्वाहा॥ इम स्वाहा॥
इम २ स्वाहा॥ मूक २ स्वाहा॥ मूम २ स्वाहा॥ रगा ना स्वाहा॥ धना स्वाहा॥ यनि थला य स्वाहा॥ हुं
लि स्वाहा॥ मिलि स्वाहा॥ किस्नि स्वाहा॥ किलि मिलि स्वाहा॥ य ४ रुमां सर्व कथा गहा धि यमी
कारु यशना मापना कि काम हय क्ति ना महा विद्या ना ह ४॥ कथथा॥ सिद्ध॥ सु सिद्ध स्वाहा॥

स्वाहा

६३

भाव नि स्वाहा॥ यक नी स्वाहा॥ विभा क नी स्वाहा॥ मूक स्वाहा॥ विमूक स्वाहा॥ अमल स्वाहा॥ विमल स्वा
हा॥ निर्मल स्वाहा॥ अशुल स्वाहा॥ मकल स्वाहा॥ मांगल स्वाहा॥ हिनथ ग र्ह स्वाहा॥ नल स्वाहा॥ नेल
ग र्ह स्वाहा॥ रुद्र स्वाहा॥ मूरुद्र स्वाहा॥ समन रुद्र स्वाहा॥ यी रुद्र॥ सर्वार्थ साधन स्वाहा॥ यन मार्य सा
धन स्वाहा॥ यन मार्य साधनी य स्वाहा॥ सर्व मकल वा विनी य स्वाहा॥ ऊमा व मिय स्वाहा॥ मन सि
य स्वाहा॥ महामन सिय स्वाहा॥ मान सिय स्वाहा॥ महामान सिय स्वाहा॥ मूक स्वाहा॥ विमूक स्वाहा॥

अमल स्वाहा ॥ विमल स्वाहा ॥ निर्मल स्वाहा ॥ अदुल स्वाहा ॥ मङ्गल स्वाहा ॥ माङ्गल स्वाहा ॥ दिव्य
गर्ह स्वाहा ॥ गल स्वाहा ॥ गल गर्ह स्वाहा ॥ रुद्र स्वाहा ॥ मरुद्र स्वाहा ॥ समरुद्र स्वाहा ॥ श्री रुद्र स्वा
हा ॥ सर्वार्थ साधन स्वाहा ॥ यत्र मार्थ साधनीय स्वाहा ॥ सर्वमङ्गल दात्री य स्वाहा ॥ ऊहा वनिय स्वा
हा ॥ मन्त्र सिध स्वाहा ॥ महामन्त्र सिध स्वाहा ॥ मन्त्र सिध स्वाहा ॥ महामान सिध स्वाहा ॥ मूक स्वाहा
॥ विमूक स्वाहा ॥ माहनि स्वाहा ॥ विभाहनी स्वाहा ॥ अत्रु स्वाहा ॥ वित्रु स्वाहा ॥ अमल स्वाहा ॥

६४

विमल स्वाहा ॥ अमल सर्वधीय स्वाहा ॥ वमल वमल स्वाहा ॥ वमल धा य स्वाहा ॥ पूर्य पूर्य नरथः
स्वाहा ॥ ॐ अमल की वनी य स्वाहा ॥ वन्द्य वन्द्य य स्वाहा ॥ सूर्य सूर्य कान्त स्वाहा ॥ वमल वमल धा य
स्वाहा ॥ सर्वज्ञ यनाम्निका नक्र २ मां सर्वज्ञता नाथ स्वाहा ॥ मिलि २ स्वाहा ॥ रुद्र २ स्वाहा ॥ रूल २
स्वाहा ॥ निमि २ स्वाहा ॥ विदि २ स्वाहा ॥ हि क २ स्वाहा ॥ कल २ स्वाहा ॥ वन २ स्वाहा ॥ वन स्वाहा ॥ वन
२ स्वाहा ॥ नमः सर्ववृक्षानां स्वाहा ॥ नमः प्रत्येकवृक्षानां स्वाहा ॥ नमः अर्हकानां स्वाहा ॥ नमः म

कीययु मरुतानां स्वाहा ॥ नमः सर्ववृक्षवाधिसुखा नां स्वाहा ॥ नमः मूत्रागामिनां स्वाहा ॥ नमः सं
रुदागामिनां स्वाहा ॥ नमः आकाशमानां स्वाहा ॥ नमः संमगमानां स्वाहा ॥ नमः संमकुतियं
नानां स्वाहा ॥ नमः सुक्रधस्वाहा ॥ नमः ऋद्धाय स्वाहा ॥ नमः उध्दय स्वाहा ॥ नमः ऋगानां स्वाहा ॥ नमः
॥ नमः मूत्रय स्वाहा ॥ नमः वनूधाय स्वाहा ॥ नमः कुवलाय स्वाहा ॥ नमः यमाय स्वाहा ॥ नमः वे
प्रवक्ष्य स्वाहा ॥ नमः नागधियय स्वाहा ॥ धननाशय स्वाहा ॥ विनूदकाय स्वाहा ॥ विनूया

काय स्वाहा ॥ दवानां स्वाहा ॥ नागानां स्वाहा ॥ मूत्रवाधनां स्वाहा ॥ मन्त्रानां स्वाहा ॥ गन्धानां स्वाहा ॥
॥ गन्धर्वानां स्वाहा ॥ किन्नवानां स्वाहा ॥ महानगा नां स्वाहा ॥ यकानां स्वाहा ॥ गार्गानां स्वाहा ॥ रु
हानां स्वाहा ॥ पुमानां स्वाहा ॥ विभवानां स्वाहा ॥ कृष्णानां स्वाहा ॥ घूटनानां स्वाहा ॥ कटघूट
नानां स्वाहा ॥ रुद्धानां स्वाहा ॥ उत्साद्यानां स्वाहा ॥ द्यायानां स्वाहा ॥ अयस्मानां स्वाहा ॥ अस्त्र
कानां स्वाहा ॥ नूदानां स्वाहा ॥ नककानां स्वाहा ॥ यज्ञसूर्यानां स्वाहा ॥ धामिधिनानां स्वाहा ॥ ग्रहाना

स्वाहा॥अभिनां स्वाहा॥सिद्धवृक्षानां स्वाहा॥सिद्धिविधानां स्वाहा॥मोक्षविधेय स्वाहा॥गान्धर्वनियः
स्वाहा॥काकुलिय स्वाहा॥अभिनाय स्वाहा॥कुरुनिय स्वाहा॥सुहृन्निय स्वाहा॥वाय्वनिय स्वाः
हा॥दामिद्विय स्वाहा॥मत्तलिय स्वाहा॥कुरुसुवलय स्वाहा॥वभुलिय स्वाहा॥मारुक्त्रियः
नागदद्याय स्वाहा॥गवूठदद्याय स्वाहा॥मानसिय स्वाहा॥महामानसिय स्वाहा॥षडक
त्रिय स्वाहा॥मानिरुद्राय स्वाहा॥यूर्ध्वरुद्राय स्वाहा॥समनरुद्राय स्वाहा॥महामनरुद्राः

६३

य स्वाहा॥समयाय स्वाहा॥महाममयाय स्वाहा॥प्रत्यक्षिनाये स्वाहा॥धनविय स्वाहा॥धनवि
य स्वाहा॥दधुधनाय स्वाहा॥महादधुधनाय स्वाहा॥मूविनिन्दाय स्वाहा॥महामूविनिन्दायः
स्वाहा॥ऊयनिय स्वाहा॥भानिय स्वाहा॥मूहवक्रदाय स्वाहा॥महाधनधी स्वाहा॥मरुयदाः
नां स्वाहा॥महामरुयदानां स्वाहा॥मूयनाकिनाये स्वाहा॥सूवर्धवराय स्वाहा॥मयूयना
काय स्वाहा॥मूमाधिमहाप्रत्यक्षिनामहाविद्यानां स्वाहा॥महाप्रत्यक्षिनामहाविद्यामरु

यदा मम सर्वसत्त्वानां यदा यदा ४ कृत्वा कर्म साकाशाद्भक्तवत्ताया विद्यका ४ प्रथका हताः
उन्नाद्या ४ दृष्ट्या ४ अयत्नाया अस्मानकाः ४ प्रथ्या ४ उज्ज्वला गताः विधाहताः ४ सायाहताः ४ दृष्टुका
दृष्ट्या ४ प्रथ्या ४ दृष्ट्या ४ दृष्ट्या ४ अयत्नाया ४ हता सर्वकलाः ४ काहिका ४ याहका ४ हता
वर्धका ४ सहाहिका ४ अर्द्धमासिका मासिका देवमासिका अर्द्धदेवसिका मूर्द्धिका नित्यका
ला विषमकला हता कलाः ४ प्रथका ४ विषमकला मानूषला ॥ अमानूषकलाः ४ वारिका ४ योरिका

८०

का ४ रक्षका ४ सन्नियामिकाः ४ सर्वकलाभिः ४ वारिका मयनयन्तु ४ अर्द्धा विरुद्धकं अलावकं
अर्द्धभागं ॥ नाभाभागं ॥ मूर्ध्नाभागं ॥ कक्षभागं ॥ हृदयभागं ॥ गन्धगुहं ॥ गालगुहं ॥ कर्णगुहं ॥ हृदि
गुहं ॥ ममगुहं ॥ पार्वगुहं ॥ दृष्टगुहं ॥ उदरगुहं ॥ गुहगुहं ॥ शान्तिगुहं ॥ प्रकृतगुहं ॥ अंघ्रा
गुहं ॥ हस्तगुहं ॥ पादगुहं ॥ अंगगुहं ४ हता ४ सर्वपाया सर्वव्याधयाः स्वस्तिरुवक्तुम
मसर्वसत्त्वानां यदा यदा कृत्वा कर्म साकाशाद्भक्तवत्ताया विद्यका ४ प्रथका हताः
उन्नाद्या ४ दृष्ट्या ४ अयत्नाया अस्मानकाः ४ प्रथ्या ४ उज्ज्वला गताः विधाहताः ४ सायाहताः ४ दृष्टुका
दृष्ट्या ४ प्रथ्या ४ दृष्ट्या ४ दृष्ट्या ४ अयत्नाया ४ हता सर्वकलाः ४ काहिका ४ याहका ४ हता
वर्धका ४ सहाहिका ४ अर्द्धमासिका मासिका देवमासिका अर्द्धदेवसिका मूर्द्धिका नित्यका
ला विषमकला हता कलाः ४ प्रथका ४ विषमकला मानूषला ॥ अमानूषकलाः ४ वारिका ४ योरिका

या सक्तान्वयहानं ॥ अथ रुगवा नाह ॥ नृयस्या सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां नृयं स
मनूयम्भकि ॥ वदना सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां नृयं समनूयम्भकि ॥ संह सूरु कवा
धिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां नृयं समनूयम्भकि ॥ सत्त्वा सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां नृ
यं समनूयम्भकि ॥ विहान सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां नृयं समनूयम्भकि ॥ यक्ष सूरु
कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां नृयं समनूयम्भकि ॥ अक सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि

६६

नाया नृयं समनूयम्भकि ॥ घाटा सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां घाटा समनूयम्भकि ॥
किक्वाया सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां किक्वा समनूयम्भकि ॥ काय सूरु कवाधि
सत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां काय समनूयम्भकि ॥ मनः सा सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां म
नः समनूयम्भकि ॥ नृयस्या सूरु कवाधि महाप्रत्यक्षि वायां नृयं समनूयम्भकि ॥ गद सूरु क
वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वायां गद समनूयम्भकि ॥ गन्ध सूरु कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि वा

या गन्धन समनूयम्भकि॥ वसुधा सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियाया न संमनूयम्भकि॥ स्वर्ग
स्या सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियाया स्वर्ग समनूयम्भकि॥ धर्मो धा सुरूकवाधिसत्त्वा महा
युक्त्या क्रियाया धर्म समनूयम्भकि॥ वक्रविहानस्या सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियायां वक्र
विहान समनूयम्भकि॥ अक्रविहानस्या सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियायां अक्रविहान स
मनूयम्भकि॥ दानविहानस्या सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियायां दानविहान समनूयम्भ

६५

कि॥ क्रियाविहानं सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियायां क्रियाविहानं समनूयम्भकि॥ कायवि
हानस्यां सुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियायां कायविहानं समनूयम्भकि॥ मनाविहानस्यां स
ुरूकवाधिसत्त्वा महायुक्त्या क्रियायां मनाविहानं समनूयम्भकि॥ वक्र४ संस्पर्गस्यां सुरूकवाधिस
त्त्वा महायुक्त्या क्रियायां वक्र४ संस्पर्ग समनूयम्भकि॥ अक्रस्पर्गयुक्त्या यवना सुरूकवाधिसत्त्वा म
हायुक्त्या क्रियायां अक्रस्पर्गयुक्त्या यवना समनूयम्भकि॥ दान४ स्पर्गयुक्त्या यवना सुरूकवा

धिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या धर्मस्य यवदना समन्यगन्धिः॥ जिह्वा स्पर्शप्रत्यक्षवदना सूक्ष्मवा
धिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या जिह्वा स्पर्शप्रत्यक्षवदना समन्यगन्धिः॥ कायस्पर्शप्रत्यक्षवदना सूक्ष्म
रुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या कायस्पर्शप्रत्यक्षवदना समन्यगन्धिः॥ मनःस्पर्शप्रत्यक्षवदना सू
क्ष्मवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या मनःस्पर्शप्रत्यक्षवदना समन्यगन्धिः॥ एधिविधाका सूक्ष्म
रुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या एधिविधाका समन्यगन्धिः॥ आपाका सूक्ष्मवाधिसत्त्वा महा

५०

प्रत्यक्षिना या आपाका समन्यगन्धिः॥ रुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या रुक्वाधिसत्त्वा महा
प्रत्यक्षिना या वायुधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या वायुधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या आकाश
धिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या आकाशधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या विहानधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या
विहानधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या विहानधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या अविद्याया सूक्ष्मवाधिसत्त्वा महाप्र
त्यक्षिना या अविद्याया समन्यगन्धिः॥ सूक्ष्मवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिना या सूक्ष्मवाधिसत्त्वा महा

नृपयन्त्रि॥ विहानस्य सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां विहानसमनृपयन्त्रि॥ नामनृपयन्त्रि
रुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां नामनृपयन्त्रि॥ यजयन्त्रि सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि
नायां यजयन्त्रि समनृपयन्त्रि॥ सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां सूरुक्वाधिसत्त्वा
यन्त्रि॥ वदना सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां वदना समनृपयन्त्रि॥ रुक्वाधिसत्त्वा
महाप्रत्यक्षिनायां रुक्वाधिसत्त्वा समनृपयन्त्रि॥ उपादान सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां उपादान सम

६९

नृपयन्त्रि॥ रुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां रुक्वाधिसत्त्वा समनृपयन्त्रि॥ जात सूरुक्वाधिसत्त्वा म
हाप्रत्यक्षिनायां जात समनृपयन्त्रि॥ ज्ञान सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां ज्ञान स
मनृपयन्त्रि॥ दान सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां दान समनृपयन्त्रि॥ भाल सूरुक्वाधिसत्त्वा म
हाप्रत्यक्षिनायां भाल समनृपयन्त्रि॥ कान्ति सूरुक्वाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनायां कान्ति समनृपयन्त्रि॥

वीर्ययात्रमिकासूक्तवाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया वीर्ययात्रमिकाः समनूपयम्भकि ॥ अथानयात्रमि
 कासूक्तवाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया अथानयात्रमिकाः समनूपयम्भकि ॥ पुनराथानयात्रमिकासूक्तवा
 धिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया पुनराथानयात्रमिकाः समनूपयम्भकि ॥ अथानयात्रमिकासूक्तवाधिस
 त्त्वा महापुण्यक्रियाया अथानयात्रमिकाः समनूपयम्भकि ॥ वहिर्धर्मगुण्यकायां सूक्तवाधिसत्त्वा म
 हापुण्यक्रियाया वहिर्धर्मगुण्यकाः समनूपयम्भकि ॥ अथानयात्रमिकासूक्तवाधिसत्त्वा म

३२

हापुण्यक्रियाया अथानयात्रमिकासूक्तवाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया अथानयात्रमिकाः समनूपयम्भकि ॥ गुण्यकागुण्यकासूक्तमहावाधिसत्त्वाः
 महापुण्यक्रियाया गुण्यकागुण्यकासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया गुण्यकागुण्यकासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्य
 क्रियाया महागुण्यकासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया यत्रमार्थगुण्यकायासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया
 यत्रमार्थगुण्यकासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया संस्कृतगुण्यकायासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया संस्कृत
 गगुण्यकाः समनूपयम्भकि ॥ अथानयात्रमिकासूक्तमहावाधिसत्त्वा महापुण्यक्रियाया अथानयात्रमिकासूक्तमहावाधिसत्त्वा

२४

श्रुतानिः समन्ययम्॥ आर्याष्टाङ्गमार्गनिः सूरकवाधिसत्त्वामहाप्रत्यक्षिनाया आर्याष्टाङ्गमा
र्गनिः समन्ययम्कि॥ आर्यसत्यानिः सूरकवाधिसत्त्वामहाप्रत्यक्षिनाया आर्यसत्यानिः स
मन्ययम्कि॥ अमानिसूरकवाधिसत्त्वामहाप्रत्यक्षिनाया अमानिः समन्ययम्कि॥ अय
मानिः सूरकवाधिसत्त्वामहाप्रत्यक्षिनाया अपमानिः समन्ययम्कि॥ अनूयसमायर्थे
सूरकवाधिसत्त्वामहाप्रत्यक्षिनाया अनूयसमायर्थेऽ समन्ययम्कि॥ विभाक्तासूरकवा

धिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनाया विमाकाः समन्ययम्भक्तिः॥ वाक्का निःसूतकवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि
नाया वाक्का निःसमन्ययम्भक्तिः॥ अनूपर्वविहानसमाप्रत्यःसूतकवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षि
नाया अनूपर्वविहानसमाप्रत्यःसमन्ययम्भक्तिः॥ भूतकानिमित्ताप्रतिहिकविमाकमूत्वा निः
सूतकवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनाया भूतकानिमित्ताप्रतिहिकविमाकमूत्वा निःसमन्यय
म्भक्तिः॥ अहिहा सूतकवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनाया अहिहाः समन्ययम्भक्तिः॥ समाश्चः स

ॐ

सूतकवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनाया समाश्चः समन्ययम्भक्तिः॥ धानधी मूत्वा निःसूतकवाधिसत्त्वा
महाप्रत्यक्षिनाया धानधी मूत्वा निःसमन्ययम्भक्तिः॥ दशरथा गरुवलानिःसूतकवाधिसत्त्वा
महाप्रत्यक्षिनाया दशरथा गरुवलानिःसमन्ययम्भक्तिः॥ चत्वा निवेगानयानिःसूत
कवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनाया चत्वा निवेगानयानिःसमन्ययम्भक्तिः॥ वरसुः प्रतिसंविद
ःसूतकवाधिसत्त्वा महाप्रत्यक्षिनाया वरसुः प्रतिसंविदः समन्ययम्भक्तिः॥ महाकनूधा

सूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायामहाकनूसाऽसमन्यभक्तिः। अष्टादशवधिकासूरकवाधिसत्त्वम
 हाप्रत्यक्षिवायाअष्टादशवधिकाऽसमन्यभक्तिः॥ आकायकिल्लं सूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाः
 आकायकिल्लंऽसमन्यभक्तिः॥ सूरदागामिल्लं सूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाः सूरदागामि
 ल्लंऽसमन्यभक्तिः॥ अनागामिल्लं सूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाः अनागामिल्लंऽसमन्य
 भक्तिः॥ एतकवाधिऽसूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाः एतकवाधिऽसमन्यभक्तिः॥ मार्गकाः

५६

नरुकासूरकवाधिऽसूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाः मार्गकानरुकाऽसमन्यभक्तिः॥ सर्वाका
 नरुकासूरकवाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाऽसर्वाकानरुकाऽसमन्यभक्तिः॥ एवं सर्वधर्मानां सूरक
 वाधिसत्त्वमहाप्रत्यक्षिवायाः एवं सर्वधर्मानांऽसमन्यभक्तिः॥ इमां सर्वकथागतां क्रीडणीकां
 कथकानामायाजिकामहाप्रत्यक्षिवायां नूपादिऽसमेयाधिकावः॥ ॥ अथरगवत्पारु ॥
 वकाविधानकल्पकुवात्वास्यामनिनमानमऽयनवकाविधानमसर्वसिधिरुविद्योनि॥ यरुन

३१

अथ वकाचमहाकथा ॥ अन्य च वक्रविधाहनाः दवानागा महर्षिका ॥ वक्राकर्तुं कस्य मम स्मिन्मस्यः
निर्गमः ॥ अस्याः च वनमाकृष्टा विशा नालानना कनः निर्हया लानि सर्वकृत्य वसूनि न विवीकः ॥ इ
स्य प्रादुक्तमाथ न डयसर्गाः सदा नृणां ॥ व्याधिष्ठस्य महावागा यथा स्मना कथयन्त ॥ अन्य च वक्र
विधावागा गद्यनृणां विधिविका ॥ कथादा नृणां यवगंसकमानुषि प्रजा ॥ मानुषानां विनार्थः हिंसकाः
सदा नृणां ॥ सर्वकविप्रदस्य निवक्रायक महावलाः ॥ अन्यास्तु वक्रकुह्याया फा विमूयका ॥ यमग्नयः

का न धारम न नीम आशिय मालया आयु कस्य विषय न यत्कि नालिष नादयि ॥ यत्रि किशाय घना यत्कु स
 फरु मग उववा या वलिखि क मा रुध स जी व नि न सं ग य ॥ अथ य व न मा रुध क का व का वि धा न ४ स्त्रि
 या प्रा कि सर्व क सख जी व नि व प्प या ॥ मृष्ट स सि सह आ दि का ठि यू क ग कानि व ॥ म्ना य म्नि गा ध द वा नो स
 र्धं क य भा ग मा ॥ य का र्थ क स्य स त्व स्य पृष्ठ क ४ स म्प य स्त्रि क ॥ य त्वा व ला क या ला य व क या नि म हा व ल ॥ वि
 या कृ ग के सा र्धं न कां क र्त्तु नि त्प ग ॥ सा म य स र्ग ना सूर्य व का वि फू म ह म्भ व ॥ य स य मा नि रू द य व ल

५०

द वा म हा व ल ॥ यूर्ध्व रू ड म हा वी श हा नी नी ध स यूर्कि का ॥ या न्ध न या वि क र्थे व का र्त्तिक या ग र ध म्भ व ॥
 श्री न पि म हा द वी वेश व ध स म्भ व नी ॥ सं खि नी यू य द नि व क र्थे वी क ज टा पि व ॥ ध न्या उ का म हा ला ग
 न का क र्त्तु नि त्प सः ॥ य र्धे नां यू क र्त्तु नि ग र्त्तु म्भ व वि व र्ध नी व क यं म ह नि क स्य ज्ञा व की वं र वि षा नि
 न वा नां ज लै य द नि त्प यूर्ध्वः सं ग म र्त्तु न वा ॥ अ न या व न दा ला नि द व का ध र्म नि धि का ॥ अथ या प वि ना सः
 कु लि ख ना द व म्भ व कः ॥ क था ग क वि ला क कृ वा धि स त्वा म ह र्त्तु का ॥ य स य व र्ध क र स्य यू य मा यूर्ध्व वः

ईश्वरधनधानसमृद्धिश्चरुविद्यानि न संगमयः॥ सुखं स्वपुत्रिभक्षवि सुखं वपुः किं वृद्धा ॥ अथ ॥
 सर्वसुखं सर्वरुक्मणो वपि ॥ संशयमवर्तमानस्य कथा सुखं वपुः किं वृद्धा ॥ विद्यायाश्च मानायाश्चियं
 न क्लामनूना ॥ सुखं साधय कतिपय विद्यया नरु विद्यानि ॥ सिद्धा न सर्वकल्याणप्रतिष्ठः सर्वकर्मः
 मर्त्येऽपि यथा समयस्तथा सुखं सर्वरुक्मणो वपि ॥ वेस्वामिका न सर्वनिजिना नानुदधध्वरधः ॥ सर्वसुखं
 लसंपूर्णं सर्वसिद्धिमाननथः ॥ आत्मा लिखितमात्रायां सर्वसुखं समृद्धिनि ॥ सुखं कावक्रियाः

५५

कृत्वा सुखं स्वर्गपनायन ॥ विवादा कवहं वेव विग्रहपयमदावृद्धा ॥ सर्वरुक्मणो वपि ॥
 नयथा ॥ निरुक्ता किं सना रुक्मिणा मोक्षमोक्षमंगयः ॥ राजानां वसंगमस्य गान् ॥ युवकने ॥ सह
 ॥ सामान्यश्चरुवपि सुखं साधु रिक्तकमन्मके ॥ सर्वेषां वपि यथा रुक्मिणा दवाय वसुमानुषा ॥ वक्रां
 स्य कवि विद्वानाको न संगमय ॥ वदु वदु यथा रयध हावय यमद्या टकं ॥ मानानां समुदाय
 विषा यनूव सर्वरुक्मणो वपि ॥ वक्रार्थं हावय द्रुयक वस्ति समाकूल ॥ वक्रधरु मिवाटवपाका वपि

कृशयससनिहं॥ पाखोकाघंविहावित्वा॥ व्यावजंविहावयत्॥ ॐ मांसर्वकथागकाषीषमीकाः
 कयजानामायनाजिकामहाप्रत्यक्षिनायाभूतिसमयाधिकाव॥ ॥ अथमाहस्वहावत्यंयमात्रिन
 किहीयध॥ सर्ववृद्धमयंगान्कायवजंनमस्तु॥ विगुनवजस्वहावस्वयमात्रिनकिहीय
 धः॥ वाकजतप्रतिकाधंवल्वजंनमस्तु॥ वागवजस्वहावस्वनागधर्मकवयुहः॥ सर्वधा
 घवभायावद्विकवजंनमस्तु॥ ॐ व्यावजस्वहावस्वयमात्रिसर्वकर्मका॥ कायवजंयति

१०१

कागंखजवजंनमस्तु॥ सर्ववृद्धस्वहावस्वसर्ववृद्धकसंग्रहं॥ सर्ववृद्धववायायमहुलर्गनम
 स्तु॥ वजवज॥ वजप्रकः॥ वजघ्राधः॥ वजजिकाः॥ वजकायः॥ वजवाकः॥ वजविरु॥
 ॐ किमर्वकथागकाषीषमीकाकयजानामायनाजिकामहाप्रत्यक्षिनायांयक्रनायधिसूतस
 मयाधिकाव॥ ॥ अथकसंयवक्रमियमात्रिघानमहुलं॥ गीमात्रिप्रतिकामंसर्वकामा
 र्थभाधकं॥ नवनसूनिचूकनसमाननवदानुधाः॥ मरुदमरुयत्याहयमघ्नसहिमहुलं॥

१०२

[illegible]

नः सकसफिकसधसंयिनायां विविक्तयकः॥ एकमधुलमधसंरावयदागवजिना॥ कर्मसमुः
 लमधसंरावयलकर्मसमुः॥ गान्तिकमाहवजेनुयोष्टिकयिपुनकथा॥ वध्यावेनागवजधकर्मवज
 धसर्वकथा॥ नमेवंनकयावंचनिहरेगेवर्तिकासुथा॥ ममभानकजलंप्रात्यकर्मवजपुथागम॥ अजुनं १०३
 लावयपयजुनायाकरथेवच॥ अजनाजनसिच॥ स्याकर्मजागपुथागम॥ कंकुमंगकवकन
 पादभयसुसाधक॥ कर्मवजपुथागमपादभयनसिचि॥ यंवासुनसमादाययंयमांससमन्वि

क॥ किलाहवस्त्रिकंयमं कर्मथा॥ गनसिचि॥ कानंलाहमयंखजं कर्मथा॥ गधसाधयक॥ कर्मव
 ऊपुथा॥ गधकर्मखजपुसिचि॥ ॥ किं सर्वकथा गतासीयमीनाकयजानामायनाजिकोमहाप
 त्यजिनायां कर्मथा॥ गधिकाव॥ ॥ अथरुगवान्सर्वकथा गतः॥ रुगवक्तं महावजधवनामाः
 ॥ धनिकवक्तं॥ कथं सत्वायवर्तककर्मरुदयुरुदकः॥ कथयस्वमहावजगुनानुहानसागव॥ अ
 थवजधवनामा सर्वकर्मपुसाधक॥ सर्वदशयविकिन्सासा॥ दंववमववी॥ यमायजानि

महान् महान् विद्यति॥ मुनां वग्ध्यक रूपां वक्तार्यथेव च॥ गतिकलावनाष्टक हर्षं
सत्त्ववक्त्रा॥ वक्रद्वयमहिलिखनमानमाविदर्हितां॥ कालगुणादिहितनस्नावधयसंप्रदा॥ घृ
तमधूमधयकिष्णमुका मूर्द्धधवस्तथा॥ तिस्रश्चमुकपूष्पाकुः शूर्वेथत्यूर्वा मास्रवं॥ यमान्न
कं यन्त्रका काह्व्यात्मानं युनंत्यथ॥ चन्द्रमधुलमान्नसाध्वंदृष्टा विविक्तयत्॥ गीतकवरे
मुवडाहः पंचामृतार्तिप्रतिकैः॥ सैश्वर्यकसूं वृक्षैः न दृष्टा जयमानहृत्॥ उँ कोँ कुँ ऽ वि क्र

काननैरुह्य ॥ उँ नमो देवदत्तायः ॥ गान्धिकुब्जस्वाहा ॥ यन्मृगानां गान्धिकल्लखां कुंकुमैर्धृष्टिः ॥
 कथा ॥ वक्राद्यैरुक्ताभीष्टैः स्वाहानामविदर्हिणं ॥ सा अस्यानाममादाय ग्राह्यं रुद्रघूनिक्षिपक ॥
 सनायसंपूठस्तु ययीकस्तु रुद्रवष्टु यक ॥ कीसं अथीकयूष्मन्तु जूञ्चयद्रुद्रासुखं ॥ यीकवर्धयेः
 मन्त्रैः ॥ आत्मानं वलं च यक ॥ सा अं सूर्यीकवन्द्यं यीककम् ॥ सुसिद्धयक ॥ अग्निधकावयितु
 वयस्त्रिकर्तुं सुबंजयक ॥ उँ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 वयस्त्रिकर्तुं सुबंजयक ॥ उँ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

उवाच ददरुस्य पूष्टिं कुन्त्या हा ॥ भगवन् वलक वापि स्वयं ह लिख कर्ण्य ॥ ददुश्च यं समा लिख्य न
कया न क मिययाः ऊं का न कीं ॥ का न धना मं ने व वि द हि तं ॥ या धि नां य म हा रु वा सं प ट स्त य पू जः
य ॥ न क सु रु ध वा ह स्य न क पू षा न पू ज य ॥ सं धा र्क सं नि हं व क आ त्मा नं रु वि विं ग य ॥ द क्षि ॥ १०५ ॥
ना हि मू षा या गी मा ह ध म धु ला शि या ॥ पी कं सा ध वि विं हा सू आ जा नं य र्व न न्य स ॥ वि ष व रु स
मा जां कं मा ह ड म धु ना ध रः ॥ म धु ला दि न री र्धा ने ॥ य ल पा न न सं नि हे ॥ आ जां न हा व य सा ध य ॥

व का न य ॥ ॐ कीं ॥ ॐ वि क मा न न ईं रु द्वा हा ॥ लं द व द रु स्य नं म् म् य ईं रु द्वा हा ॥ ॐ
ह्य ह र ग वा न् र्व क थं ग ना सी य हा व ना ॥ वि द ह्य सा ध ना मा नि क ना म रुं स नं ज य ॥ लं द
व द रु स्य य था पा व का र्थं नि वा न य ना नू य कं व द ना य रु द न स्य वा क रु म् न कू न लं ईं रु द्वा हा ॥ अ
कं क स गु फ न रू दं का र्थं य र्था दि तं ॥ दि न म क न सि धि स्या क म हा य मा वि था रा क ॥ भ ग व न क र्ण्य क व
क व ये वे व लि ख्य व नी ॥ या कि का न व र ध वा पि वि ध ध नि व क ने व ॥ वि क रु कं क रु के लं भ ग नां ग व म व

वाधुनयननिर्यासेधुवीजेकथेवव॥ गजनीनकमादायविहकस्यवसनवा॥ उधनमरुका
 गकवधुनदहिकांजनं॥ वरुक्रियकलखिन्यावरुदंभांलिखिचकिमध्याकआधचिरुनदधुनांवर्द्ध
 हकुनां॥ नामसत्त्वविद्यादसुंकात्रधविंदरयका॥ दक्षिधशिमुखायागीआत्मानंयमघाटकां॥
 काधनूयंमहावधुंखधुमधुविरुषिकं॥ महिषसंललजिह्वाविषडदयहयानका॥ उदाशई
 यूतंकभंवकुमासवनथा॥ दक्षिधनमहावजंखकुनेवधिनियकां॥ हनीचकर्तिकाहसं॥ उदा

१०५

नीवामकालिखकुं॥ वक्रनेवमहायमंकायावंवामकंमनः॥ मूलमूखंमहागुजदक्षिधवन्दमः
 पुरं वामनकमहायाकंवजारुवधरुषिकं॥ वामकयमहाविवनामात्रयत्त्वकूलाधियं॥ यहा
 विंदयदससं॥ सूर्यमधुलडईक॥ विहदंछुकलालासंकल्पकागातिमल्लिरं॥ उवंगआत्मानः
 संलकसाध्ववेयवकान्पसक॥ मलिवंजुर्जलशरी॥ दूष्टमाकुंशयानिनं॥ विश्वसुवयमानरु॥
 खिनकायपुधान्विकं॥ गहमालाहकासंवगमुधजुर्जलीकमं॥ उयडुगंभीकवाकनवहसधस

सधिकां महीषमववाधुधकूर्कवेदीर्घकुधुकेषां खयमानं महादृष्टेवृद्धसेन्यविनाशनं ॥ अन्तका
दलमभ्यस्तं कधुकेगायुविकं ॥ हडिनीगडयदाकानं खडुखडुं कर्तं कथा ॥ मिथमीसूक्तं ध्याया
डाजिकावत्रधयिकं ॥ श्रीकान्तसूत्रं ध्यायाकस्यदहस्यलकध ॥ कवचं स्मृत्यनस्यलावयन् नृपस्यदह ॥ १०० ॥
व ॥ आत्मादहाकवकारधेऽयमसायात्समूर्तिरिति ॥ ध्यात्यन्तलावयन् कथयितुं नमकमर्ककं ॥ कस्याऽयः
कुयमभ्यायादधुहस्तं महावलं ॥ ध्यादिकं नमदधुनडधुं गडुविविकयन् ॥ नस्याकुनालमागुधः

गद्यागद्युतिधयं ॥ यानावक्रयकनागेऽयस्यार्थिनिधीतिकं ॥ एवंविवित्यसाध्याऽकनूधाद्य
ष्टयनसा ॥ व्यक्तिनाययकिसंसावावृद्धकडवृजायकऽअहादिमावधंताममावधंनवमावधं ॥ पायः
त्यमृयागयसाग ॥ नात्रिकानयमात्रिकऽकल्पायायमहसाधिजुवीयादिधूसंवनक ॥ अहावृद्धस्य
महास्यमात्रिकावाधिसाम्याग ॥ हयसीकनूधाकल्पासत्त्वधामिलुविकयन् ॥ अहाकल्पावयं दिव्यं
कयाहीनानहिद्यमि ॥ अकिमर्वकथागकाष्टीयगीगागयकानामयत्राजिकामहायत्यमिनायांकायदा

कविरुक्ताधिकारः॥ अथ वक्रयं लिख्य रूपा बधविदर्शयं॥ साधु सनाममाद्ययक
 पाल संकटनसक॥ नीलसूत्रधवष्टित्वा लभान युलिरानयन॥ यमानक समालया साभंवेयुनः
 कान्तसंगु॥ अन्वसहीषमानुद्धो गाधम सुयानि नो॥ निमिरुकाध संहाक दया यकं विचिन्तय
 क॥ उलो रुयुधमानो रुकाध विरु नवक सा॥ ला विरवा वभाका हा ला वयक यमालरु॥ उं कीं ४ धीं
 ४ विरु कानन नं रुं रुं दवदरु यरु दकन सह विदय यं रुं रुं स्था हा॥ अलख दय वका र्वा विधि नाने

१०८

वयुर्ववक॥ रुं रुं का व विदर्शयक पाल संकटनसक॥ रुं रुं सूत्रधवष्टित्वा यिरं वन निखानयन॥ यमानकः
 कथा गमादायनक॥ साभं विहा वयक॥ मम सर्व सत्वाना च वक्रां कूर्वन्तु कूर्वन्तु वयं गं यं कुं गमदा
 वक्रं॥ मम नायन यन्तु॥ रुं रुं यन का उ जो कि नी कला दधु का वक्र धु कि नी मकष्ट क यिरु क पी ह याः
 मारु गधु ल न का वे स र्पा ल ह लिं ग सा घ स्या ग का ग मू श्रु ग ल विष या ग अग्नि उ द क मा ल क ल रुः
 वे वि का ना न अ का य म ल य ल मू क रुं ला क वि वि क स र्प न कू ल सिं ह या धु म क क नू क रुं मू क रुं

हिरण्यकेशनावधयसयूठ॥आर्यमात्रिकसंयुक्तवक्तृवृद्धवष्टयक॥वर्यभद्रकयूषाथय
विमात्रिमृगसंस्थिता॥वक्तृवृद्धमहाकालाशालानयमद्याटक॥वेकसूर्यसमावृष्टसाध्यं
वेवविनिक्तयक॥स्वकायनिगतावक्तृसयूविनक्तृमात्रिक॥साध्यमाकर्षयंदष्टयूक्तमात्रिकसूत्रं
कथक॥पूर्वकायकैरुष्टः॥दंकर्माप्रसाधक॥कंसाध्यविद्वलीरुक्तंयादथापत्रिककथा॥विद्व
सुंडर्भकगवविक्तयकयसालरुक्त॥साध्ययुक्तनगद्युक्तिकत्मात्रिकययत्नक॥द्युतादिनहिकं

त्वानिर्द्धं गंवादिना नव॥ ॐ ह्रीं ४ ह्रीं ४ विष्णु कानन नरुं रुद्र हा २ द व द रु स्य य रु द कं गान्नि क नृ हा ४ स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं सर्वं गथा गंवादी वनी का क य काना मा य ना कि को महा प्र स्यं कि ना यां व कान नृ वी धिका नः ॥
 ॥ अथ मनु स्या वस्य व कानि सर्वं रुद्र वलि रुद्र या ॥ उच्चा निरु महा मं रु सर्वं रुद्र य क म्य नं ॥ ॐ उ
 य ह्रीं ४ य मा य ह्रीं ४ व नृ धा य वि ४ कृ व ना य ह्रीं ४ अ रुद्र य रु ४ नं स ह्य नः वा य व नः ॥ ॐ ग ना य ह्रीं ४
 व द्वा य ह्रीं ४ अ रुद्र य रुद्र व रुद्र य रुद्र ॥ व म वि वि रुद्र स्वाहा ॥ सर्वं रुद्र काना हा ह्रीं ४ रुद्र रुद्र रुद्र स्वाहा ॥

दवमापीधयथागीहाहाकानंयूनस्तनम्॥कृत्वासल्लिकारिक्तामूशेद्यादगयादमाक॥सल्लिख्य
 विधिनापाह्यसमयाधिसर्वतः॥न्यसेमजाधिसिद्धिनिष्काशकंवादादमदुकी॥सिद्धिगले
 घनिगघकेलाकसुवनावनं॥यमनाजासदाभयमदावनधयादयः॥यदयानिनकंयायकय
 कयचानिनामय॥यमध्वकन्यसयुर्वदकिरधमंरुधाषकं॥सकानयसिमलखाडरुनदकधाः
 वनंसाधस्यनाममादायगूयविदिगिधनयक॥इत्याविनिगमंरुत्वासर्वकार्यानि साधयत्॥

१११

यच्चसमादानूनयानिनरुत्वादिवाक्यम्॥वाममात्रिहसंलिख्यसर्वथाययसाधन॥हमीयकाशक
 पूनरुः॥प्रकाशककष्टकलिखत्॥उंङो॥२॥३॥विष्णुकानरुंरुटस्वाहा॥सूकंकून्॥मात्रय॥उच्चा
 टयवगीकून्॥विषययः॥गोक्तिकून्॥रुत्वावमादिकर्मांनेनूयनः॥प्रमाधवादिमाकात्रः
 अन्तवायटुंरुट॥कानाकयून्विज्ञानिगान्तिपूष्टिवगाकृति॥रुत्सर्वमथागकाकीयः
 नीकाकयकात्रासाधनाजिनामहाभिनायायकावनाकधात्रासाधिकानः॥॥रुगवाह

ॐ

सर्वकथागंगा श्रीमहाविद्याध्वजकुमाहिनगणाः यकवित्पुथिर्वीवनाः ॥ स्तवनाः ॥ ऊलवनाः ॥
 ॥ दवाः ॥ नागाः ॥ असुराः ॥ मनुजाः ॥ गन्धर्वाः ॥ किन्नराः ॥ महाप्रगाः ॥ नाकसाः ॥
 यकाः ॥ यमाः ॥ यिमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥ यमाः ॥
 मूर्धनि ॥ अस्त्रकाः ॥ सिद्धिविद्याधनवाजातवेनेवासिकायकितवसुकि ॥ ॐ श्रीसर्वग ॥
 गंगा श्रीमहाविद्याध्वजकुमाहिनगणाः यकवित्पुथिर्वीवनाः ॥ स्तवनाः ॥ ऊलवनाः ॥

११३

मूषंका मरू॥ दवावा दवीवा दवल्लाकनवा दवग्रहनवा दारगवा नागीवा नागल्लाकनवा दैव
ग्रहनवा॥ यक्रावा यक्रधीवा यक्रल्लाकनवा यक्रग्रहनवाः गन्धवावा गन्धवीवा गन्धवल्लाकनवा गन्ध
वग्रहनवा॥ अमूषावा अमूषीवा अमूषल्लाकनवा अमूषग्रहधवा॥ मन्कावा मन्कीवा
मन्कल्लाकनवा मन्कग्रहनवा॥ गमूठावा गमूठीवा गमूठल्लाकनवा गमूठग्रहनवा
किन्नावा किन्नीवा किन्नल्लाकनवा किन्नग्रहधवा॥ महापरावा महापरीवाः

पुथा गक॥ किमृवा घकुजांलाकां सनस्वकि लावयकुमी॥ यमहस्तधनं सोमं यहावर्धनहकव॥ कि
 मृवा घकुजां रवर्वा मल्का धीत्यनसनीतां॥ रगोनी पुलावयत्याहा गुजा कृष्टिं पुथा गक॥ वकुं यः
 सादिंकत्वा ॥ दं मनुं मनुं सनका॥ कुं धाकु कमहा नकं कृष्णं कनाकु संभयः॥ उं सर्वतथा गका ॥ ११४
 घमी नाकु पजा ना मा यजि ना म हो पुत्या कि ना मा न क र्ध ध वज ना म स मा धिः स म य य मं वा ना
 हि मनु मूदा हा न॥ उं वज धान सुधा र ध वज ना म की ह न २ स म न २ कुं धाकु कमहा म य मा ज्ञ

कर्ध यज॥ हस्तमालां कुलाल सघटिका कृत्वा कुसुं ह नां॥ आ धा ने वेलिका गा रवा रुपा मरु म
 दास्तनक॥ जू स मनु स मा हा त्प द गि रं वे स य र्क नं॥ रधे र्य माल व य त्प न म दी ना कृष्टिं ४ पु
 या गतिं॥ अथ वरवल र ग वा न्त र्व क था ग का श्री घ म ह य त्या कि ना ना म स मा धि स मा य य क व ज
 सनस्वकी मनु मूदा हा न॥ उं धि वृ २ य हा व र्ध नी॥ क ल २ म धा व र्ध नी धि नि २ म धा व र्ध नी ला
 ह॥ ग ही ला प ति य य दं या व त्प र्ध मा सि रः॥ अ सं क र्म क र्कु मा न य या व य आ नू सा न क थ॥ ह न

九九九

या अथ सर्वकथा गंगा श्री षष्ठी नाकु यजुना मा यना जिना महायत्यजि नाता मसधिसमा यथ दं पन
माहिषक समयं स्वकाय वाक कि रुव ऊत्थानि धानया मासा ओद्भव नमान्दान कं यानि जात कं क माल
कं ॥ कार्त्तिकान्त मालां वदत्संग द्वाय निष्ठि क ॥ के धा कुक महारुद्रः सर्ववृद्ध नमस्कृतं ॥ माना द्वाः
ऊयना गृह्य कर्म स्वकु निवाधनं ॥ यहा याय स्वाव कुव ऊद्य द्वा व सिद्ध यक ॥ गेहा तत्र त्सं रक्क गु
नृनिष्ठ्य त्संग हं ॥ नृद क पाय नल कुद ह व ऊ य सा ध कं ॥ यी न गां माने गां वा लिह क त्वं वत्स सर्व द ॥ मत्सं

स्वनेन हा कि या थी य मा प्रिय सिद्ध यम् ॥ सोष्ट वं कू नू क विरुं व क मि या महात्मन ॥ ॐ मि सर्व कथा गता श्री
 घणी का गु य काना मा य ना कि नाम हा प्र ल्य कि ना या मा न क र्ध धा धि का नः ॥ ॥ र ग वा ना ह ॥ अथ व क ध
 आ वा जान ना व क य था ग क ॥ विद्या वि ना य का इ स्म नि रु काना य वा व ती क ॥ अहं स्व क ध ना वा जान ना व क ॥ ११६
 पु था ग क ॥ ए व क ना दि क व यू ष्या स्म न या मि की का प जां ॥ स्वां द ती मा कि रु को नि सर्व वृ द्धान का पि नं ॥ य म
 प्रा म धु ला वा र्था म धु ल श या म् अ हं ॥ का मि क न मू र्खं त द्वा म धु ला गा न दान क ॥ क स्त्वं हा ॐ मि क या त्स्व र

॥ अहं महा सूर्य ॥ क मि का त्वं न द त्वा यार्थ य त्नु न व स धी ॥ अ हि ध का र्थ मा ह क्क कि न र्जी यी न प्रार्थ य न्
 ॥ यथा वृ द्ध महा ध र्म त कू म स्त्वा कि ध क क ॥ म मा पि कान ना र्था य व लं वा म पु य द्ध ॥ गी त वा यं क था घू क म
 य पा शं क ल्पे व व ॥ द क य गो व वा द्धि ष्य म्भु किं वा क क का न य ॥ अथ व क ध ना वा जान ना व क म लु म्दा ह न क ॥
 गू न्वा ना न व क स्व हा र्त्स का हं ॥ ॐ सर्व कथा गता श्री घस्व हा वा त्म का हं ॥ आ नि क गान क विरु न यो षि क
 पू ष्ठ व क स ॥ व म्भ वा ल ध विरु न उ दि र ग न कु ४ मा न ॥ ॥ आ नि क म धु ला का नं वा क का न लु यो षि क ॥

कणाकवाईवालाव्यं स्वधकुमिवमात्राध॥ हस्तायामं वष्टुकोविहसं योष्टिककथा॥ यथा योष्टिकथा वः
 म् प्रकियसमानिकं हामं योष्टिकपूर्वमासिक॥ अग्निवाववकुदभां अष्टस्यां अष्टकर्ममा॥ अष्टिस
 र्वकथागमाष्टिषमीमाकपज्ञानासायवाजिनामहाप्रत्यकिनायां हामाधिकानः॥ ॥ अथ समुद्रमृ ११०
 रिकां गृह्यतागमककुकात्रयम्॥ रूकानंददयन्यासां १४४॥ दिमनुमाऊयम्॥ अथाना वृष्टिसमयः
 श्युक्तजायनयाटयम्॥ कृष्णसूर्यसमासांतिनिस्वपुष्टमिष्टयम्॥ कनेववर्हिकां कृत्वा समुद्रयुक्ति

पद्धति॥ अयमांकुक्तयनडन्मिस्मन्मरुमं॥ वष्टुवीरुमं गृह्यमायककुलमिष्टिमां अष्टलकयुक्तयन
 ॥ हामदवकुदम्पम्॥ अङ्गनममानस्ययुक्तिकां कानयद्धि॥ उन्मरुप्रसनयनायुक्तमाऊदकवाक॥ व
 त्वावलकजायनसिद्धर्थविक्रमं वये॥ सफकाष्टयनं कार्यजीवनवनसंगय॥ कश्चनसमृद्धं गृह्यल
 क्मनुस्यजाययम्॥ निनयसार्यननेवनिनमनंतिनस्यकि॥ यथा योष्टिकथा वस्यमानाधतिगदंगुलं
 ॥ हस्ताईवधयष्टुको हस्ताकुनुपोष्टिक॥ सफाहिमलिकं कृत्वा हस्तमर्दयष्टिगं १४४ गानन

हृदयनिनयकनाकुसुमसंभयः॥ वसुधैवकुतुमाननविकिरुग्धतकलादाः॥ यमसात्रिपुत्रिकुर्याद्विह
रुक्रमयवकिंक॥ दकिरधनमहावकुंअसुवंहमीयगथा॥ गुकवर्धमहाहीमंकनइष्टानिकुन
नं॥ पुकिदिनवलिरद्यासुंवमासासुकनव॥ निहयत्याथययगीममगकुनिकुनयत॥ ॐ ह्य
सुसमानाकुंधपुसुधयियनविपू॥ अथनागिताहाकिःअस्मर्यादिसमाकुला॥ सुमावेवावन
गसमानपाठिपुपुनयत॥ पुपुनयलकुजायधनिहाहावकिपुवत॥ ॐ निसर्वतथागकाहीवमी

११६

कारपुतातासायनाजिनामहापुलंकिनायांहीमनासाधिकावः॥ ॥ अथरसंयवकामिमहानागा
धिसाधनं सर्वनागाकनंदिव्यंतानाकनंदिव्यंतानाकर्मपुसाधकं॥ वकावलंविगंगरुअकुनिर्मा
वकनंशुतं॥ अवमर्यास्तायथरुसंउरुऊयवकि॥ अहासंउसुसामर्थनादमवकिसुयकः॥ नागा
दियागयूकननरुगवंपुयलन॥ यथमायकथागीप्रकसंवपुयदुकि॥ कलागसुकंहीनव्यायु
स्यापिरुथायनं॥ अकसमर्कटस्यापिआनास्यापिविगयकः॥ विषनाजिकाववधं॥ चिकुरु

अनं तथा ॥ अकस्मत्प्रयति मायमानधानवृषिनी ॥ कंनसं पार्थशाशागीऊयकीं ॥ ^{द्या}द्यादिम
कुं ॥ अमकीमययहं कि ॥ नागादिवागिकं स्वयं नीयकदकिधादिगं ॥ साधकस्य कवयी काऊदि
यागयलावयन ॥ डिमूखं षड्कुं हीमं मूकं वं लावयद्वनी ॥ उडनीलपारिकागं हसका मूकलं
नमरु ॥ डिमूखं षड्कुं ऊर्ध्वं दधुहसुहया वहं ॥ दधुपा (धो) न स्याह हयस्यापि हयं कनं ॥
डिमूखं षड्कुं कूलमहानकं हयानकं ॥ पमाख्यां लावयत्याह हसुनकसना नहं ॥ डिमूखं षः

११८

कुं ॥ मंखं ज्ञायुयलावयन ॥ हसुखं यलावित्वा सर्वकर्मकना हवक ॥ तालि कुं प्रलावि
लासुलसंयलावयन ॥ कर्मानुस्संथागा महानुस्सकिलावना ॥ महानुस्सकिमानवायीलुना
नूस्सकिलावना ॥ यिगुनानूस्सकि संथागाडागा नूस्सकि लावना ॥ नागानूस्सकिथारानुस्सयास्य
संसावद्वनी ॥ सूर्यशमक्यायं कूलमद्यापतिपनी ॥ सूर्यमलुलमध्वसंवरुकाधं विहावः
यन ॥ स्वहमलमध्वसंवरुद्वीविहावयन ॥ निसर्वकथागका श्रीयगीकारयजाना मापना

जिह्वा महापुण्यक्रियायां प्रथमा धनाधिकान्तरः ॥ **॥** हगवानाह ॥ सर्वकथागता ह्येव यो लक्ष्य
मूलमं ॥ पुण्यक्रियादिनृपस्य कायवाकविरुसिद्धयः ॥ महाकविप्रदं भव्यं नृपस्य सत्त्वमूलमं
सर्वनाहं वधं कृत्वा अथावज्जुक्तुं नयत् ॥ कथं कुपि ज्ञानं कार्यसिद्धयं विभक्तं ॥ गीलकं पा
लसं वष्टुभागे पि नृपस्य नयत् ॥ **॥** ४४ ॥ अदिमं नृपस्य अथावज्जुक्तुं नयत् ॥ सिद्धतादं नृपस्य का
र्यं यमा निवर्तयामास ॥ किञ्चिन्मोमर्थमाह्वयं कीडयामास ॥ तद्वत्तु हगं कार्यमाधः

१२०

नं ॥ धनुर्वीथिं नृपस्य दृष्टुं नयत् ॥ प्रथमा धनाधिकान्तरः ॥ **॥** श्रीनाथस्यैकविरुतमहासत्त्वमूलमं ॥ महापुण्यक्रिया
नृपाकाम्यं नृपस्य सर्वथापि नाह ॥ **॥** सिद्धवद्विषयं नृपस्य सर्वकामार्थसाधकः ॥ यत्तु सत्त्वमूलमं नृपस्य
वाहापसाधकः ॥ प्रकाशं नृपस्य महासत्त्वमूलमं नृपस्य विनिर्दिष्टं ॥ **॥** ४४ ॥ काव्यं नृपस्य सत्त्वमूलमं नृपस्य
लावयत् ॥ वज्रमधुमानं नृपस्य सहिषासनं लावना ॥ यत्तु चिद्धविधियं नृपस्य नयत् ॥ **॥** ४४ ॥
ज्ञानं लावयत् ॥ नृपस्य सत्त्वमूलमं नृपस्य अथावज्जुक्तुं नयत् ॥ यत्तु सत्त्वमूलमं नृपस्य विनिर्दिष्टं ॥ **॥** ४४ ॥

नमो महासक्तं महासहिष्यवाहनं ॥ हृज्जीलकसंयुक्तं तन्मधुनिरुविग्रहं ॥ सुमन्यवर्वाकुरु
 समाकान्तनसाकनं ॥ अथास्यासाधनं वक्रकाटिवाहाः प्रसाधकं ॥ विक्रान्तनमहासंक्रुद्धका
 नसक्तुविक्रुः ॥ ॐ विक्रान्तनाहृहाहिहीकुरुहहेहाहोहं ॥ ४ स्वाहा ॥ समयसाधनं वक्रस
 र्वकार्यप्रसिद्धयक ॥ मनुखिन्नहकावतिनवयमइल्लरु ॥ महासांमहयदेवगर्जवापिदिल
 पकः ॥ ॥ सा नृपकृकृटं देवखवोष्टं काष्टमवव ॥ महाहेलनवास्तुनिनिमिप्रधपाटय ॥ व

१२९

समाधजगत्सर्वप्रस्थासंजनमाकृतलाचनासिंधूवानं च विनयकं रथेव वं ॥ ॐ वर्ध समाधनक
 नकयुनसक्तु ॥ अत्रनाईकिरुंगां कुं डे धाकुरुं समाप्रयक ॥ विषल्लं रथा कष्टं नमकुर्वल्लं
 नरु ॥ महासुक्तुयाकवमहावजासुक्तं रथा ॥ १ कथागवने ॥ २ स्त्रयंकुसुसयाकव ॥ ३
 निसर्वरथागकाष्टीनाकुपकानामाघनाजिकामहाप्रत्यकिनायावया समयसाधनानामाः
 धिकान ॥ ॥ अथतगावात्सर्वरथागकाष्टीमहापूजसमयमहावर्तिकासमाधिसमायः

युमहापुत्रिना समाधिं समा यद्यदंयूजागीतामृदानया मास॥ उं सर्वतथा गका श्री यजा यल्ल
शरुमं॥ यनजा ययथा रगभरुयनी सिद्धिमा प्रयात॥ न कृतं न विनं वी कंतवदी र्द्यन कृतं॥ न कि
चिद्दुयकमं कृत यमा ना न रसा रुमं॥ सहिषमानूषं दिदयं रगा नूयं वादिभवव॥ खनाष्ट्रभाः
रुमगकजा यमा ना पुमा धनमा सिमा सिव ईभा॥ यथमा सनवयथरु॥ यथरु मरु समायू
कं जा य सिद्धि कनं यनं॥ पुनियुक्तिगुलिकां यागीयमा निरुवयवृद्ध॥ अथमानूषं मं शुं

१२२

कानक्षविश्वरु॥ अयूरुमा रुधरुनां जाकिनीनां सहस्रकं॥ मानयसु रुमघा दंयमा निषू
याग रु॥ लरुजा यधया गाला सर्वकर्म कनात्यसो॥ काटिजा यधसिद्धि स्या रुका कथा का
टिपं वक॥ पुनिदिन पुनिमा संय पुनि स म्वरु न रथा॥ वरु यष्टिवलि दया ईवेरु यष्टिक य
न॥ यलि थिरया यरु निरुं यलि थिरिय न ये रथा॥ अन्वा रुकधं सर्वजगदया यमा निधं॥ अ
थारु संपद क्कामिगुल वदालु दकधां॥ जालान ४॥ कयं ये व सिद्ध यला व कर्म॥ निरुं कयं

हात्मानं हय (गान्धर्वकृत्) लं धान्यवासी कनवे वयूकवास्तु क्रियं तथा ॥ कननी रुगिनी वापि
 हागिनी ये कथे ववा ॥ वसुं नाना विधं वेद दृक्वा वा नृवा मव ॥ गहं यी ० सुगन्धं वर गयं वा शं
 कथे वव ॥ खड्गवाह नरक्षे वेद यदशां शुभं वदुकि ॥ ॐ कि सर्वं कथा गका श्री यमी ता रुयकाः
 नामा यनाजिना महा प्रत्यक्षिनायां सर्वा पाथिक विरोधा धिका वथा ॥ कथथा ॥ उं जून
 ल २ ॥ अतल २ खख म २ विषद २ वीन २ वेन २ सोमा २ गान्धर्व २ दान्धर्व २ वरुध २ वन २ वरु

१२३

^{५२}
 पाथि ऊं रुट ॥ उं ऊं ऊं ४ ४ ४ ४ ४ ४ ॥ उं ऊं वरु वरु पाथिवं च वरु पाथिवं ४ सर्वं सुविष्ट विना
 यका नां ऊं रुट २ स्वाहा ॥ उं ऊं वेच २ वरु पाथि ऊं रुट स्वाहा ॥ य ४ ४ मां सर्वं कथा गका श्री यः
 श्री कान्धर्व ना मा यनाजिना महा प्रत्यक्षिना महा विद्या गाली लिखित्वा ॥ कुरु यरुवा ४ वरु
 वा ४ वल्कलवा ४ काय गका म्वा ४ कश्च गका वा ४ कल्वाः ४ नयि यानि ॥ वाच यि यानि ४ क वा
 यावकी वे विषं न क मिथानिः ४ गमुं न क मिथानि ॥ कलन क मिथानि ॥ गन नं क मिथानिः

अतिमानकमिथानि॥ अतिदकममिथानि॥ सर्वकलाकर्मनकमिथानि॥ नगननक
 मिथानि॥ नाकावमृत्नाकालकमिथानि॥ वरुनागीतिवज्जकलकाठिनियुगगसहसा
 नि॥ विशादवतानित्यंगकमसमीकनकावर्धुगुफिकमिथानि॥ वरुनागीतिवज्जकलका
 ठिवज्जकिकिकनानित्यंगमिथानि॥ कथांमयिपिथारुविथानि॥ मनजायन
 कदाविथकल्वननाकसल्वनथकल्वनयिमाधल्वनपूठनल्वनकठपूठनल्वनमनूषादाः

१२४

विदुष्यनरुविथानि॥ गंगानदिवालकायमाधसंखायापमयानांवृडाहगवकायंन्यस्क
 ल्वनः समन्वागकाहविथानि॥ यः॥ मांसर्वकथागकाष्टीषगीकाकयजानामायनाजिकाम
 हापुसकिनायांयथायनमहायानमिकयंवाधिसल्वनांमहासल्वनांयइकमहापुसकिनाः
 यानूषंयनिषूययकि॥ १ ॥ सर्वकथागकाष्टीषयथायनमहायानमिकयंवाधिसल्वनांम
 हासल्वनांयइकमहापुसकिनायांवदनायनिपूययकि॥ २ ॥ सर्वकथागकाष्टीषयथाय

समहायानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिनायां संहायनिपुत्रयकि ॥ ३ ॥
॥ सर्वकथागताष्टीषयर्थाय नमहायानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिना
यां सत्त्वानां पत्रिपुत्रयकि ॥ ४ ॥ सर्वकथागताष्टीषयर्थाय नमहायानमिकयं वाधिसत्त्वानां महा
सत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिनायां विहानं यत्रिपुत्रयकि ॥ ५ ॥ सर्वकथागताष्टीषयर्थाय नमहा
यानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिनायां वक्तुयां यत्रिपुत्रयकि ॥ ६ ॥ सर्वकथाग
नां महा

१२५

ताष्टीषयर्थाय नमहायानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिनायां आकस्यायत्रिपु
त्रयकि ॥ ७ ॥ सर्वकथागताष्टीषयर्थाय नमहायानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्व
क्तुमहाप्रत्यक्षिनायां प्राधस्यायत्रिपुत्रयकि ॥ ८ ॥ सर्वकथागताष्टीषयर्थाय नमहायानमिक
यं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिनायां जिज्ञासायत्रिपुत्रयकि ॥ ९ ॥ सर्वकथाग
ताष्टीषयर्थाय नमहायानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुमहाप्रत्यक्षिनायां कायः

स्यापनिपुत्रयकि॥ १० ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महास
त्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षिनायां मतः यनिपुत्रयकि॥ ११ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थायधमहा
पात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षिनायां वृषस्यापनिपुत्रयकि॥ १२ ॥
सर्वकथागका श्रीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षि
नायां गहस्यापनिपुत्रयकि॥ १३ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां

१२६

महासत्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षिनायां गहस्यापनिपुत्रयकि॥ १४ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थायधम
हापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षिनायां वसस्यापनिपुत्रयकि॥ १५ ॥
सर्वकथागका श्रीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षिना
यां सुसर्गस्यापनिपुत्रयकि॥ १६ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वा
नां महासत्त्वानां यद्वक्तुं महाप्रत्यक्षिनायां धर्माणां यनिपुत्रयकि॥ १७ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थायध

यथायममहापात्रमिहयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गमहापत्यक्रिनायांवक्रविहानंयत्रियु
त्रयकि॥ १८ ॥ सर्वकथागकाष्टीषययथायममहापात्रमिहयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गमः
महापत्यक्रिनायांआरुविहानस्यापत्रियुत्रयकि॥ १९ ॥ सर्वकथागकाष्टीषययथायममहापा
त्रमिहयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गमहापत्यक्रिनायांआरुविहानस्यापत्रियुत्रयकि॥
॥ २० ॥ सर्वकथागकाष्टीषययथायममहापात्रमिहयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गमहापः

१२०

त्यक्रिनायांआरुविहानस्यापत्रियुत्रयकि॥ २१ ॥ सर्वकथागकाष्टीषययथायममहापात्रमिहयं
यंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गमहापत्यक्रिनायांकायविहानस्यापत्रियुत्रयकि॥ २२ ॥ सर्वक
थागकाष्टीषययथायममहापात्रमिहयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वांयद्गमहापत्यक्रिनायांमहाविह
नस्यापत्रियुत्रयकि॥ २३ ॥ सर्वकथागकाष्टीषययथायममहापात्रमिहयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानां
यद्गमहापत्यक्रिनायांवक्रससर्गस्यापत्रियुत्रयंकि॥ २४ ॥ सर्वकथागकाष्टीषययथायममहा

यात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गुमहायत्नक्रियायांलोकसंस्पर्गस्यायत्रियूत्रयकि॥२५॥
सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथधमहायात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गुमहायत्नक्रियायाद्याध
संस्पर्गस्यायत्रियूत्रयकि॥२६॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथधमहायात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहा
सत्त्वानांयद्गुमहायत्नक्रियायांकिङ्कासंस्पर्गस्यायत्रियूत्रयकि॥२७॥सर्वकथागकाष्टीषय
र्थाथधमहायात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गुमहायत्नक्रियायांकायसंस्पर्गस्यायः

१२८

त्रियूत्रयकि॥२८॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथधमहायात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्
गुमहायत्नक्रियायांमनःसंस्पर्गस्यायत्रियूत्रयकि॥२९॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथधमहायात्र
मिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गुमहायत्नक्रियायांवरुसंस्पर्गयत्नयवदनायत्रियूत्रयकि
॥३०॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथधमहायात्रमित्ययंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्गुमहायत्नक्रिया
यांलोकसंस्पर्गयत्नयवदनायत्रियूत्रयकि॥३१॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथधमहायात्रमिकयंवाधि

सत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां धर्मसंस्पर्शप्रत्ययवदनाया यन्निष्पन्नयकि ॥ ३२ ॥
सर्वकथागताष्टौषपर्यायधमहापात्रमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां
किंकासंस्पर्शप्रत्ययवदनाया यन्निष्पन्नयकि ॥ ३३ ॥ सर्वकथागताष्टौषपर्यायधमहापात्रमि
यं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां कायसंस्पर्शप्रत्ययवदनाया यन्निष्पन्नयकि ॥
॥ ३४ ॥ सर्वकथागताष्टौषपर्यायधमहापात्रमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्य

१२०

क्षिनायां मनसंस्पर्शप्रत्ययवदनाया यन्निष्पन्नयकि ॥ ३५ ॥ सर्वकथागताष्टौषपर्यायधमहापात्र
मिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां यथिविधागा यन्निष्पन्नयकि ॥ ३६ ॥ सर्वक
थागताष्टौषपर्यायधमहापात्रमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां ज्ञा
रुपनिष्पन्नयकि ॥ ३७ ॥ सर्वकथागताष्टौषपर्यायधमहापात्रमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य
द्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां कक्षाधरुपनिष्पन्नयकि ॥ ३८ ॥ सर्वकथागताष्टौषपर्यायधमहापात्रमिकयं

वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां वायुधामपनिपुत्रयति ॥ ३९ ॥ सर्वकथागता श्रीष
पर्यायधमहापानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां आकाशधामपनिपुत्र
यति ॥ ४० ॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्य
क्षिनायां विहानधामपनिपुत्रयति ॥ ४१ ॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापानमिकयं वाधिस
त्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां अविद्यायापनिपुत्रयति ॥ ४२ ॥ सर्वकथागता श्री

१३६

षपर्यायधमहापानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां सत्त्वानां धा
पनिपुत्रयति ॥ ४३ ॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापानमिकयं वाधिसत्त्वानां महास
त्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां विहानस्यापनिपुत्रयति ॥ ४४ ॥ सर्वकथागता श्रीषपर्याय
धमहापानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुणमहाप्रत्यक्षिनायां नामनूपस्यापनिपु
त्रयति ॥ ४५ ॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापानमिकयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य

इकमहाप्रह्लादिनायां षडायकनयत्रियूत्रयकि॥४६॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्र
मिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइकमहाप्रह्लादिनायां संस्यर्गायत्रियूत्रयकि॥४७॥
सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइकमहाप्रह्लादि
नायांविदनायत्रियूत्रयकि॥४८॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्व
नांमहासत्त्वानांयइकमहापात्रादिनायांलक्षयत्रियूत्रयकि॥४९॥ सर्वकथागका श्रीषय

१३९

र्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइकमहाप्रह्लादिनायांउपादानयत्रि
यूत्रयकि॥५०॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांय
इकमहाप्रह्लादिनायांरुवायत्रियूत्रयकि॥५१॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमि
कयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइकमहाप्रह्लादिनायांजागियत्रियूत्रयकि॥५२॥ सर्वकथा
गका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइकमहाप्रह्लादिनायांऊ

वासवधयविपुत्रयति॥ ५३ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वा
नांयद्रुमहापुत्र्यक्रियायांक्षानपात्रमिकायांपत्रिपुत्रयति॥ ५४ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहा
हापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्रुमहापुत्र्यक्रियायांभीलपात्रमिकायांपत्रिपुत्रयति
॥ ५५ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्रुमहापुत्र्य
क्रियायांकांतिपात्रमिकायांपत्रिपुत्रयति॥ ५६ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयं

१३२

वाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्रुमहापुत्र्यक्रियायांवीर्यपात्रमिकायांपत्रिपुत्रयति॥ ५७ ॥
सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्रुमहापुत्र्यक्रिया
यांआनपात्रमिकायांपत्रिपुत्रयति॥ ५८ ॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधि
सत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्रुमहापुत्र्यक्रियायांप्रहापात्रमिकायांपत्रिपुत्रयति॥ ५९ ॥ सर्व
कथागका श्रीषयर्थाथधवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्रुमहापुत्र्यक्रियायांअध्यात्मगुणगा

पविप्रयमि॥६०॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांय
इरुमहापुत्रादिनायांवहिर्द्वागुन्यकापविप्रयमि॥६१॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापा
त्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइरुमहापुत्रादिनायांअथस्त्ववहिर्द्वागुन्यकायांपविप्र
यमि॥६२॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइरु
महापुत्रादिनायांगुन्यकागुन्यकापविप्रयमि॥६३॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापा

१३३

त्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइरुमहापुत्रादिनायांमहागुन्यकापविप्रयमि॥६४॥
सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइरुमहापुत्रादि
नायांपत्रमार्थगुन्यकापविप्रयमि॥६५॥ सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिक
यंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइरुमहापुत्रादिनायांसत्त्वगुन्यकापविप्रयमि॥६६॥
सर्वकथागका श्रीषयर्थाथधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयइरुमहापु

क्रियायां अर्हं कर्म गूढं कायविपुत्रयकि ॥ ६१ ॥ सर्वकथा गका श्री घयर्था अक्षमहापात्रमिहयं वा
 धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुह्यमहापुण्यक्रियायां अर्हं कर्म गूढं कायविपुत्रयकि ॥ ६२ ॥ सर्वकथा
 गका श्री घयर्था अक्षमहापात्रमिहयं वा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुह्यमहापुण्यक्रियायां अर्हं कर्म
 गूढं कायविपुत्रयकि ॥ ६३ ॥ सर्वकथा गका श्री घयर्था अक्षमहापात्रमिहयं वा धिसत्त्वानां महा
 सत्त्वानां यद्गुह्यमहापुण्यक्रियायां अर्हं कर्म गूढं कायविपुत्रयकि ॥ ६४ ॥ सर्वकथा गका श्री घय

१३४

र्था अक्षमहापात्रमिहयं वा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुह्यमहापुण्यक्रियायां अर्हं कर्म गूढं कायवि
 पुत्रयकि ॥ ११ ॥ सर्वकथा गका श्री घयर्था अक्षमहापात्रमिहयं वा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुह्य
 महापुण्यक्रियायां अर्हं कर्म गूढं कायविपुत्रयकि ॥ १२ ॥ सर्वकथा गका श्री घयर्था अक्षमहापात्र
 मिहयं वा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुह्यमहापुण्यक्रियायां अर्हं कर्म गूढं कायविपुत्रयकि ॥ १३ ॥
 सर्वकथा गका श्री घयर्था अक्षमहापात्रमिहयं वा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गुह्यमहापुण्यक्रियायां

अन्यसंस्तुभूयकापत्रियूनायकि॥१४॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथक्षमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां
महासत्त्वानांयद्वक्महायुक्तिक्रियायांमूलवभूयकापत्रियूनायकि॥१५॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाः
यक्षमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वक्महायुक्तिक्रियायांस्वलावभूयकापत्रियू
नायकि॥१६॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथक्षमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वक्म
हायुक्तिक्रियायांमूलवस्वलावभूयकापत्रियूनायकि॥१७॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथक्षमहा

१३५

पात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वक्महायुक्तिक्रियायांस्वलायस्यनियत्रियूनायकि॥
१८॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथक्षमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वक्महा
युक्तिक्रियायांसम्यक्कहाधनियत्रियूनायकि॥१९॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथक्षमहापा
त्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वक्महायुक्तिक्रियायांअक्षिपादायत्रियूनायकि
॥२०॥सर्वकथागकाष्टीषयर्थाथक्षमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वक्म

हापुस्तिकायां श्रुद्धियानिपनियुत्रयकि॥८१॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापात्रमिक
 यंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तमहापुस्तिकायां वलानिपनियुत्रयकि॥८२॥ सर्वकथाग
 ता श्रीषपर्यायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तमहापुस्तिकायां वाधका
 निपनियुत्रयकि॥८३॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वा
 नां यद्वक्तमहापुस्तिकायां आर्याष्टमसागानिपनियुत्रयकि॥८४॥ सर्वकथागता श्रीषपर्याय

१३३

यधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तमहापुस्तिकायां आर्याष्टमसागानिपनियुत्रय
 कि॥८५॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तमहा
 पुस्तिकायां वाधानिपनियुत्रय॥८६॥ सर्वकथागता श्रीषपर्यायधमहापात्रमिकयंवाधिस
 त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तमहापुस्तिकायां मूयमानानिपनियुत्रयकि॥८७॥ सर्वकथागता
 श्रीषपर्यायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्तमहापुस्तिकायां मूयमान

पविप्रयति॥८८॥सर्वकथागकाक्षीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांय
द्वकमहापुण्यक्रियायांविभाकानिपविप्रयति॥८९॥सर्वकथागकाक्षीषयर्थायधमहापाः
त्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वकमहापुण्यक्रियायांसमापह्यपविप्रयति॥९०॥
सर्वकथागकाक्षीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वकमहापुण्यक्रि
यायांगून्यकानिमिरूपनिहिकविभाकमूत्रानिपविप्रयति॥९१॥सर्वकथागकाक्षीषय

१३०

र्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वकमहापुण्यक्रियायांअरिह्यपविप्रय
ति॥९२॥सर्वकथागकाक्षीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वकमहा
पुण्यक्रियायांसमाधियविप्रयति॥९३॥सर्वकथागकाक्षीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाः
धिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वकमहापुण्यक्रियायांधावधीमूत्रानिपविप्रयति॥९४॥सर्वक
थागकाक्षीषयर्थायधमहापात्रमिकयंवाधिसत्त्वानांमहासत्त्वानांयद्वकमहापुण्यक्रियाया

महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्यक्षिनायां अनाममिरुत्तं पत्रिययति ॥ १०२ ॥ सर्वकथागता
क्षीयपर्यायधमहापानमिरुत्तं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्यक्षिनायां प्रत्यः
कवाधियत्रिययति ॥ १०३ ॥ सर्वकथागता क्षीयपर्यायधमहापानमिरुत्तं वाधिसत्त्वानां
नां महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्यक्षिनायां मार्गकानरुक्ता पत्रिययति ॥ १०४ ॥ सर्वक
थागता क्षीयपर्यायधमहापानमिरुत्तं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्य

१३९

क्षिनायां पत्रिययति ॥ १०५ ॥ सर्वकथागता क्षीयपर्यायधमहापानमिरुत्तं वाधिसत्त्वानां
महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्यक्षिनायां सर्वाकानरुक्ता पत्रिययति ॥ १०६ ॥ सर्वकथाग
ता क्षीयपर्यायधमहापानमिरुत्तं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्यक्षिनायां स
र्वधर्मानां पत्रिययति ॥ १०७ ॥ सर्वकथागता क्षीयपर्यायधमहापानमिरुत्तं वाधिस
त्त्वानां महासत्त्वानां यद्वक्त्रमहाप्रत्यक्षिनायां अवं सर्वधर्मां पत्रिययति ॥ १०८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वकथा गंगा श्री यमी नारायण पञ्चांग सा पञ्चाङ्गिका महाप्रत्यक्षिना यांच धर्माधिकार ॥
॥ यः सर्वकथा गंगा श्री यमी नारायण पञ्चांग सा पञ्चाङ्गिका महाप्रत्यक्षिना महाविद्या
वाही धान्यमादा ॥ अत्रुक्तवात्री वृक्तवात्री रुविष्यकि ॥ अमोनी सोनी रुविष्यकि ॥ अमोनी
वीरुवी रुविष्यकि ॥ अमोनी पवासी डपवासी रुविष्यकि ॥ यापि पंचाननकर्मका विस्वात्मापि
निवृद्धस्य या पा रुविष्यकि ॥ पूर्वकर्मोचनमतिविस्वपंचाननकर्मका विस्वात्मापि ॥ यकश्चिन्मा रुद्रा

१४०

मः सर्वकथा गंगा श्री यमी नारायण पञ्चांग सा पञ्चाङ्गिका महाप्रत्यक्षिना महाविद्या वाही धान्यमादाः
पुनार्थि पुनंप्रकिल्लरु ॥ आशुपुनंप्रकिल्लरु ॥ यमकत्वागुवावत्तां लोककुरुडपयय
कः सर्वकथा गंगा श्री यमी नारायण पञ्चांग सा पञ्चाङ्गिका महाप्रत्यक्षिना महाविद्या वाही धान्यमादाः
सर्वे लपडवा यमगंगाया पञ्चांग सा पञ्चाङ्गिका महाप्रत्यक्षिना महाविद्या वाही धान्यमादाः
गंगा श्री यमी नारायण पञ्चांग सा पञ्चाङ्गिका महाप्रत्यक्षिना महाविद्या वाही धान्यमादाः

१४१

धारणाचनमनूरुवकिश्रुयमूचक ॥ गुरुं कृमानामानामसमाधिः ॥ १ ॥ कुरुकुरुमं चतुस्रमूडा
 नामसमाधिः यत्तसमाधिनां सर्वसमाधयामुद्रिताश्रुयमूचक चतुस्रमूडानामसमाधिः ॥ २ ॥
 कुरुकुरुमंसिहविक्किठिकानामसमाधिः यत्तसमारथोऽस्मिन्त्वाः सर्वसमाधिरिद्विक्किठिकश्रु
 यमूचक ॥ सिहविकीठिकानामसमाधिः ॥ ३ ॥ कुरुकुरुमासुवडानामसमाधिः यत्तसमारथोऽ
 स्मिन्त्वाः सर्वसमाधिनां चतुस्रमयकिश्रुयमूचक ॥ सुवडानामसमाधिः ॥ ४ ॥ कुरुकुरुमं चंद्रध

ऊकुरुनामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां मूर्धनवलाकयति अयमूच्यते ॥ अवला
 कयवदं धुऊकुरुनामसमाधिः ॥ ५ ॥ कुरुकटमाऽवलाकिरुमूर्धनामसमाधिः यरुसमारधो
 स्तित्वाः सर्वसमाधिनां मूर्धनवलाकयति ॥ अयमूच्यते ॥ अवलाकिरुमूर्धनामसमाधिः ॥ ६ ॥
 कुरुकटमाधर्मधुनियकानामसमाधिः ॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधयाधर्मधुनिय
 यंगयति अयमूच्यते ॥ धर्मधुनियकानामसमाधिः ॥ ७ ॥ कुरुकटमानियरुधुऊकुरुनामस

१४२

माधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां नियरुधुऊधाययति अयमूच्यते ॥ नियरुधुऊधु
 नांमसमाधिः ॥ ८ ॥ कुरुकटमावजायमानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां हि
 ठिक अयमूच्यते वजायमानामसमाधिः ॥ ९ ॥ कुरुकटमाधर्मप्रवगममूर्धनामसमाधिः यरु
 समारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां धर्मप्रवगममूर्धनापविमकि अयमूच्यते ॥ धर्मप्रवगममूर्धनामसमा
 धिः ॥ १० ॥ कुरुकटमसमाधिनां सप्रकिस्ति कानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमा

धितां समाधिनामसुप्रतिष्ठानप्रतिष्ठितं अयमव्यक्तः समाधिनामसुप्रतिष्ठितानामसमाधिः
॥ ११ ॥ कुरु कुरु मन्त्रिपुमूकानामसमाधिः यदुसमाधौ स्थितः सर्वसमाधिनां नमि वनस्य
नामि अयमव्यक्तः प्रामिपुमूकानामसमाधिः ॥ १२ ॥ कुरु कुरु मन्त्रिपुमूकानामसमाधिः यदुसमा
धौ स्थितः सर्वसमाधिनां वलव्यूहप्रयति अयमव्यक्तः वलव्यूहानामसमाधिः ॥ १३ ॥ कुरु
कुरु मन्त्रिपुमूकानामसमाधिः यदुसमाधौ स्थितः सर्वसमाधिनां समुदागच्छति अयमव्यक्तः

१४३

॥ समुदागच्छति अयमव्यक्तः ॥ १४ ॥ कुरु कुरु मन्त्रिपुमूकानामसमाधिः यदुसमाधौ
स्थितः सर्वसमाधिनां निवृत्तिनिदर्शयुविभक्ति अयमव्यक्तः निवृत्तिनिदर्शयुविभक्तिनामसमाधिः
॥ १५ ॥ कुरु कुरु मन्त्रिपुमूकानामसमाधिः यदुसमाधौ स्थितः सर्वसमाधिनां
धिवचननामधयं निप्रविशति अयमव्यक्तः अधिवचनसंयुक्तानामसमाधिः ॥ १६ ॥ यदु क
रुमः दिग्विलासिकानामसमाधिः यदुसमाधौ स्थितः सर्वसमाधिनां दिग्विलासिका अयमव्यक्तः

कः दिग्विलाकिनामसमाधिः ॥ १० ॥ करुकरमश्रुधनमूढानामसमाधिः यरुसमारक्षोस्तित्वाः
 सर्वसमाधिनां मूढाश्रुधनयकिअयमूयक ॥ अश्रुधनमूढानामसमाधिः ॥ ११ ॥ करुकरमः संप
 मूढिनामसमाधिः यरुसमारक्षोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां संप्रमूयकअयमूयक असंप्रमूयि
 कानामसमाधिः ॥ १२ ॥ करुकरमः सर्वधर्मसमवसनधसागवमूढानामसमाधिः यरुसमारक्षो
 स्तित्वाः सर्वसमाधयः संयहसमवसनधसागवमूढानामसमाधिः ॥ सर्वधर्मसमवसनधः

१४४

सानमूढानामसमाधिः ॥ २० ॥ करुकरमश्रुकागस्तित्वाः यरुसमारक्षोस्तित्वाः सर्वस
 माधिनां अकार्मस्तित्वाः यरुसमारक्षोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां अकार्मस्तित्वाः ॥ २१ ॥ करुकर
 मः कक्षावकिनामसमाधिः यरुसमारक्षोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां कक्षावधियावकुलाकिनाय
 क ॥ कक्षावकिनामसमाधिः ॥ २२ ॥ करुकरमः ५ प्रमानावहासानामसमाधिः यरुसमारक्षोस्ति
 त्वाः सर्वसमाधिनां अप्रमाधमवहासानामसमाधिः ॥ २३ ॥ करुः

कर्मसंगतनामवन्तरक्षनामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वाः सर्वसमाधिनां संगवहिकतामूयादाय
 निवावहावहासकनावाक्यसंगवर्धनामसमाधिः ॥ २४ ॥ कुरुकर्मसर्वधर्मपुत्रलिसम
 दृष्टानामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वाः सर्वसमाधिनां सर्वधर्मउच्यते पुत्रलिसमदृष्टानाम
 समाधिः ॥ २५ ॥ कुरुकर्मसर्वधर्मदृष्टानामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वाः सर्वसमाधिनां निद
 मिरुतिपिकुहाकिपागवाग्याकिमिरुतिपिकुहामकनावाक्यः ॥ २६ ॥ कुरु

१४५

कर्मवेषावनामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वाः सर्वसमाधिनां निमिवहासयकिरयकि
 विवाचकनावाक्यः ॥ २७ ॥ वेनावनामसमाधिः ॥ २८ ॥ कुरुकर्मसर्वधर्ममयकिरनावाक्यः ॥ अनिमिषानामसमाधिः
 यत्समाधौ स्थित्वाः सर्वसमाधिनां नकश्चिधर्ममयकिरनावाक्यः ॥ अनिमिषानामसमाधिः
 ॥ २९ ॥ कुरुकर्मसर्वधर्ममयकिरनावाक्यः ॥ अनिमिषानामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वाः सर्वसमाधि
 नां नकश्चिधर्ममयकिरनावाक्यः ॥ अनिमिषानामसमाधिः ॥ ३० ॥ कुरुकर्मः

मनित्रिका नाम समाधिः यः स माधो हित्वा सर्व समाधिनां विरुद्धासिका धर्मान् यवर्णयति कथाया
क विरुद्धा नाम समाधिः ॥ ३० ॥ कुरु कुरु म विमल प्रदीया नाम समाधिः यः स माधो हित्वा सर्व स
माधीनां प्रदीयं श्रवयति कथाया ॥ विमल प्रदीया नाम समाधिः ॥ ३१ ॥ कुरु कुरु म अनन्त प्रह्ला नाम समाधिः
माधिः यः स माधो हित्वा सर्व समाधीनां अनन्त प्रह्ला कथाया कथाया अनन्त प्रह्ला नाम समाधिः
॥ ३२ ॥ कुरु कुरु म प्रह्ला कथा नाम समाधिः यः स माधो हित्वा सर्व समाधीनां प्रह्ला कथा नाम समाधिः

१४५

कथाया कथाया नाम समाधिः ॥ ३३ ॥ कुरु कुरु म समन्ता वहा नाम समाधिः यः स माधो हित्वा
त्वा सर्व समाधिनां मरुप किलं कुरु सर्व समाधि मूखा न्य वहा स कथाया ॥ समन्ता वहा नाम समाधिः
॥ ३४ ॥ कुरु कुरु म शुद्ध सा नाम समाधिः यः स माधो हित्वा सर्व समाधिनां शुद्ध सा नाम समाधिः
मन्त्राया कथाया कथाया नाम समाधिः ॥ ३५ ॥ कुरु कुरु म विमल प्रह्ला नाम समाधिः यः स
स माधो हित्वा सर्व समाधिनां वन सा कर्षयति कथाया ॥ विमल प्रह्ला नाम समाधिः ॥ ३६ ॥ कुरु

युष्मदीयानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां नमिमुखमवहास्यकिरुनायका सु
युष्मदीयानामसमाधिः ४४ ॥ कुरुकुरुमवद्विमलानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्व
समाधिनां मुखानामालाकंकशकिरुनायका आकावकशानामावका ४५ ॥ विमलानामसमाधिः
४५ ॥ कुरुकुरुमः गुह्यहासानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां अन्धका नः
विषमयकिरुनायका गुह्यहासानामसमाधिः ४६ ॥ कुरुकुरुमालाककशानामसमाधिः

५४६

यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां मुखानामालाकंकशकिरुनायका लाकंकशानामसमाधिः
४७ ॥ कुरुकुरुमः काशकाशानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां कावगकांकि
यांकशकिरुनायका आकावाकाशानामसमाधिः ४८ ॥ कुरुकुरुमः हानकुरुनामसमाधिः यरु
समारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां हानकुरुसमनूपमकिरुनायकहानकुरुनामसमाधिः ४९ ॥
कुरुकुरुमवद्विमलानामसमाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां धर्मात्रिर्विधकसमाधिस

यिसमनूयन्धितिरावयक ॥ वजायमानासमाधिः ॥ ७० ॥ कुरुकुरुमः विलुक्किनासमाधिः ॥ यः
कुरुसमाधौस्थित्वाः सर्वसमाधिनां विलुक्कं वल्लं यकिनविवर्कनपरवकितासकनविशारुमायत्तः
कुरुसमाधौ वरवकिविलुक्किनासमाधिः ॥ ७१ ॥ कुरुकुरुमः समकाशको ॥ ७१ ॥
नासमाधिः ॥ यः कुरुसमाधौस्थित्वाः सर्वसमाधिनां समकाशकसमनूयन्धितिरावयक ॥ समना
लाकासमाधिः ॥ ७२ ॥ कुरुकुरुमः सुप्रतिष्ठितानासमाधिः ॥ यः कुरुसमाधौस्थित्वाः सर्वस

७१ ॥

माधिनां प्रतिष्ठितारवतिरुवायक सुप्रतिष्ठितानासमाधिः ॥ ७३ ॥ कुरुकुरुमः नलकाठिनासमाधिः
धिः ॥ यः कुरुसमाधौस्थित्वाः सर्वसमाधिनां समकाडनलकाठिनितुसदृशं कुरुवायक ॥ नलकाठिनासमाधिः
धिः ॥ ७४ ॥ कुरुकुरुमः वनधर्ममूडानासमाधिः ॥ यः कुरुसमाधौस्थित्वाः सर्वसमाधिनां मुदितामृपादा
यः कुरुवायक वनधर्ममूडानासमाधिः ॥ ७५ ॥ कुरुकुरुमः सर्वधर्मसमकानासमाधिः ॥ यः कुरुसमा
धौस्थित्वाः सर्वसमाधयानकचिद्धर्मसमकानि नूकि समनूयन्धितिरावयक सर्वधर्मसमकानासमाधिः

माधिः॥ ७६॥ कुरुकरमत्रकिंऊहा नाम समाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधयावकिऊहाकि
रुनायकाप्रकिऊहा नाम समाधिः॥ ७७॥ कुरुकरमः सर्वधर्मगतयुद्धनाम समाधिः यरुसमारधो
स्तित्वाः सर्वधर्मोपगच्छकि सर्वधर्मोपयुक्तकनायक॥ सर्वधर्मादिकयुद्धनाम समाधिः ७८॥
॥ कुरुकरमविकिप्ररक्षनाम समाधिः यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां विकिप्ररक्षानिविध
मयकिरुनायकविकिप्ररक्षनाम समाधिः॥ ७९॥ कुरुकरमसर्वधर्मोपदयुद्धनाम समाधिः

॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां सर्वधर्मोपदानियकिवर्कुरुकरनायक॥ सर्वधर्मोपदयुद्धनाम समाधिः
॥ ८०॥ कुरुकरमः समाकृपानाम समाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां समाकृपानाम समाधिः
विप्रकिल्लरुकरनायकसमाकृपानाम समाधिः॥ ८१॥ कुरुकरमः अकृपायगकानाम समाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः
सर्वसमाधिनां अकृपायगकानाम समाधिः॥ अकृपायगकानाम समाधिः॥
॥ ८२॥ कुरुकरमः अलम्बददनाम समाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां विकानायाय

विषयमतिक्रामतिक्रान्नायक॥ विषयगिरिर्हनामसमाधिः॥ १०॥ कुरुकुरुमसर्वगुणसंबन्धायगगनात्म
समाधिः॥ यरुसमारब्धोऽस्त्वित्वा॥ सर्वगुणानां सर्वसमाधिनां सर्वयतामनूपाप्रातिक्रान्नायक॥ सर्वगुणसं
बन्धानामसमाधिः॥ ११॥ कुरुकुरुमविरुद्धिनिश्चिन्तानामसमाधिः॥ यरुसमारब्धोऽस्त्वित्वा॥ सर्वसः
माधिनां विरुद्धप्रवर्तकनायक॥ विरुद्धिनिश्चिन्तानामसमाधिः॥ १२॥ कुरुकुरुमसुहृदपूष्यक
मुद्दिनामसमाधिः॥ यरुसमारब्धोऽस्त्वित्वा॥ सर्वसमाधिनां सुहृदपूष्यकमुद्दिप्रकिलकनायक॥ सुहृदः

१०२

पूष्यकमुद्दिनामसमाधिः॥ १३॥ कुरुकुरुमवाञ्छकवानामसमाधिः॥ यरुसमारब्धोऽस्त्वित्वा॥ सर्वसमा
धिनां सफवाञ्छानिप्रकिलकनायक॥ वाञ्छकवानामसमाधिः॥ १४॥ कुरुकुरुमशनकप्रति
हासानामसमाधिः॥ यरुसमारब्धोऽस्त्वित्वा॥ सर्वसमाधिनां अशनकद्वयानायक॥ अशनकप्र
तिहासानामसमाधिः॥ १५॥ कुरुकुरुमसमसमानामसमाधिः॥ यरुसमारब्धोऽस्त्वित्वा॥ सर्वसमाधि
नां समसमानामनायक॥ असमसमानामसमाधिः॥ १६॥ कुरुकुरुमसर्वधर्मा

विक्रमरक्षनामसमाधिः यजुसमारधोस्तित्वाः सर्वधर्माविक्रमनामसमाधिः
 ॥ ११ ॥ करुकरमः यत्रिदुदकनामसमाधिः यजुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां सर्वधर्माणां यत्रि
 दुदकविष्मतिकनामसमाधिः ॥ १२ ॥ करुकरमविमकिविकिन्नरक्षनामसमाधिः
 यजुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां विकिन्नमनुपाश्रितिकनामसमाधिः यजुसमारधोस्तित्वाः सर्वधर्माणां स्तनसम

१०३

नृपग्नितिकनामसमाधिः ॥ १० ॥ करुकरमः जकव्यूहनामसमाधिः यजुसमारधो
 स्तित्वाः नकस्यविधर्मस्यद्वयनामसमाधिः ॥ ११ ॥ करुकरमः
 आकाशरितिरिहानामसमाधिः यजुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां सर्वधर्माणां वाकाशरितिरिहा
 समनृपग्नितिकनामसमाधिः ॥ १२ ॥ करुकरमः जकाकात्रव्यूहनामसमाधिः
 यजुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां आकाकात्रनामसमाधिः ॥ १३ ॥ करुकरमः जकाकात्रव्यूहनामसमाधिः

धिशः ८३ ॥ कुरु कुरु मः ४ आकाशानवकाशानामसमाधिः ॥ यरुसमाधौ स्थित्वा ४ सर्वधर्मो धामद्वयतां समनूय
 मधिकरुनाशकः ॥ आकाशानवकाशानामसमाधिः ॥ ८४ ॥ कुरु कुरु मनिवधिक सर्वलावकयाधिकाशानामसमा
 धिः ॥ यरुसमाधौ स्थित्वा ४ सर्वसमाधिनां निवधिकरुनसमनूपाप्राप्तिः ॥ यस्यानूपाफिरुनकधिन्नपुनिर
 विष्कारुनाशकः ॥ निवधिक सर्वलावकलाधिकाशानामसमाधिः ॥ ८५ ॥ कुरु कुरु मः ४ संककनूतप्रवरणा
 नामसमाधिः ॥ यरुसमाधौ स्थित्वा ४ सर्वसमाधिनां संककनूतानिपुनिरुनाशकः ॥ संककनूतप्रवरणा नाम

१५४

समाधिः ॥ ८६ ॥ कुरु कुरु मगीयाया कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ युरुसमारधोस्तित्वा ४ सर्वसमाधिनां न
कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ ८७ ॥ कुरु कुरु मगीयाया कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ युरुसमारधोस्तित्वा ४ सर्वसमाधिनां न
कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ ८८ ॥ कुरु कुरु मगीयाया कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ युरुसमारधोस्तित्वा ४ सर्वसमाधिनां न
कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ ८९ ॥ कुरु कुरु मगीयाया कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ युरुसमारधोस्तित्वा ४ सर्वसमाधिनां न
कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ ९० ॥ कुरु कुरु मगीयाया कुरु विमुक्तिनाम समाधिः ॥ युरुसमारधोस्तित्वा ४ सर्वसमाधिनां न

लकृकनामसमाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां हिलकृयनिकनायका॥ अनरिलकृका नामस
माधिः॥ ५० ॥ कुरुकुरुमः सर्वाकाववलायका नामसमाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां
सर्वाकाववलायका हवतिकनायका॥ सर्वाकाववलायका नामसमाधिः॥ ५१ ॥ कुरुकुरुमः सर्वसुखद
वदनित्रिनन्दिकनामसमाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां सर्वसुखद्वदनित्रिनन्दिकनाम
पम्पतिकनायका॥ सर्वसुखद्वदनित्रिनन्दिकनामसमाधिः॥ ५२ ॥ कुरुकुरुमः कुरुयाका नामस

पँडें

समाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां कुरुयन्नसमनपम्पतिकनायका॥ कुरुयाका नामसमा
धिः॥ ५३ ॥ कुरुकुरुमः धानशीप्रतिपलिननामसमाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां धानय
निकनायका धानशीप्रतिपलिननामसमाधिः॥ ५४ ॥ कुरुकुरुमः सर्वसम्यक्मिथ्यात्वसंगुहनाम
समाधिः॥ यरुसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां सम्यक्मिथ्यात्वानिसमनपम्पतिकनायका सर्व
सम्यक्मिथ्यात्वसंगुहनामसमाधिः॥ ५५ ॥ कुरुकुरुमः सर्वप्राधनिप्राधपुसमना नामसमाधिः॥ य

उसमारधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां वाधनसमन्यम्भक्तिकनायकसर्ववाधनिशधप्रवाणा नाम समा
धिः ८६ ॥ कुरु कुरु मः नृणां वक्तिसाधना नाम समाधिः ८७ ॥ यरु समाधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां अनसंसा
नाम समन्यम्भक्तिकनायकः ८८ ॥ अनसात्रयक्तिसाधना नाम समाधिः ८९ ॥ कुरु कुरु मः विसलप्रहा
नाम समाधिः ९० ॥ यरु समाधोस्तित्वाः सर्वसमाधिनां प्रहाकना नाम महुलाना पल्लवकनायक
विसलप्रहाना नाम समाधिः ९१ ॥ कुरु कुरु मः सावकी नाम समाधः यरु समाधोस्तित्वाः समा

१०६

धीनां मसात्रनां पल्लवकनायकः सावकी नाम समाधिः ९२ ॥ कुरु कुरु मः पत्रिपूत्रयक्ति
पूर्णवद्विमलाना नाम समाधिः ९३ ॥ यरु समाधोस्तित्वाः कस्य समाधयाः पत्रिपूर्णवद्विक्तिः
पत्रिपूर्णवद्विमलाना मरुनायकः ९४ ॥ पत्रिपूर्णवद्विमलाना नाम समाधिः ९५ ॥ कः
कुरु मः महाविहाना नाम समाधिः ९६ ॥ यरु समाधोस्तित्वाः सर्वसमाधीनां महाव्यूहाना मः
मसमंत्वागता हविकिनायकः महाव्यूहाना नाम समाधिः ९७ ॥ कुरु कुरु मः सर्वोकाव

पुलाकनामसमाधि॥ यरुसमारधोस्तुत्वा॥ सर्वसमाधीनां सर्वधर्माधायकनामसमाधि॥ सर्व
कावपुलाकनामसमाधि॥ १०२ ॥ करुकरुमसमाधिसमकानामसमाधिः॥ यरुसमारधोस्तुत्वाः
॥ सर्वसमाधिनां विष्णुयत्नेकायकां समनूयगतिरुनायक॥ समाधिसमकानामसमाधि॥ १०३ ॥
करुकरुमसद्वधसमवधनामसमाधि॥ यरुसमारधोस्तुत्वा॥ सर्वसमाधयानवतकिरुनायकअव
धसवधनामसमाधि॥ १०४ ॥ करुकरुमसद्वधसमवधसवधनामसमाधि॥ यरुसमारधोस्तुत्वा

१०५

त्वा॥ सर्वसमाधीनां मवधसवधसर्वसमवधसमवधकामनूपायातिरुनायक॥ अनधसर्वसमवधसव
धनामसमाधि॥ १०५ ॥ करुकरुमसनिलानिककानामसमाधि॥ यरुसमारधोस्तुत्वा सर्वसमाधी
नां मालयन्तसमनूयगतिरुनायक॥ अनिवानिककानामसमाधि॥ १०६ ॥ करुकरुमसकथकास्तिक
निधिका नामसमाधि॥ यरुसमारधोस्तुत्वा॥ सर्वसमाधिनां कथकां नवातिवर्ककनायककथकास्तिक
किनिधिका नामसमाधि॥ १०७ ॥ करुकरुमसकायकालिकसंप्रथमनीनामसमाधि॥ यरुसमारधो

सिन्हाः सर्वसमाधिनां कायभाषलखकनावाक। कायलिक ४ संयथमनातामसमाधिः ॥ १८ ॥ ॐ हं सू
रमहावाधिसत्त्वस्य प्रत्यक्षिवायां वयका महायानं ॥ ॥ ॐ त्रिप्रत्यक्षिवायां यद्धममाव ॥ ॥ ग
था ॥ वृद्धा रगवा नागवाजा ॥ वृद्धा नागवाजा ॥ वृद्धा नागवाजा ॥ सह्य नागवाजा ॥ समूहा नागवाजा ॥ साग
नागवाजा ॥ मकश नागवाजा ॥ नवा नागवाजा ॥ सुदर्शना नागवाजा ॥ अरूना नागवाजा ॥ घरूना नागवाजा
॥ पाहुना नागवाजा ॥ संवरूना नागवाजा ॥ अरूना नागवाजा ॥ वरूना नागवाजा ॥ पडरूना नागवाजा ॥ श्रीमां

१०८

नागवाजा ॥ श्रीकरूना नागवाजा ॥ श्रीवर्द्धना नागवाजा ॥ श्रीरुद्धा नागवाजा ॥ अरूना नागवाजा ॥ अतिवला
नागवाजा ॥ भावना नागवाजा ॥ मलना नागवाजा ॥ सुवाक नागवाजा ॥ भक्तदेवो नागवाजा ॥ समनूना नाग
वाजा ॥ सूर्यप्रकाश नागवाजा ॥ वन्द्यप्रकाश नागवाजा ॥ रुद्रकाश नागवाजा ॥ मर्दना नागवाजा ॥ गर्जना नाग
वाजा ॥ आदर्शना नागवाजा ॥ विशाकना नागवाजा ॥ सुदना नागवाजा ॥ वरूना नागवाजा ॥ विमलना नाग
वाजा ॥ अलिकाना नागवाजा ॥ वलिकाना नागवाजा ॥ अग्निगीर्षा नागवाजा ॥ गर्वयगीर्षा नागवाजा ॥ मृगगीर्षा

नागवाजा॥हस्तिमिषां नागवाजा॥मनसिंह नागवाजा॥आदवलीका नागवाजा॥दर्शन नागवाजा॥गर्जन नाग
वाजा॥विक्रान्त नागवाजा॥विक्रम नागवाजा॥मृचि नागवाजा॥मृचिचिन्हा नागवाजा॥महा मृचिलि
न्हा नागवाजा॥वावरा नागवाजा॥वाघ नागवाजा॥हवि नागवाजा॥गिरिका नागवाजा॥लक्ष्मी का ना
गवाजा॥रुमि नागवाजा॥अनन्ता नागवाजा॥कनका नागवाजा॥कटका नागवाजा॥मंखा नागवाजा
मंखा नागवाजा॥महा रुक्म नागवाजा॥नन्दा नागवाजा॥डयतन्हा नागवाजा॥वासुकि नागवाजा॥

१५५

गर्जना नागवाजा॥कर्कट नागवाजा॥यशना नागवाजा॥महा यशना नागवाजा॥कलिका नागवाजा॥
हस्ति कच्छ नागवाजा॥धिक नागवाजा॥जलपुत्र नागवाजा॥अयला नागवाजा॥काला नागवा
जा॥डयका नागवाजा॥वलदवा नागवाजा॥नावाय नागवाजा॥कम्पना नागवाजा॥कम
नागवाजा॥मक नागवाजा॥हीमा नागवाजा॥विहीष नागवाजा॥वाक नागवाजा॥मेला
नागवाजा॥गङ्गा नागवाजा॥हीमा नागवाजा॥विहीष नागवाजा॥वाक नागवाजा॥सिंधू नाग

नागशाका ॥ वक्रनागनाका ॥ श्रीकानागनाका ॥ मरुत्तनागनाका ॥ अतवक्रनागनाका ॥ सुप्रतिस्ति
कानागनाका ॥ उनावक्षनागनाका ॥ धनतिधनागनाका ॥ युकिंधनागनाका ॥ निमिधनागना
का ॥ रुडा नागनाका ॥ सुरुडा नागनाका ॥ वसुरुडा नागनाका ॥ वलरुडा नागनाका ॥ मक्षिकरुडा नागना
का ॥ मालिनागनाका ॥ वक्रमालिनागनाका ॥ वक्षनागनाका ॥ रुडा नागनाका ॥ सुरुडा नागनाका ॥ इन्द्र
हिनागनाका ॥ उपवद्रुहिनागनाका ॥ आसुमकिर्थकानागनाका ॥ मक्षिसुडा नागनाका ॥ धनराक्षनाः

१५०

गशाका ॥ विवृधकानागनाका ॥ विवृपाकानागनाका ॥ वेधुवक्षनागनाका ॥ सुकरु मृशनागनाका ॥ वां
यकानागनाका ॥ रगेकानागनाका ॥ पांवाशनागनाका ॥ पंचवृक्षनागनाका ॥ प्रयुक्तानागनाका ॥ वि
युल्लंरुवा नागनाका ॥ अवरुहसभीरुनागनाका ॥ महाभयविकृष्टिका नागनाका ॥ महाभयसुहृता ना
गनाका ॥ मद्यगर्जिका नागनाका ॥ वर्धसंरुवा नागनाका ॥ उल्काघातनागनाका ॥ अवरुकात्रगर्जिकाना
गनाका ॥ गर्कस्वनागनाका ॥ महारुल्लूखनागनाका ॥ श्रीकानागनाका ॥ श्रीधनागनाका ॥

दाववनसगीतिनलकुसुमनलपयमूकाहावननागयूषामूकाहालेऊगकागुठगुठायमारधमहावात
 पुवायंकासहानादवदकावमहीयाधधर्मनादनदका॥महाकागुनगोववविविकाअधरगावकमहि
 द्यदयन॥पुदकिधीकूर्तनिसा॥पुदष्टिशीकालेकाकहसु॥उकाकस्मिता॥पुनिधानानिकूर्तनिसा॥
 सर्वलाकधकुसमुद्रपुसर्वपृथिव्याकजावायपत्रमाधनरु॥सर्ववृषावलाससपत्रमाधनरुसु॥
 उकेकस्मिंपत्रमाधनरुसि॥सर्वगधसमुद्रसमनिकाकोत्रसंख्यापुमयाविख्यातयातहिनयसम

१६२

सनिकाको॥कायसंघसमुद्र॥उकस्मिंकात्रमयमयासख्यारुदिसमुद्रमद्यानधिरयसमनदिष्ट
 काहिमूखादकेकस्मात्पत्रमाधनरुकाहागसमनादिकूलरुवरेवसंहिने॥सर्वपूजाभयसम
 द्र॥सर्ववृद्धवाधिसत्त्वासमुद्रात्सत्कार्योभागुनकूर्योभामानयमयूजयम॥यदूगायमया
 संख्यायाविख्याकूर्योमार्योपनिमानानहिनायोवसंहिने॥समनवर्योपलावसमुद्रमद्ये॥स
 नगागधनरुमधिरयथावाधिसत्त्वात्सहावसमुद्रमद्ये॥उवंसर्वबलवर्धनमिद्यनसर्व

सूर्योदयात्मकावमहुलसमूहमध्येः सर्वत्रलहावलाहवकसमसमूहमध्येः॥ सर्वत्रलहावलाह
 कूटागावसमूहमध्येः॥ सर्ववर्धवृक्षाकावसमूहमध्येः॥ सर्वगन्धधूयसर्ववृषदर्शनसमूहमध्येः॥
 सर्वत्रलहावकसमसमूहमध्येः॥ सर्वत्रलहावलाहकूटागावसमूहमध्येः॥ सर्ववर्धवृक्षाकाः
 गसमूहमध्येः॥ सर्वगन्धधूयसर्ववृषदर्शनसमूहमध्येः॥ सर्ववृक्षनिगार्जिकवायसमूहमध्ये
 ॥ सर्वगन्धधूयसमूहमध्येः॥ संयुक्तगगननक्तमधिष्टायसमूहमध्येः॥ ॥ जतं प्रमूखे प्रथम

१६३

यासुखेयाकुल्यायाययनिमानियानहिनायेप्रसहिनेः सर्वयूजामध्येः समूहमध्येः॥ सर्ववृक्षः
 वाधिसलसमूहात्सकूर्याभागुवकूर्याभामानयमः यूजयामः॥ सर्ववृक्षविषयविधातिकर्तृ
 मधिनाऊसमूहमध्येः संयुक्तगगननक्तमधिष्टायसर्ववृक्षवाधिसलसमूहात्सकूर्याभागु
 वकूर्याभामानयमः यूजयामः॥ सर्वसमन्तावलाहवर्धवृक्षमनिगार्जसमूहमध्येः॥ सर्वत्र
 लानिहालननिर्यामधिष्टायमधिवाऊसमूहमध्येः॥ समन्तात्सर्ववृक्षधर्मनिधायः

मधिवाकसमूहमध्येः॥ समन्तमुखनलत्रग्निवृद्धनिर्माद्यतासमूहमध्येः॥ सर्वव्यूहसमि
न्नापधमलुल्युक्तिताससन्दर्भनमनिवाकसमूहमध्येः॥ अविपदीयः सर्ववृद्धविषयान्ग
त्रधमधिवाकसमूहमध्येः॥ अविश्ववृद्धकुरुकथागरुविमानपुक्तिताससंदर्भनमधिवाकः
समूहमध्येः॥ नलविविक्तनलत्रध्ववृद्धकायपुक्तितासवेवावनमधिवाकसमूहम
ध्येः॥ सहनगगद्यकलमधिरायसर्ववृद्धवाधिसत्त्वसमूहकूर्याभागुवकूर्याभामानम

१६४

मध्यायमः॥ असहिनेः सर्वनलगन्धविविक्तपूषाकूटागात्रसमूहमध्येः सर्वमूकार्ह
त्रविविक्तकूटागात्रसमूहमध्येः॥ सर्वपूषाकमत्रसमूहमध्येः॥ अतन्तनलहात्रसमलंक्रग
कूटागात्रसमूहमध्येः॥ सहनगगद्यकनमधिरायसमूहमध्येः॥ दग्दिगसूत्रधमध्येः॥ स
मन्तत्रग्निवातिगर्हसर्वव्यूहसमसत्त्वनलकूटागात्रसमूहमध्येः॥ सर्वनलत्रध्वः पुक्तिम
धिविज्ञानकव्यूहवाद्यासनकूटागात्रसमूहमध्येः॥ सर्वव्यूहपुक्तिमधिरसमन्तत्रग्निस्सू

नडाकूठागानसमूहमध्ये॥ समकमूखयूयाकाप्रधद्यच्छालवलंविहसमूहमध्ये॥ सय
 नगगहनसमिधायः सर्ववृद्धवाधिसत्वसमूहात्सत्कुर्यामागुनूकुर्यामाः मानयमः पूज
 यमः॥ कावननलविविक्तसूहावननलवर्षगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ कूसमवला
 सविविक्तगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ ज्युतीलजामूनदयसविविक्तगहसिंहासनसमूहः
 मध्येः पुदीपमधियमगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ कतिध्वजमधिनलयसविविक्तगह

१६३

सिंहासनसमूहमध्ये॥ नलपनिमहितयसविविक्तगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ ज्युतीनन
 विनकालनसिधयमगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ अकयलमिहकालनयमगहसिंहासनस
 मूहमध्ये॥ सर्वनलकालानिहकयमगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ वृद्धनूनिर्धोषनमि
 यमगहसिंहासनसमूहमध्ये॥ असहिताः संदुनमगहनमधियः सर्ववृद्धवाधि
 सत्वसमूहात्सत्कुर्यामागुनूकुर्यामाः मानयमः पूजयमः सर्वगन्धमधिविविक्तवृक्तसमूहमध्ये॥

समस्तमुखयज्ञकुलिमद्यनिः॥ मन्त्रधरा न्वहकः॥ समुद्रमध्ये॥ सर्वव्यहतिः॥ सुमानकका मन्त्रकः
 समुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षनृपा नकव्यहसंदर्भनहकः॥ समुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षसममद्यपुनिलयुव
 कः॥ समुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षाविमधुलविद्याटिकहकः॥ समुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षनवृक्षवाधिसः
 त्वाहकायसुन्दर्भनहकः॥ समुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षसत्त्वामधुलविविधवृक्षपुलवृक्षः॥ दव
 कानकः॥ सर्ववृक्षमधुकागसूर्योविद्याटिकहकः॥ समुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षनिर्धायनिगङ्गिक

१६६

मन्त्रहृनिर्धायसमस्तपुमन्त्रनहकः॥ समुद्रमध्ये॥ मन्त्रवृक्षवृक्षयज्ञगर्हसिंहासनः॥ समुद्रम
 धे॥ समन्तानिमूर्धमधिव्राजविद्याकिगर्हसिंहासमुद्रमध्ये॥ सुवालंकालवृक्षपुनिलमधिरगर्हसिंहा
 सनसमुद्रमध्ये॥ विविधवृक्षविप्रदीपमालागर्हसिंहासनसमुद्रमध्ये॥ समस्तनिर्धायवृक्षानिमन्त्र
 धगर्हसिंहासमुद्रमध्ये॥ सर्वगन्धकसूर्ययज्ञहवृक्षगर्हसिंहासनसमुद्रमध्ये॥ सर्ववृक्षासनः
 व्यहसुन्दर्भनमधिव्राजगर्हसिंहानः॥ समुद्रमध्ये॥ वृक्षविह्वलपुलम्बिकालधवहिकापः

किमशिरुप्रलगतं मधुसिंहासनसमूहमध्ये॥ सर्वद्रुममशिरुप्रलगतं मधुसिंहास
नः समूहमध्ये॥ विविद्रुममधुप्रलकिंकिशिकालसमन्तानां कानसूर्यविशंकिरुगर्हसिंहासन
समूहमध्ये॥ **॥** संयुक्तगगधनमधिविष्टायः सर्ववृद्धावाधिसत्त्वसमूहास्तत्कुर्यात्मागु
वृकुर्यात्मा मातयमः सर्वधिका मत्राकृषितानः समूहमध्ये॥ वृद्धनीमधिवल्लकगत्र सर्वय
षावृहदिकामधिः समूहमध्ये॥ सर्वगन्धमधिवितानसमूहमध्ये॥ बलापदीपविशुद्धविता

१६०

नः समूहमध्ये॥ सर्ववृद्धविनिदर्शनप्रलमहुलनिर्धोषमधिव्राजः समूहमध्ये॥ विविद्रुमधिव
रुसर्ववृहप्रलमसंदर्शनवितानसमूहमध्ये॥ सर्वयूषाद्यकालावहासनलवितानसमूहमः
ध्ये॥ विविद्रुमधुसमन्तनिधोषहृदयकालावितानः समूहमध्ये॥ अनन्तवर्धयमकालविवि
रुमधिकटिकाययमकालवितानसमूहमध्ये॥ सुवर्धकगत्रग्निधातिध्वजवितानसमूहमध्ये॥
॥ अविद्यवृहप्रलमसर्ववृहसिंहासनसमूहमध्ये॥ संयुक्तगगनमधिविष्टायः सर्ववृद्धः

वाधिसत्त्वासगनमद्यसमूदात्सत्कुर्यामागुवृकुर्यामासातयमः पूजयमः विविक्तुसर्वमधिनन्तह
 रुसमूदमधे॥ सर्ववृद्धवाधिसत्त्वकवृद्धासूतवनिधोषमधिनानुहुरुसमूदमधेः विविक्तुनन्ताः
 त्रिमालाहुरुसमूदमधे॥ समननलनधूपहासमधिरुद्यध्जालवलंविमविविक्तुहुरुमधे
 ॥ सर्वमधिरुमगात्वालं कालहुरुसमूदमधे॥ सूर्यविनाचनाविमधिनानुसर्वगन्धधूपह
 रुसमूदमधे॥ चन्दनवृद्धकागसमनसूतवधहुरुसमूदमधे॥ विविक्तुविपूलवर्द्धविषय

१६६

विशाकि समनवृहसूतवधहुरुसमूदमधे॥ असंहितेः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वसमूदात्सत्कुर्यामा
 गुवृकुर्यामासाधयामः पूजयमः सर्वनन्तावहासमधुलसमूदमधे असंहिते॥ सर्ववृद्धा
 विगहयहामधुलः समूदमधे॥ सर्वकसूतमद्यविशाकिरुपहामधुलसमूदमधे॥ सर्व
 नलनमिवृद्धनिर्माधयहामधुलसमूदमधे॥ सर्ववृद्धकुरुपहासांरुगंरुपहामधुल
 समूदमधे॥ समनसूतवृद्धविषयनिगर्जननलगात्वापहामधुल समूदमधे॥ सर्व

रूपं नलरगमरु मधिनाऊनमिषलामधुलः समूद्रमधे॥ अननकसल्वनूपविठुलकवसंदर्शन
यलामधुलसमूद्रमधे॥ सर्ववृद्धयधिष्ठानसम्भवमनाहनिर्नादयमूवनयलामधुल
समूद्रमधे॥ सर्वपषधमधुलसमूद्रमधे॥ सर्वपषमधुलसल्वविनयनिधौषमधि
नाऊनयलामधुलसमूद्रमधे॥ सर्ववृद्धवाधिसल्वसमूद्रात्सत्कुर्यामागुनूकुर्यामाभातय
मः पूरुयमः॥ असहिलः सर्वमधिकामनामिसमूद्रमधे॥ सर्वनूपमदृगन्धनसप

१६९

श्वनमिसमूद्रमधे॥ सर्वगलार्विः समूद्रमधे॥ सर्ववृद्धमधिगर्जनरुनधनमिस
मूद्रमधे॥ सर्ववृद्धकुरुवृहविशानिकनमिसमूद्रमधे॥ सर्वपूषाकूटागनमिस
मूद्रमधे॥ सर्वनलनधनमिसमूद्रमधे॥ सर्वकल्पपनंपनावृद्धसम्भवसल्वयनिपा
कननिगर्जननमिसमूद्रमधे॥ अक्रयसल्वनलानिदर्शनसर्वपूषाकैगनमिस
मूद्रमधे॥ सर्वासल्ववृहसदर्शननमिसमूद्रमधे॥ असहिलकनकवर्धविनला

निसमूद्रमधो॥समनकप्रहामादिनाऊविसमूद्रमधो॥वियूलसर्ववृद्धकुरुवृहविशकितावि
समूद्रमधो॥सर्वन्मावि समूद्रमधो॥सर्वविहवि समूद्रमधो॥सर्ववृद्धनिमाधाविसमूद्रम
धो॥विविक्तवल्कलकमनाविनामसमूद्रमधो॥सर्ववृद्धवि समूद्रमधो॥अननकावि सः
स्ववर्णनिर्धासमादिनाऊविसमूद्रमधो॥सर्वमदिमूकापदीपावि समूद्रमधो॥असहि
नसर्ववृद्धवाधिसत्वस्यपनमर्धसमूद्रमधो॥समूद्रात्तत्कुर्यामागुनूक्यामा मानयमःपू

१००

ऊयमःअविन्नेसर्वगन्धपूयविविक्तसमूद्रमधो॥सर्ववल्कावियमजालसमूद्रमधो॥अनव
र्धमनीवल्कलप्रहामुलसमूद्रमधो॥सर्ववल्कवर्धमूकाकामसमूद्रमधो॥सर्ववल्कगन्धवन्द
नवर्धसमूद्रमधो॥सर्ववल्कलुरुसमूद्रमधो॥मनाहःसुहृन्वयस्वर्धकमनमिधाकिधऊवि
क्तावसमूद्रमधो॥अविल्ववृहप्रकिलासःवृहवकावसमूद्रमधो॥मनाहःसुहृन्विवनिः
र्धाषमदिनाऊ समूद्रमधो॥सूर्योआकिमदिवक्रहावसमूद्रमधो॥अननकासंसमूद्रम

धोः सर्वसमकहडा ललाव समूह मध्ये॥ सर्ववृद्धाधिस्तसागनमद्यसमूहास्तस्युर्था भा
 गुवृकुर्या भा मानयमयूकयमः चतुर्वयपुष्पानी धानं कृत्वा रुमागमानः पूनत्रयि रगवन्कं
 प्रकिधि कृत्वा दाहिवन्दनां च कृत्वा रगवन्कानूहा नास्वष्वसासनयूतपीदन्॥ ॥ न न १०१
 त्वलपूनः समयभा नक्तयनिकनमद्यवृहक कामुलरुजा कानवाकः क्रिशाहसुमहासा
 हम्पिकामहानागाधियमिः उत्थुया सताद कामनू रुनासंगं कृत्वा दक्रिशकानूमहुलं पृथि

व्यां प्रकिष्टा यन्नरगवाकृ नाञ्जलिपदमरगवन्कमकदवावन्॥ पृथुयं मयं रगवन्कथाग
 रुमहं रुसम्यकं वृद्धकिश्चिद्वयदमयमस्यत्स रगवानाकागकुर्या स्तुष्टः यमव्या कव द्वा
 यं चतुर्मुक रगवानानक्तयनिकनः सागनमद्यवृहक कामुलरुजा कालनाजनागाधियः
 मिमकदवावन्॥ पृथुत्वं रुजं गाधियकयद्यदवाकां रुसम्येव यमव्या कव (धनाविरुमात्वा
 धनिष्यन् चतुर्मुकभूनक्तयनिकः सागनमद्यवृहक कामुलनाजु क्रिशाहसुमहासा

हमुकामहानागाधियकिरुगवकभकदवाचतु॥ कथंरुगवन्सर्वनागानां सर्वनागदःखानियः
कियखयूःपुहर्षिनाःसुखसमन्वितांस्वहृन्मृदीयकालनकालवर्षधनाउल्लूकयूः
वहृद्यगुल्मीषधिवनस्पतिविनाहययूःसर्वसंस्थानूयादययूःसर्ववसात्सुजनययूः
शनऊमृदीयकामनूयासुखसमयिनाहवयूःचतमूकहगवानानकयनिकनसागः
नमद्यवृहृकामहुलहृकाकानवाऊःसुसाहमुमहासाहमुकंमहानागाधियकिभ

पै००२

कदवाचतु॥ साधुसाधुकुङ्गाधियकयस्त्वंसर्वसत्त्वानांहिरसूखायपुकिपन्नकथागरुभन
मर्थयनिप्रष्टव्यमन्यक॥ कनहिमहाकुङ्गाधियकंरुधूसाधुवसूक्चसनहिकूबूलायक
॥ चकधर्मनमहाकुङ्गाधियकंरुधूसाधुवःसूक्ष्ममनसिकूबूलाधियक॥ चकधर्मद
सत्वागकानांःसर्वनागानांःसर्वदृष्टानिप्रगद्ययूःसर्वसुखसमयिनाहवयूः॥ ककः
मनेकधर्मेशयद्रुमेष्टाकुकुङ्गाधियकमेकीविहाविष्ठादवमनूयागिनांनन्दकक

समुद्रतक्रनक्तः उदकननासकविषयहन्यक्तः ॥ पनवक्रधनाहिरुय्यक्तः सखस्वयन्तिः सखः
वपकिवृद्धक्तः स्वपृष्ठपनिवक्रिमाधरवक्ति ॥ महापून्वकजाकिमाः अनवसदनीयाधरवक्ति
सदवक्तनलातः पासादिकाधरवक्ति ॥ प्रियदर्शनाश्रः सर्वकाप्रकिहकगतयधरवक्ति ॥
सर्वद्वयप्रकिप्रमुष्ठासंप्रहपिमाधरवक्ति ॥ सर्वसूखसमार्षिताः उरुप्रवमनूयधर्मेषु
निविशकायस्यहदावस्तुलाकउपपद्यक्तः ॥ चक्रुकुङ्गाधियकिस्सात्रामेकीविहोत्रिरधर

१०३

द्वयमनूयानां ॥ कस्ताहर्हिकुङ्गाधियकमेकयकायकमधामेकदावाकर्मधामेकदामः
स्वर्मधामिहर्हयं ॥ ॥ पूनवयंकुङ्गाधियकिः सर्वसूखददानामधामधीप्रवर्हयि
कयाः सा सर्वनागानां सर्वनागदः खानियकिमुहवक्ति ॥ सर्वसूखानिवददाकिः यनह
कम्पनीयकायधकालंवर्षधामाडल्लुजनि ॥ सर्वहृगुल्लाधिवनस्यकिगस्थानिववि
त्राहयनि ॥ कुरुकुङ्गाधियकककमः सा सर्वसूखददानामधामधी ॥ कयथा ॥ धनधी

धनधी उरुधधी संप्रतिस्तिता विजयवर्धसस्यप्रतिहा सासहानवगिडत्यादनिविनासनि
 अरिषिअनिअरिवाहवमुहावकिअकिमका महिकवाननिवाहाहवकभानधूनपा
 यलगधयसागोनिविहकधर्मका मयादानिनि ॥ पूनवपनंरुं गाधियकभेद्यरु १०००
 लसंरुवधाधिअनवाहककागहंनिमोधावहासहानस्रत्ववृद्धवारुमधुल ॥ श्रीकनकका
 दुवशावनककवात्रागकारिगिनिजाकवरगभाधागथागतांमध्यानिधनयिगः

व्यानिमनसिकरुव्यानिनानिः सवानागातांः सर्वनागकुलातांः सवनागलाजातांः सर्वनाग
 संरुवातांः सर्वनागतागिनीनांः सर्वनागनाजातांः सर्वनागकन्यानांः सर्वनागयनिवा
 नाध्मांः सर्वनागदःस्वानिपुरुवकिः सर्वसूखायधातांन्यूपहवकि ॥ केकेरुं गाधिप
 रुककमानिनानिः सर्वनागातांः सवनागिनीनांः सर्वनागदःस्वानिः पकिवधानि ॥
 सर्वसूषसमयिकाश्च कालनकालंरुंरुंम्वहीववधधनाडस्रजयकि ॥ सर्वरुद्यमु

लोचधिवनस्पतिस्थानिवविशदयन्ति ॥ अथ खल्वानकृपात्रमिकयं यन्निकनः सा
 गनमद्यवृहककाममुल्लङ्घका नवाङ्कितसाहसमहासाहसिकानागाधियनिरगाव
 नमध्रहाधकस्त ॥ हाधंनुहगवांस्तदगानिनामध्वनदी मनुपदानि ॥ ऊहंऊम्वदीय ॥
 पाधिमकालपाधिमसमयशून्यशून्योडदीविनेमहावर्षधनापवर्षधय ॥ दानूधकान
 समयकानाः नसमयधर्मिककनयदकालिकलहसमयकूपपदवकासमयनागमः

ॐ नमः

नद्यकानसमयविषमनकृपा संस्तुनकानसमयः सर्वल्यपदवायीजपुगमनंकुर्यादः
 धाधिशानाधिसुनुहगवात्यनमकानुकः सर्वसत्त्वानुकम्पककथा नूयाधिनमध्वनदी मनु
 पदानिहाधिकानि ॥ सर्वनागान्स्वादययुः गानिस्त्वस्त्यनंकुर्यायुः विषमनकृकृतं प्रः
 समययुः सर्वदवात्यहर्षधयुः सर्वमानान्निधं सधयुः ॥ सर्वसत्त्वानां वनकथयुः सर्वरथा
 पुदवापादाधनिवायययुः ॥ पंचवर्षान्कनायानानिः हगवकाकानिः सर्वाभिविष्कन्वयः

सम्यग्दर्शनायाः ह्यहं कर्मस्वीयं डत्सु कयत्रिणि ॥ अहं ह्यगवत्सर्वकथागताः क्रीडमाध्वयया
 मित्रमूकह्यगवानानां कथात्रिकनसागनमद्यवहृकजा मधुलद्युजाकात्राकनागाधि
 पतिमरुदवाचकसाधूसाधू महाकुं गाधिपकयस्त्वं सर्वकथागतमध्वययामि सर्वसत्ता
 नाश्च मथायहि ता यस्त्वायः ॥ कनहि महाकुं गाधिपकयसाधूनां सद्गुणमनामिकन
 हाविष्यन्तिः महाकनूना ह्यवमहाभयनिनादविष्मिः गूत्रकनुना मध्वयधीः सर्ववृद्ध

१०६

हाविताधिष्टिताद्यादिताः सर्वसत्तानामथायहि ता यस्त्वायः अनाह्यक्षेत्र्ययकि ॥ अकिन्न
 द्विवात्रयकिः मन्त्रकात्रं यस्मयकिः सर्वनागासंशयकिः सर्वदेवायुक्तादयकिः ॥ सर्वमात्रा
 नुविधं सयकिः ॥ सर्वसत्ताश्च सर्वसूत्रसमयिका कथाकिः ॥ कथथा ॥ महाह्यभवतासायिः
 कृत्वा लक्ष्मीदृष्टिकमवजसंरुना यत्र मवित्रका निर्मलगुणकुरुसूर्ययहा विमलतागः
 यस्मिन् ह्यन२ सक्त्वा २६ द्द्वह्न २ महायह्यविष्ममहाभाह्यकात्रपुहा मायूधयनिः

पृथ्वीविमलमनस्कस्यमेवावधनकन २३ ला मृधनवाधनकसुभदरावल्लवकुवेगा
 नशाष्टदमत्रेधिकवृद्धधर्मगुरुमार्गियुधसिगुक्तधर्मसमन्वितगर्भविमलजास्ववि
 पूनविष्ठाघयाफनीलासर्वधर्मः सर्वलाककष्टरगुष्टवल्लपुतलजनरुद्रजसरा
 धनश्रिनिश्चयनृगमनकमन्यनश्चिल्लिश्चयनृगमनकमन्यनश्चिल्लिश्चयनृगमनकमन्यन
 नमहायुक्तमि।नस्याहा॥स्याश्रयदं॥ उंसनश्चिल्लिश्चयनृगमनकमन्यनश्चिल्लिश्चयनृगमनकमन्यन

୧୧୧
୨୩୩

वृक्षमहाभागगच्छुमवृक्षसहस्रहजम्बूदीपप्रवर्षध्वंवनरविनिश्चयनृमहाभागप्राधिय
कीनांआगच्छुमहामहाभागवृक्षसहस्रहजम्बूदीपप्रवर्षध्वंवनरविनिश्चयनृधर्मोस
हस्रहःसर्वप्रागानावाहनयिष्यामिभेदीविरुनकनूधविहृतःसर्ववृक्षवाधिसत्त्वाधिय
नासहस्रनमहायानायनागच्छुमहामहाभागप्राधियकयःसमेथवृक्षानांसर्वधर्माधाम
हवाधिसत्त्वगुनाधामरुनरुहिनिरुनृमहाकुलाम्बुमधवाविधीमहाकुलंगदिपनिः

कनमोदीविरुनागद्यकसमनकवर्धसमनममद्यदशघटिश्चदुश्चुङ्गादिपविउगकाटमहा
 वगल्लज्जिका महाविष्णुआद्यकमेकविरुः पवर्धधुङ्कुहज्जुस्वदीयसर्वकथागरसत्यननसा
 हा॥ टकश्चकश्चिदिश्चमहासनिक्कटमोलिधलाआगिविविन्पिनिस्सन्नककिन्नलाधिस्रमवज्ज
 पन्नसत्यननेउहज्जुस्वदीयस्वाहा॥ कवश्चिदिश्चकवश्चमहादकवासिनमहाकुकुटियानाशि
 यापिनं॥ आगद्यकमेकविरुङ्कुहज्जुस्वदीयवर्धधामाडल्लज्जक॥ सर्वकथागरसत्यननाधिस्र

११८

ननवज्जयाधिराहाययकि॥ वलश्चिलिश्चल्लश्चिगकसिद्धाहवकु॥ सर्वकुङ्गासर्वकथागरस
 त्यननचमश्चिमिश्चमूश्चस्वाहा॥ आवाहयामि॥ सर्वनागामेकीविरुनवाधिविरुपूर्वगमनः
 ॥ उन्नवश्चिदिश्चनूवश्चस्वाहा॥ विगकनागानिक्ककसूर्यनकाकमहावला महानागानावाहना
 यामि॥ हा महाकुङ्गा॥ समनपन्नमहाकानुधिकानां सर्वयुद्धकुकिकानां विगककुङ्गा नां
 सर्वकथागरनागाधिस्रनां॥ उं गदश्चिदिश्चदुश्चुङ्गास्वाहा॥ महानागाअयकिहकवन्नयवा

गोकमरुजाधनावर्षधागाः प्रवर्षहुंङ्कम्बूदीयस्वाहा॥ उंसनशसिनिश्सनृस्वाहा॥ गामः
हानागाः स्तुकलरागरुस्मन्सावनवर्षधागाउस्तुककहुंङ्कम्बूदीयः सर्वदवसत्याधिष्टन्न
मालविगस्वाहा॥ वक्तुसत्याधिष्टन्नप्रवर्षकहुंङ्कम्बूदीयस्वाहा॥ गोकसत्यन्नप्रवर्षकमहा
नागाः हुंङ्कम्बूदीयस्वाहा॥ वक्तुमहानागसत्यन्नप्रवर्षकभहुंङ्कम्बूदीयस्वाहा॥ अष्टमक
सत्यन्नप्रवर्षकमहानागाः हुंङ्कम्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहानागाः एताकापन्नसत्यन्नहुंङ्क

११५

ऊम्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहानागाः सक्तदागामिसत्यननरुऊम्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहानागामि
नसत्यनरुऊम्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहानागानरुसत्यननरुऊम्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहाना
गाः पत्यकवृक्षसत्यनरुऊम्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहानागाः सर्ववृक्षवाधिसत्यसत्यननरुऊ
म्बूदीयस्वाहा॥ वर्षकमहानागाः सर्वकथागानां सत्याधिसत्यननरुऊम्बूदीयस्वाहा॥ सर्वद
वानां सत्यनसमयनसथापदवानरुऊम्बूदीयस्वाहा॥ सर्वनागाभासत्यनपवर्षकरुऊम्बूदी

यमहायुधिवां स्वाहा ॥ सर्वयक्षाणां सत्यनयकः ॥ सर्वसत्त्वानां स्वाहा ॥ सर्वनागानां सकनपुव
 र्धकहर्षमसुखाहा ॥ सर्वगन्धवानां सत्यनयकः ॥ सर्वपेदवानि मनुष्यानां स्वाहा ॥ स
 र्वसूत्रानां सत्यनयकः ॥ सर्वविषमनककादि स्वाहा ॥ सर्वगन्धानां सत्यनयकः ॥
 नृकः ॥ सर्वनागानां यदिहृज्मूढी यमहावर्षधाराडत्तुजय स्वाहा ॥ सर्वकिन्नरानां सत्यनय
 मयरुपायं प्रज्ञादययकः ॥ सर्वसत्त्वानां स्वाहा ॥ सर्वमहाप्रगसत्यनयकः ॥ सर्ववर्षधारा

१८०

डत्तुजय स्वाहा ॥ सर्वमनुष्यानां सत्यनयकः ॥ सर्वमनुष्या
 नां स्वाहा ॥ उक्तं शक्तिनिश्चय स्वाहा ॥ दत्तं शक्तिनिश्चय स्वाहा ॥ नृकशक्तिनिश्चय स्वाहा ॥ उक्तं
 धुवाहिनी महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥
 महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥
 महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥
 महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥ महाभयाम्बुध्वजमद्य ॥

[illegible]

१८९

कालाकलालमानिधी॥सर्वकथागतसुखं सर्वनामावर्षकमालंबकहृत्स्वीयस्वाहा॥उंयनर
थिनिश्चयनरस्वाहा॥जलरजिनिश्चयनरस्वाहा॥गवश्चिनिश्चयनरस्वाहा॥उंमउश्चिनिश्चयनर
स्वाहा॥उंमदश्चिनिश्चयनरस्वाहा॥हृन्श्चिनिश्चयनरस्वाहा॥मन्श्चिनिश्चयनरस्वाहा॥उं
नश्चिनिश्चयनरस्वाहा॥उंहृन्श्चिनिश्चयनरस्वाहा॥मथश्चिनिश्चयनरस्वाहा॥मर्दश्चिनिश्चयनरस्वाहा॥सर्ववर्षकविघ्नमेक
याहापयनिश्चयनरस्वाहा॥वृक्षश्चिनिश्चयनरस्वाहा॥सर्वसत्त्वानांयनामाधिष्ठाययूनांस्ववृक्षानांधानधीधनश्च

१६३

नकाधसहिकनजयक॥ उं धूकटश्मृक्कयकधीकीं॥ जं॥ इंदुद॥ अन्ननकाधसहिकनसरुमुजः
यक॥ गीघभागशुकियकिनागशुकिअदिमर्द्धिमुठकिरुधामियक॥ अष्टेमर्हनवकयतनि
॥ अथकाधनाऊमूडालकधंहवकि॥ अन्यान्मस्थिंकत्वाकनिष्ठद्वयवस्त्यक॥ गर्जनिकयप्रसा
येकुच्छयकूपामापदिहिनकाधाकूमूडाः अन्नमूडावाऊनऊलाकमाकर्षयक॥ अथय
कधीमूडालकधंहवकि॥ सकलकनयानिकत्वाभ्रमागुत्यापूनवयियललिकः अनामिका

कर्जनी वाक्क एव स्य यत् ॥ कर्जनी अस्ति निवक्त्र कनिष्ठ गहं सां हि का ॥ सर्व यक्षिणी नां पत्र मू
 डा ॥ अन्न नया वच्च मा रुया सर्व यक्षिणी मा गच्छति ॥ अस्या एव मूडा या दक्षिण गुच्छ नाहनां ॥ उं
 ऊं ॥ आशुग शय कृष्णी भीष्मं पून वाग मना य स्वाहा ॥ सर्व यक्षिणी ना माहि मूर्त्वी कर्ह मूडा ॥
 उं महा यक्षिणी नां मेधूना पिशा य ईरु र स्वाहा ॥ सर्व यक्षिणी सा निश्चं क न दी य स्वाहा ॥ उं
 काम हा रा गन्धनी य स्वाहा ॥ सर्व यक्षिणी नां हृदय मूडा ॥ उं सर्वा मना हा निधी य स्वाहा ॥

१६४

अथ नाग नाका उल्लय कस्मि न्यर्ष मधुल ॥ श्री वज्र धन स्या पादो गिल सा हि वन्दित्वा स्व हृदय
 मूडा ऊ यत् ॥ उं ॥ अन्न न मूर्त्वी ॥ उं रुग् ॥ कर्कट क मूर्त्वी ॥ उं रुं गं रु ॥ य य मूर्त्वी ॥ उं रुं ॥ अ
 रुं ॥ महा य य मूर्त्वी ॥ उं रुं ॥ धी रु ॥ वा सू कि मूर्त्वी ॥ उं रुं ॥ म्ल ॥ रु ॥ काला मूर्त्वी ॥ उं रुं ॥ कां रु ॥
 धूय मूर्त्वी ॥ उं रुं ॥ सा ॥ रु ॥ गं रव पाल मूर्त्वी ॥ अथा श्लो महाना गी नी सा धन विधि विरु शा ह व
 ति ॥ नाग रु व नं ग लाल कं ऊ य पूर्व र ग वा क्क ना ह व ति ॥ सर्व ना गी न्य रु श्लो ह व ति ॥ सर्व ना ग

नागिन्याः हर्षयन्ति। मुकपयश्चर्यानामरुवनकुलगर्तवावकीर्यगन्धयूषधूपकीवयथाक
 पूजयन्तु॥ कदाचोनागिनीपुष्पकंसहस्रं कथयन्तु॥ गीघनागकन्याया मन्त्रीवदसमानगद्युक्तिः॥
 आगताया कीनवद्वनतार्थादयः स्थागकच्छुक्तिवक्त्रा मस्माकं हार्यो हवस्वतिः अर्थदिनाः
 यां प्रययद्युक्तिः अमृकं भावतिः अमृकं कीवयति॥ नदिसंगमंगत्वा कीनाहा प्रधाष्टसहस्रं
 कथयन्तु॥ दिव्यनागिन्या गद्युक्तिः आगताया कूष्मासनं दाययन्तु॥ दिव्यकर्मिकका कनस

१६३

नयनप्रयद्युक्तिः पंचदिनानं पुक्तिदिनं ददाति॥ नागस्तननाशो गत्वा अष्टसहस्रं कथयन्तु॥
 ऊषाक्तमहता नीलनागनगदीना नागद्युक्तिः वत्समया किं कर्तव्यं साधकनवे कथं मा
 ताहवस्वतिः आवमं नाचमस्य वत्सप्रकाशनादिनी दिनं ददाति पंचदिनाया प्रय
 द्युक्तिः सर्वनिवर्धघं वयकर्तव्यं यदि किं नापि ह्यपयतिः नरुयाहवतिनाशो गत्वा अष्ट
 सहस्रं कथयन्तु गीघनागिन्या गद्युक्तिः आगत्य कामपि कवा हार्यो हवस्वतिः अर्थदिनानां

प्रपद्यति सर्वनिनवभयं वायिकर्तुं वा यदि किञ्चिद्दृष्टययति ह्यानरुवति नानो नदिसंगमनं
 गत्वा अष्टमहस्रकयता कलाकृषां कनागन्याया गद्यति आगतायां सुवर्धमयपूषा गिलस्तः
 मंदाययत् अस्माकं लोया हयं स्तुतिः दिव्यवस्तुनं काना कनाति ददाति ॥ अथ नागिनी
 समयस्तुतिरुवति ॐ आरु आगद्य नागिनीरु आवाहनमस्तु ॐ हुं गन्धपूषा मस्तु
 ॐ हुं आ वृषाया मस्तु ॐ हुं वारु सर्वनागिनी समयमस्तु ॐ हुं गद्य र्भीषयूनशगम

१८६

नाथस्वाहा विसर्जनमस्तु अथ मूडालकंधं रुवति उलानमस्तु लिलिंकला उलूयंगुल्यः गिधत्वया
 कानशयाकथत् कर्जनीनखसंगतावा मागुष्टु लो नागिनी समयमूडा सर्वकृत्सर्वकर्मिकमा वा
 क्क समयविसर्जनमूडाः वामदक्षिणमूर्ध्नि कलापुथकृथक्क निष्ठां स्वक्ष्मनाकम्भला घांगुलि
 पुसावयनागिनी समयमूडाः सर्वनागसकृद्विमस्तु ॥ अथ वज्रयाहिमहागुक्क काधियकिः
 काधवज्रमूला ल्पदं मस्तु मूवावयत् ॐ नीलवर्ध्वज्जुं ॐ हुं अमृकनागिनी माकर्षयद्

हृस्वाहा अथास्मिन्नक्षत्रमाहुः सर्वनागिनीमृदुकायतिष्ठामिलनामिषक मग्नयादि
 क्रमधमाहुः गीयमात्रिकाष्टमहानत्रकयकनि अथाहृगवानवकुधनः यधमधुलेष
 क्षिन्नग्रीवाहाधियकिमृदुयहृगवन्ः श्रीवज्रनसायादोगिबसावेन्दित्वा स्वहृदयमृदाः
 हृदयक ॐ मन्नाहाविधी स्वाहा ॐ मृगाग स्वाहा ॐ वि सावनकीय स्वाहा ॐ सूत्ररुपि
 य स्वाहा ॐ मृमृध स्वाहा ॐ दिवाकवमृविय स्वाहा ॥ अथ किन्नरीवाही साधनः

१८०

विधिविशारद्वनि पूर्वकमृद्विगत्वा मृदुसरुमंजयतुः ॥ षड्किन्नरीजयतु मन्नाहो महकिंयूजाह
 त्वागमासासनगुप्तमन्त्रिकनधूपयहावंजयथावदर्थं मातुं कर्तुं नाकुधनियेकमागयुक्ति ॥ कस्या
 नरकवांहासाधकमाहाययकि साधकनवकवां ॥ हृद्गस्माकं लार्थाहवस्वकि ॥ यृष्टकमाध्यदव
 लाकमयिनयकि ॥ दिवाकर्मिकलाऊनंददाकि ॥ अथाहृनसाधनं हवनि ॥ पूर्वकमूलविहाजः
 वागत्वा मृयुगंजयतु याक स्वयंदेवीकामलरुनसाधवपुववनगतिगीयुका मयिगवां ला

र्याहवकि॥ अष्टोदिनायाह्यार्याहवकिनादिकूलंगत्वा अयुक्तं यत्॥ पुनस्तु कथायादिकु यत्तु
ह्यनियममागच्छकि॥ आगतायाह्यार्याहवस्वकिः दिनदिनयश्चदिनानंददाकि॥ ॐ कि
सर्वकथागकाष्टीषणीकारुयकानामायनाकिनायां महापुण्यक्षीनायां यकिनवीसाधनावेधि
विरुधातामहानसहान॥ अथरुगावां वरुधवमारु॥ अस्मिन्वलयुनः सूरुकिनामवा
धित्वानां महापुण्यकिनातिदशानिर्दिग्धमानादगाभनामयूकानादेवमानुषिकायाप

ॐ ॐ ॐ

कायाभूतयहिकधर्मैकान्तियगिल्लकारु॥ कथासयिवृद्धानां रुगातां समन्तादगादिकुला
कधारुषु ॐ मां महापुण्यकिनावाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां लययाह्यमसंख्यानामपविमाह्यनां
सत्त्वानामनामनुरुयाया संभ्यसंख्यारथोविरुन्यूनानि॥ ॐ किमहापुण्यकिनायामार्गनिर्या
नप्रकिनित्यकाः सर्वोकावरुगाधिकाव॥ अथखलुयश्मिम्पि साहसुमहासाहसुला
कधारुमाहानाजानस्तु सर्वभूतकेदवयुरुसहसुः सार्धं गुरुवपनिषदिसन्निपत्तिना अहवतः

उदंकादवातामिश्रायामारुषितानिर्माश्वरुथा॥ यवनिर्मिकवभवहृतां वक्रपार्श्वयायाव
 लहावास्तनायदीरुमिहृमिसाहसुमहासाहसुलाकधाकोपविगाहायावकुडावासकायिका
 प्रदवपूजानके सुद्धावासकायिकेदवपूजकादिनियुक्तगरुसहसुः सार्द्धं कुरुयादिषदिसः
 नियमितायभक्त्यां सारुमहाशक्ति कायिका नांदवपूजनां कर्मविपाकयः कायावहास
 यम्भजायकिसा नां या मा नां रुषितानां धीमाश्वरुकिनां पत्रनिर्मिकवभवहृतां यावकुडाया

१०६

सकायिगदवपूजनां कर्मविपाकः कायावहासः सर्वरुथागरुयक्तर्हिपहायाः सङ्गरुमीमः
 पिका नां नायेकि सहसुममिमयिगरुसहसुममिमपिकाटीगरुसहसुमपिमपिमपिमपिमपिक
 लामपिगदधमपियनामप्यपनिषदिमपिनोयेकिनरुमरुगथागरुप्रहयाः पूतत्रसादवाः
 नां पहागथागरुप्रहवाग्राव्यायकस्रष्टाष्टाववायववायधीअनूरुनावाव्यायक॥ कथथा
 पिनामरुम्वनन्दस्य सुवर्धस्य पूतगगाक्षुष्टाहन्तहां कृतकनरुपगितविश्वचकनविश्वचक

[illegible]

१२९

[illegible]

रुनायां सम्यक् संवाधो विरुत्तात्वादिकेन न रुनायां सम्यक् संवाधो विरुत्तात्वादयिकत्वां यप
न न वक्तव्यं नित्यामाः रुम्पुक्तिवत् न रुनायां सम्यक् संवाधो विरुत्तात्वादयिकुंः कल्पाद्वाव
इति सा नाहिरुसांसावथा कम्ः इति महाप्रत्यक्षिनायां का विरुम्पुक्ता नियमः ॥ अपि १५१
प न्यूनः कृपां प्यूनमादकद न रुनायां सम्यक् संवाधो विरुत्तात्वादयिकुंः इति प्रत्यक्षिनायां
समया का विरुत्तात्वादि ॥ ताहं कृपां कृषालका या न नायक नासि ॥ इति स्वरावः विमिश्रणा

१५१

विमिश्रणमाधर्ममृध्नालमिरुत्तात्वा ॥ इति का विरुम्पुक्ता निष्कामिकमक्षादिनि ॥ रुकुकोमि
कवाधिसत्त्वमहासत्त्वकमा महाप्रत्यक्षिनायां मिहं वाधिसत्त्वमहासत्त्वसर्वरुकायुक्तिसंयुक्त
त्रियाक्षे नृपमानित्यकामनासिकवाकि दृष्टवकाश्नात्सगः शान्तका प्रागर्को गद्युक्तः मत्पको अः
द्यं कयमगः पुलायधर्मकश्चमगः पुरंगुलका रुयकड पसर्जं रुडयदवका मनसिकवाकि
ज्ञानयनमृथा गधनवदता सहस्रका नाहिरुत्तात्वा ॥ उवंचरुः खारुद्यानजिक्ताका थासनः उवयु

थिविधाकुवयाकुसुजाधाकुवायूधाकुनाकागधाकुविहानधाकुनित्यकामनसिकशक्ति इ४ख
 नाइनात्मका गात्तकाभागागधुक्त गाल्यकाइद्यटयनकः पलायधर्मगध्वनकः पुरंगुनका
 हयकडयसर्गकयदवकामनसिकशक्तिगवानुयनम्पुथागन॥ सर्वहकायुगिसंशुकानवि १५२
 सत्यादन प्रवमविद्यायुक्कसस्मानामनित्यकामनसिकशक्ति इ४खकाइनात्मकाः गाः
 ककाः भागागधुक्तः गाल्यकाइद्यटयनकः पलायधर्मगध्वनकः पुरंगुनकाः हयकडयसर्गकड

इवक सस्मानपुल्यविहानंविहानयस्यनामनूपं प्रस्ययषअयननयस्ययसस्यर्गनः स्यर्गपुल्य
 यवदनायस्ययाहृफ्फुपुल्ययामयादानडत्यादानयस्ययाहृवहृवयस्ययाकाति॥ कातिपुल्ययाऊना
 मयधमाकयनिदवद४खदोमनस्यापायासाहृवंति॥ प्रवमस्यकवलस्यमहकाइ४खस्कन्धस्य
 समूदयाहृवन्तिगवानुयनम्पुथागन॥ नित्यकाइ४खकाइनात्मकागात्तकाभागागधुक्त गः
 ल्यकाइद्यटयनकः पलायधर्मगध्वनकः पुरंगुलकाहयकडयसर्गकडयदवकामनसिकशक्ति

कञ्चानूपलक्ष्यारगन सर्वरुकायकिसयूकानरुहृत्यादनश्रुविशानिशधामसस्त्रानिशध
 उक्तिमतासिकशक्तिनिवात्मकः गान्धकाविविक्रमः गान्धकाशनिमिरुकाश्रुतिहिमशक्तिमस्त
 वर सस्त्रानिशधाद्विहानविशध विहाननिशधामामनयनिशध नामनूपनिशध
 त्युजयननिशध यजयननिशधस्यर्गनिशधस्यर्गनिशधः ददनानिशधवद
 नानिधारुफुनिशधरुफुनिशधदयादाननिशध उपादाननिशधरुवनिशधरुवः

१६३

निशधामाज्ञातिनिशधमाज्ञातिनिशधः कृत्वा मन्त्रशलाकपनिद्वयदृष्टव्यमनस्त्रायासानिनुद्य
 काजवमस्यकवनस्यमहकाइष्टवस्तुस्थानिशारधारवकि कञ्चनिवात्मकः गान्धकाविविक्रमः
 गान्धकाश्रुतिमिरुकाश्रुतिहिमशक्तिमस्तानिशधामामनसिकशक्तिः कञ्चानूपलक्ष्यारगन सर्वरुकायः
 किसंयुक्तमनसिकाने यूनवयनकोमिकवाधिसत्त्वमहासत्त्वः सर्वरुकायकिसंयुक्तमनः
 विरुनवत्त्वानिः स्वरूपसुनानिहावयकिकञ्चानूपलक्ष्यारगन चवंचत्वात्रिसमास्तुहानानि

वरुन्याद्विपादानियं वद्विपानियं वद्वलानि सफवा अना नि आर्यो द्वा कृमा र्जो वलार्थ्य प्रमा द्वा
 निवत्तार्थ्य अना निवत्त अ नृप्य समा पल्लि द ग कथा ग क वलानि वत्ता विवे मान्या निवत्त मुप
 नि संविदा द्वा द ग वा धिका वृद्ध धर्मा ला व य किः सर्व रुता प कि संयुक्ते म न सिका वे रु चानू प वं रु
 या र ग धः पू न न प वं को मिक वा धि सत्त्व महा सत्त्वः सर्व रुता प कि संयुक्ते न विरु ना त्या द न दान पा
 न मिता यां व न कि क चानू प ल रु या र ग धः एवं सर्व रुता प कि संयुक्ते शि रु ता त्या दे मी ल या न मि

१५४

तायां शा नि पा न मिता यां वी र्य या न मिता यां आ न या न मिता यां य रु पा न मिता यां क चानू प वं रु या र ग
 धः पू न न प वं को मिक वा धि सत्त्व महा सत्त्वः महा प्र लु कि ना यां व न ने व ध र्म ध ध र्म या ऊः
 य किः एवं ध र्म ध ध र्म न हि य न्द न्य नि य द य न्य नि रु न नः प्र लु व रु रु नि ना ल्म का रु क सर्व ध र्मा मा
 त्मा सी य वि ग ता ग रु क स रु हा रु था हि य द्वा वा धि सत्त्व स महा सत्त्व स कृ ण ल मू ला वि रु न द्वा धिः
 वि रु ना स म व हि तं य त्या नि धा म धा वि रु द्वा धि वि रु कृ ण ल मू ला वि रु ता त्या स स म व हि तं य द्वा धि वि

रुक्मस्तु यत्रिधा मना विरुता समवहिकल्मस्य हताः यत्कोशिकवाधिविरुक्ता यत्रिधा मना विरु
 नसंविद्यते नायल्लय कयल्लय विधा मना विरुक्ता वाधिविरुक्ता समविद्यते नायल्लय कः ॥ ४४ ॥ यत्कोशि
 कवाधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य महापुण्यजिवाया दत्तं सर्वधर्मोत्पत्त्यवक कनन च धर्ममसि निवि
 मागिनायनल्लय कः ॥ ४५ ॥ यत्कोशिकवाधिविरुक्ता दत्तामिन्द्रः सुतीनसूक्तिमददवायक ॥ ४६ ॥ कथं रुदेकं स
 रुक्मियत्रिधा मना विरुक्ता कवाधिविरुक्ता समवहिक कथं वाधिविरुक्ता समविद्यते नायल्लय कः

१५५

॥ कथं वाधिविरुक्ता यत्रिधा मना विरुक्ता समविद्यते नायल्लय कः ॥ महावाधिसत्त्वनाह ॥ यत्कोशिकप
 त्रिधा मना विरुक्ता दत्तामिन्द्रः सुतीनसूक्तिमददवायक ॥ ४७ ॥ यत्कोशिकवाधिविरुक्ता
 किविद्यते विरुक्ता दत्तामिन्द्रः सुतीनसूक्तिमददवायक ॥ ४८ ॥ यत्कोशिकवाधिस
 त्वस्य महासत्त्वस्य महापुण्यजिवाया दत्तं सर्वधर्मोत्पत्त्यवक मागं सत्त्वस्य लम्बन धातुमाका नव्यवस्तुन
 अथ स्वल्पावा नायल्लय कः ॥ ४९ ॥ यत्कोशिकवाधिविरुक्ता दत्तामिन्द्रः सुतीनसूक्तिमददवायक ॥ ५० ॥

स्तंवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां महापुत्रा क्रियाया मयादिगसिद्धत्वाहं कदासि॥ वाधिसत्त्वाहं कः
 कुरुनमया कुरुगवन् कुरुविक्रयं न कुरुन कथा कुरुगवन् पूर्ववाधिसत्त्ववर्ग्यवन्न पूर्वका
 नां कथागतानां महं का सम्यक् वृद्धानां मन्त्रिका मन्त्रावकः पद्मपात्रमितासु अववदिकोऽनुमिति
 यः सद्गतिः समरुक्तिः संप्रहर्षितः समादायिका निमसिक पुकिष्ठायेका यका कुरुगवन् महाः
 वाधिसत्त्वाहं कः पद्मपात्रमितासु मिश्रितान् कुरुनायां सम्यक् वाधिसहितं वृद्धाचवं मव कुरुगव

१५६

नस्यातिनापि वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां पद्मपात्रमितासु वददिकवा अनुमासिकवा संदर्भाय कवा
 समादायिकवाः समरुक्तयिकवाः संप्रहर्षयिकवाः निमसायिकवाः पुकिष्ठायिकवाः अस्याति
 रिनापि वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां अववदिकवा अनुसिद्धाः संदर्भाताः समरुक्तिः संप्रहर्षिताः समादायि
 काः निमसायिकाः पुकिष्ठायिकाः मन्त्रुवाया सम्यक् वाधिसहितं सत्त्वाहं कः॥ अथ स्वल्पा यथा न्मरु
 मवदवानां मित्रमकदवाचकः॥ कानहिको गिक मधू साधू सुकृत्तमनसि कुरुवाधियथा वाधिसः

त्वममहासत्त्वममहायत्नं किं नायां स्वरुवां यथा यकि पलुवां व्ययवदनासहासस्कावविहृनगून्यं वरु
 व्याकृद्यासकिक्काकायमधःगून्यः नूपमदृगन्धः नमः स्यर्गः धर्मगून्यः वरुविहृन (अ) नविहृनद्या
 धाविहृनकिक्काविहृनकायविहृनमन्नाविहृनगून्यः वरुसस्यर्गः व्याकृसं स्यर्गः धासस्यर्गः कि
 क्कासस्यर्गः कायसस्यर्गः मनसस्यर्गगून्यः वरुसस्यर्गपुल्ययवदनाः व्याकृसस्यर्गपुल्ययवदना
 धासस्यर्गपुल्ययवदनाः किक्कासस्यर्गपुल्ययवदनाः कायसस्यर्गपुल्ययवदनाः मनसस्यर्ग

१५०

पुल्ययवदनाः गून्यः यथिवीधारुः आयाधारुः रुकाधारुः वायूवाधारुः आकाशधारुः विहृनधारुः
 गून्यः अविद्यासस्काविहृननामनूपयअयकनस्यर्गगून्यः वदनारुह्यडयादानरुवजाकिः
 रुनामनशगून्यः दानयावमिताः गीलयावमिताः आंशियावमिताः वीर्ययावमिताः ध्यानयावमि
 ताः यहायावमितागून्यः अश्वात्सगून्यकाः वहिर्ज्ञगून्यकाः अश्वात्सवहिर्ज्ञगून्यकाः गून्यकागू
 न्यकाः महागून्यकाः यत्रमार्थगून्यकाः सस्करुगून्यकाः असंस्करुगून्यकाः अत्यक्तगून्यकाः अ

धनयगमनकाः अमनकाः प्रगुनकाः यकृतिगुनकाः गुनं सर्वधर्मगुनकाः स्वलकृष्टगुनकाः अ
नूपलकृष्टगुनकाः अलवगुनकाः स्वलावगुनकाः अलवस्वलावगुनकाः गुनं स्वल्पस्यनानि
सम्यक्हेतानानि अद्विषादानि हृदियानि वलानि वा अक्षानि गुनः मार्गानि आर्यसखा
निष्ठात्राणि अष्टमानानि आनृषसमापत्यविमाशानि गुनं अनृषर्वविहात्रसमापत्यः
गुनकानि मिहृषाधिहिरुविमाकृमूखानि अहिहृसमाध्वध्वधीमूखानिः दभतथागरवः

१५६

प्रगुनं वलानि धेमानानि चतस्रयकिसंविदमहामेडीमहकनृषाष्टदशधधिकवृद्धधर्माः अना
परिरुलसस्कादागमिरुलंगुनं अमागामिरुलं यत्यकवाधिं मार्गकां नरुकागुनं एव सर्वध
र्मांसा महापत्यक्रिनायावर्याभव्यवलाकयतिस्म यं वस्वस्वलावगुनवावलाकिं अथा
यूषामहावाधिसत्वमकदवावक अस्यामहापत्यक्रिनायावर्याकर्तुकां माकनकं गिकिगव्यं
एवमूकमहापत्यक्रिनावाधिसत्त्वमहासत्त्वाः आयूषासूहृतिमकदवावक यः कश्चित्कुल

धूमावाकूलइहितावागृष्णागम्हीनामहायत्यक्तिवायाधर्योकरुकासकृजोवयवलाकायिकवां॥
 पंचस्कन्धस्वहावगृन्ताकाव्यवलाकायिकवां॥ ॥ तथा नृपगृन्तंगृन्तकेवन्पं॥ ननृपं पृथक् गृ
 न्यतागृन्तानगृन्तकायाः पृथक् नृपं॥ वदनागृन्तागृन्तकेवदनाः नवदनायाः पृथक् गृन्तका
 नगृन्तकायाः नपृथक् संहा सस्कावागृन्तागृन्तकेवसस्कावानस्कावाः पृथक् गृन्तानगृन्तकायाः
 पृथक् सस्कावाः विहानगृन्तागृन्तकेवविहानं॥ नविहानपृथक् गृन्तानगृन्तकायाः नपृथक्

१५५

विहानं नृवंरुदन्तमहासूरुतिः सर्वधर्मस्वहावगृन्ताः जूलकृष्णानृत्तानृनिवृद्धाः अम
 लाविमलाजृन्तानृसंयुर्धः कृष्णरुहिमहासूरुगृन्तकायान्ननृपवदनासंहातसस्कावा
 नविहाननवक्रः नआकनद्यानः नाजिहानकायनमना ननृपनवाहनगन्धनवशा नपृथ्व्या न
 धर्मानवक्रधारुननृपधारुनवक्रविहानधारुनरथा नविहानधारुः नद्या नविहानधारुः नजि
 हानविहानधारुः नकायविहानधारुः नमनाविहानधारुः नविशारुयाः नसस्कावाकथानं॥

विहानकथा ननामनूयकथा नषजयनकथा नसूर्यकथा नवदनाकथा नरुष्ककथा नोपादा
नकथा नरुद्राकथा नजातिकथा नऊनामनदया नदृष्टवसमदया ननिवारधनमार्गः ननूयं
नवदानसहानसस्त्वानविहानायाफि ॥ कस्मा रुर्हि सुरुकः वाधिसत्त्वा महासत्त्वः महाय
त्यकिनायां माहृत्विहयति ॥ विहानसूत्रमाहृत्वा दनूरुमाविष्यार्था मात्तिकानाः निह
निर्वोक्षपाफाः सर्ववृद्धेनायेमहायत्यकिनाया माधित्यनूरुमायाः सम्यक् वाधिवारिहसः

वृक्षा ॥ कस्मात्कुरुहि महासूक्तकहा कथा ॥ अथ महाप्रत्यक्षिनामकुम्भा नयत् ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ श्री
वन्ध २ सर्वदृष्टान्मम सर्वसत्त्वानां ॥ सर्वदृष्टमानान् कुरु कुरु ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ श्री
वन्ध २ सर्वदृष्टान्मम सर्वसत्त्वानां ॥ सर्वदृष्टमानान् कुरु कुरु ॥ ॐ सर्वकथागता श्री
गीताकथनाभापनाजिनामहाप्रत्यक्षिनामिली श्रीषण्णवत्ता किरमूर्धिका नागी ॥
ॐ कुरु २ प्रकुरु २ स्वाद २ धक २ दन २ विन्द २ हिन्द २ हिन्द २ कुरु २ कुरु २ नक २ मम सर्वः

२०१

धर्मरत्न नञ्जाचार्य सुरत श्री महाविहार DH-23

नगसन्ध्यामन्ध्याः श्रवणग्रहणरुक्माहगद्ययक्याः स्रक्माकभायकधीः नारुमादिधिमा
 श्रीसहिताः समग्रः सत्येन्याः सयनिवानाः लाकारुगवकाः श्रीवक्रसत्त्वताधिकमत्यनन्दनिगि
 स्स्यार्यः सर्वरुथागकाष्टीषगीकारुयज्ञानामायनाजितायांलाकानलाकायांमहायुः
 त्यजिनायांधर्मायदनागास्तुःसुयनिगुद्धधर्माकायहानमूर्त्तिमनूरुनधर्मदगनाधिष्टिरुथी
 गाव्यमूर्त्तिराधिकायनमार्थनामविनिर्गतमहायुत्यजिनामहाविद्यानाहाः संयादनकाद्व

कः सः कः ॥ २ ॥ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥
नाथ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥
गुरुसन्धः ॥ १ ॥ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥
अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥
अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥ अथर्माः इत्युक्ताः ॥ १ ॥



